अनुक्रमणिका ।

पृष्ठ

पृष्ट

अथ संस्कृत स्तुति।

पृष्ठ

पृष्ठ.

उपाध्याय श्रीरामलाल गणिः कृत गुरु स्तवनम् ।

सर्वारिष्टप्रणाशाय सर्वाभीष्टार्थदायिने सर्वलब्धिनिधानाय,
गोतम स्वामिने नम ॥

गुरुगुणरत्नावली

अथ गोतम प्रभाती स्तवनम् ।

जय २ मगलनिधान गोतम जयकारी ॥ ज० टेर ॥ पृथ्वीकुक्षिरत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर, चार वेद चतुर वीर, मन्मथ अवतारी ॥ ज० १ ॥ यज्ञ रग विप्र सग, तृष्णासुरलोकगग, करत धरत छात्र पात्र, विरुद विवुधचारी, ॥ ज० २ ॥ विचरत प्रभु आये चग, वाणी गुण सप्त भग, वर्द्धमान जित अनग, सशय तमहारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ़ देख, इद्रजाल शक्ररेख, वीतराग वचनपेख, मिथ्या मति टारी ॥ज० ४ ॥ त्रिपदीपाय अगवार, रचनाकृत अति अपार, बोधन जग जीवसार, भये गुरु गणधारी ॥ ज०॥ ५ ॥ केवल चिद् सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धर्म लीन, मुझ मन जल चरन मीन, युदनद्युतिसारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ सिद्धियोगनदचद, कार्तिक सित सघ वृद, फूलत घर कल्प कन्द, दूजकुमतिहारी, ॥ ज०॥ ७ ॥ गुलशिवपुर देवमणी, इद्र भूति जगधणी, कुशल निधान सुखभणी, पाठक ऋद्धि सारी ॥ ज० ॥ ८ ॥ इति पदम् ।

करुणा बत्तीसी ।

सुणिये कृपाल सब जीव के दयाल प्रभु आदि अब ईश्वर श्री ऋषभ जिन ध्याय हैं धजा तू सृष्टि को आदि परमेष्ठी को धर्म के निर्वाह कारण कला उपजाये हैं, भरत कूं राज दीनो आप योग धर्म लीनो भवजन के शरण श्रीनाथजी कहाये हैं, अहो मेरे दीनदयाल फाटे दुःख फन्द में हूं अनाथ नाथ शरण तेरी आये हैं ॥१॥ अजमा की टेर सुणी त्वरित कैलास आयो रावण से राजा पे नाटक विधि ठाण्यो है, गढ नरपति कूं माना ने सुरग दीनो शत्रुंजय गिरि पर मातुश्र पर डारयो है, बाहुबल तन कूं केवल पद भज दीनो ब्राह्मी अरु सुन्दरी के हाथ से सुधारयो है, अमर कैलाशवासी लोक मेरी करत हांसी अब तो उद्धार जैसे गजराज को उद्धारयो है ॥ २ ॥ कोइयकलो अमर तुम नाम को उच्चार कर कोइयक शिव विष्णु लेत नाम धणी को, कोइयक रसूल अरु आदम करतार कहे जगत बीच महान नाम प्रसरया है धणी का, नमि अरु विनमी को संकट से मेट दीनो खेचरपति मेरा से नागरायमणी को, मेरी सुध नाथ तैंने कैसे बिसार दीनी भूलू नहीं पलक नाम प्रभु चिंतामणी को ॥ ३ ॥ केसरियानाथ तेने समुद्र में जहाज तारी, ऋषभदास सपने की हूटी शिकारी है, सिंधिया की फौज जब आन के उपद्रव कीनो पड़े ध्वजा नाथ तारिन तोड़ डारी है भेख आगवानी होय भागा अपना चार सर्व निशानी बड़ लड़नी नहीं हारी है,

कलियुग मे परचा प्रभु प्रगट है प्रभाव तेरो रामऋद्धिसार यह अरजी गुजारी है ॥ ४ ॥ पचम चक्रीश पुन शोलम तीर्थेशनाथ हथनापुर स्वामी मृग लञ्छन के धारी है, गज के चोरासी लाख चौसठ हजार रामा गन अमित अश्व नव निधान अधिकारी है, मुकट बद्ध राजन बत्तीस सहस सेवा मे पायक के छिनवे कोडि इन्द्र अवतारी है, एते सब त्याग के तुम सजम समाधि धार ऐसे जिन राज को वदन हमारी है ॥ ५ ॥ अचरा के नन्द जब आपने अवतार लीनो नगरी मे आगेयो रोग हेजा मरी को, विश्वसेन राजा शोच में गलतान था के कोइयक मिटावे रोग लोकन के जरी को, दीन के दयाल प्रभु अर्हन् जिन दीनबंधु धन है प्रताप नाम शाति सुखकरी को, शातिक फैलाय के सब जीवन को कष्ट काट्यो मे तो गरीबदास प्रगट भक्त हरी को ॥ ६ ॥ पूरब भव बीच आप शरणागत विरुद धारयो एक समय सुरपति ने शोभा बखानी है, डिगे नही काहु से दया के सधीर राजा शिवरा अर पारापत भागत अगवानी है, आन के कन्नतर जब पड्यो है उछग बीच मुख से यू कहत राजा तू तो बडदानी है, दीनो निज वपुदान शरणागत राख्यो मान ऐसो विरुदान तेरो करत आनाकानी है ॥७॥ वेद में पुराण में आलम में कुरान मे ऐसी जो जगा सो शाति सब आन मे, व्याह, अरु पूजा मे शत्रु के धूनन में ऐसो नहीं उपचार सो रमत वही वाठ मे, शाति पद मगल को तौडे अमगल को ऐसो प्रभास नाम सुवित के ध्यान में, विघ्न को विदारि सब सतन सुखकारी यूं रामऋद्धिसार तेरी रहता नित याद मे ॥ ८ ॥ बाल ब्रह्मचारी प्रभु राजुल कू तारी

बर्णा मै करू कहा करुणानिधान हो, पशुअन पुकारे त्वरित ही उघारे घधन छुड़ाय तुम दीनो अभयदान हो, यादव कुल मडन हो मदन के विहडन हो, गिरनारगढ़ जाय के धरयो अचल ध्यान हो, ऐसे तुम काम कीने मोहकू विसार दीने मेरे तो कृपा सिंधु जीवन तुम प्राण हो ॥ ९ ॥ जगमध कटक ले आयो जब द्वारका पर हलधर और गिरधर ने गरड़ धजाधारी है, कूर भयो युद्ध जामें अपणी फौज हटी जान जरामध यादव दल ऊपर जरा डारी है, बलभद्र आदि ले सब ही अचेत भये कृष्ण कू सहाय दे जरा को निवारी है, भारत आप झेल लीनो तीन दिन युद्ध कीनो ऐसे तुम कृपासिंधु सब के उपकारी हो ॥१०॥ सारग धर धनुष चाढ्यो शखह को शब्द काढ्यो फेरयो सुदर्शन चक्र पृथ्वी थरराई है, शेष सज्ज्या खोल डारी ऐसे बलवत भारी प्रगट दूजो नारायण यू कृष्ण खबर पाई है, ताकत परवान लागे बाह लम्बी करी आगे कृष्ण की बाह कू कमल ज्यों नमाई है, हरि चिंता करे मन में छीन लेगो राज्य छिन में हलधरजी कहे कृष्ण नेमतो गुसाई है ॥ ११ ॥ चिंता सब मेट दीनी गिरधर की राह लीनी द्वारका के बचवे की कही राह कान्ह कू, भक्ति से तार दीनी ईश्वर पद योग कीनो ऐसे स्वय भू आप श्रीधर महराज कू, कबतें पुकारू नाथ मेरी बेर देर कहा गुनहा सब माफ कर कह दो गुरु ज्ञान कू, मेरे तो प्रभु नेम साचे मन धरू प्रेम रामऋद्धिसार नित ध्यावे भगवान् कू ॥ १२ ॥ काशी के भूप वर रूप है अनूप जामें वामा के नदन तोहे बदे सुरेश है, जाणे तोहे जगत् लोक सेवा से सर्व शोक

चितामणि कल्पवृक्ष कमलाकर पेस है, दर्शन तुमारो पाय फमणा घर रहे नाहिं पारस प्रभाव तें लोहा कनकेश है, नाम के प्रताप से उन पत्थर को बध्यो मान धन है नर नार तोहे ध्यावें हमेश है ॥ १३ ॥ रामचन्द्र रघुपति ने दरिया पर पाज बाधी थभनपुर स्वामी तुम साधे सब काज हो, यादव की जरा मेटी गुण के हो रत्न पेटी नागार्जुन योगी को दीनो कनक साज हो, मै तो निराधार मेरी पारस करोगे मार अरजी चित धार तुम दीन के निवाज हो, अठारा दोषण में निद्रा से रहित भये मेरी वक्त नींद कहा लीनी महाराज हो ॥ १४ ॥ खरतर गणाधीश्वर श्री अभयदेव सूरि को सेढी नाम नदी तट प्रगटे तुम पास हो, जयतिहुअण बत्तीसी स्तवना एकाग्र करी शातिक के जल से तुम कियो कुष्ट नाश हो, गोडीमल श्रावक और मेघा नाम गोठी ने हालाहल जहर खायो तुमारो विश्वास हो, प्रतिमा तुम्हारी प्रभु वसुधा फाड़ प्रगटत है होवे फिर लोप तुम गौड़ी गुण रास हो ॥ १५ ॥ कमठ को तुम हर्यो मान पन्नग कु मन्त्रदान तुमारे दरश से नाग धरणेंद्र अवतारी है, धन्वन्तर नाम तेरो कर्म्म रोग काट मेरो मेरे तो पारगत तेरी विगतिवारी है, पद्मावती करे सेव तुम हो देवाधिदेव बद्रीनाथ जगन्नाथ मूरती तिहारी है, रामऋद्धिसार पर प्र निजर की महर करो दशों अवतार धार कर्म्म के विदारी है ॥ १६ ॥ शासन के स्वामी अभिरामी प्रभु वर्धमान तेरो जस पारावार मुनि गण कहाई है, ऋषभदत्त ब्राह्मण अरु देवानन्दी ब्राह्मणी कू अपणे पूर्व पूज्य जाण मुक्ति को पठाई है, त्रिशला महतारी के ऊपर अनुकम्पा आन एक देश लीन भये गर्भ के

गु माही है, अहो वड्डवीर मही तुम त्रो वीर नंदिवर्द्धनाँ के भाई सो हमारे सहाई है ॥ १७ ॥ जन्म समय सुरपति संसै शांतिकू के कारण कृ गंगा अरु मागध के भरे कलश नीर के, सोधर्म्मा राजा के गोद में विराजमान काल वश शक भई यार जाय जोर सीर के, अभिषेक को हुकम शचिपति तब देत नाहिं कंपायो मेरुगिरि ऐसे बलधीर के, आमल की क्रीड़ा में असुर कू पछार डारयो देवन मिल नाम दीनों भगवत महावीर के ॥ १८ ॥ हाथी पे कर सवार सोले सिणगार कर राजा अरु राणी ने पढ़वे पठाये हैं, सिंहासन इन्द्र को तब ही थरराण लागो वृद्ध ब्राम्हण रूपधरि पण्डित पास आये हैं, पूछे जो प्रश्न इन्द्र ब्राम्हण मे बणे नाहिं वर्द्धमान स्वामी शब्द साध के बताये हैं, इन्द्र कहे सुणो लोक सर्वदर्शी वीर कोऊ जैन इन्द्र व्याकरण तबही बनाये हैं ॥१९॥ वर्ष गन दियो दान याचक को रख्यो मान पृथ्वी को ऋणभार आपो उतारयो है, संवत्सर भाई को जग में प्रसिद्ध कीनो आप निरहंकार योग आत्मकाज सारयो है, देवन अरु मानुष के कोते उपसर्ग सहे शूलपाणी यक्ष कूं दर्शन उधारयो है, चंडनाग उर दीनो आप याकू तार लीनो मुद्रा तिहारी देख स्वर्ग कूं सिधारयो है ॥२०॥ सिंहासन छत्रधारी दुन्दुभि को नाद भारी ऊपर अशोक वृक्ष छाया फैलाई है, देवन की कोटा कोटि आवत तुमारे पास सर्वज्ञ कू रणो थे वाणी सुनपाई है, यज्ञ तिहां करन लागे गौतम द्विज ध्यान लागे इन्द्र जाली कहत आयो शंका चित ठाई है, वेद को तुम अर्थ भाग्यो अपनो शरीर राख्यो तुहा बुद्धारताग प्रगस्यो सरणाई है

॥ २१ ॥ योग की सब क्रिया त्याग वेश्या संग रच्यो राग वारे वर्ष मग्न भयो भोगे सुख काम को, नन्दिसेन आगो पास उनकी फिर पूरी आश आपके निश्वास उन पायो अमर धाम को, गोशालो गुनहगार मुख से बोल्यो कुफार देव लोक भेज्यो प्रभु ऐसे हराम को, मैं तो प्रभु भक्तिवान मेरी टेर सुनो कान मैं तो रट्टूं वीर धीर सुबे और सामको ॥ २२ ॥ श्रेणिकनरिंद और चेलना मुख चंद देख साधु और साधनिया भई रूपलीनता. मुनिगण को डिगे जान सब कू ठिकाने आन अपने फरमान से सब टाल दई हीनता, मेघ कुमर मुनि राज संजमकी छोडी लाज आप से पुकारचो दिखलाई बहु दीनता, पूरब भव बात कही दया थिर थाप दई मेरे तो जिनाधीश तेरी आधीनता ॥ २३ ॥ आर्द्रकुमर राजपूत मुनिपद की लई सूत कर्म्म क संयोग फिर श्रीमती कू परणी है, घरमें चौवीस वरस रागरंग कर सरस पीछे पछताय पुन लीनी आचरणी है, ताकू शिव वधू दीनी जमाली उत्थाप कीनी केते भव टाल के बताई शुद्ध करणी है, मुझ ते ना पले योग खान पान सरस भोग ऐसे को तारो तो तुमारे हाथ तरणी है ॥ २४ ॥ निरती जिन महीनाट चरणन की लई छाह विषय भोग लपट उन श्रेणिक नरिंद कों, आप शम आप कीनो पद्मनाभ नाम दीनो धन है करतूत तेरी मनायो चमरेन्द्र कों, अय मत्ते बालक की नाव आप पार कीनी सूरिया मनाटक कर गाया गुण छंद कों, दशार्ण भद्र भूपत को मघवों हरयो मान ताके शिर हाथ धर नमायो सुरेन्द्र कों ॥ २५ ॥ मनाग से तरनेकी मेरे चित्त चाह भई ऐसी अभिलाष

भर गयो देव द्वार पै, केते देव सुरापानी केते सगीत तानी केते तो सुन्दर सग रंगे सेज आर पै, काहू को शीश पुन दूसरे ने काट लीनो केते वरदान देत मोरे हजार पै, राग द्वेष त्यागे जिन मुक्ति किसी की नाहिं ऐसो देवाधिदेव तू ही समार पै ॥२६॥ काहू के आधार प्रभु राजा अरु सेठन को काहू के आधार सेवा खेत विरतवारी को, काहू के आधार प्रभु जोतप और वैदक को काहू के आधार जड़ी बूटी मणिधारी को, केते रसानी मत्र साधे अभिलाषा धर केते पास द्रव्य है लाखन हजारी को, मैं तो निराधार मेरी वीर प्रभु करो सार मोह तो भरोसो भारी केवल-पदधारी को ॥ २७ ॥ नैया यक सांख्यमती अद्वैत ब्रह्म जगत् माने केते वैशेषिक जगत्स्वभसो बतावे है, केते पुन नास्तिक बहू प्रतिभाव करे खड केते समाजी काजी ईसा को मनावे है, ऐसे एकात वादी जिनके मन जिसी मानी अपयो हठ वाद कर लोकन भरमावे है, मैं तो स्याद्वाद चारू दूजो नहीं धर्म्म राखू साचो हुकम वीर को सो मेरे चित्त चावे है ॥ २८ ॥ चौदे हजार मुनि दीक्षित निज हाथ तेरे आर्या छत्तीस सहस सेवे नित चरण कों, आनन्द अरु कामदेव प्रमुखन अहस्य तेरे कथित से पूर भये दुरमति के हरणकों, चोसठ सुरिंद तेरी सेवामें खनरदार सिद्धानाम देवी सो सघ रक्षाकरण कों, स्वामी श्रीवर्द्धमान जग में तोद सब आन भक्तन के वत्सल नाथ मही तेरे शरण कों ॥ २९ ॥ चौवीसों पुरुष सिंह अतुलीबल धरनहार अल्प बुद्धि मेरी सो गावे जिन गुणनकू, पांचो ही तीर्थंकर दुनिया में जाहिर है याही ते रचे छन्द भक्तजन सुणनकू, पिंगल की भाषा

नहीं कविता को मुझे ज्ञान भक्ति में मगन होय लायो गुण सुणनकू, मेरी तो हुंडी प्रभु आपही सिकारोगे ऐसो दयाल देरा लयो गुण सुणनकू ॥ ३० ॥ पाणी अर दावानल सर्प मिट हस्ती को रोग शोक पुन दरिद्र भय मिटे नाम सें, लक्ष्मी घर सेव करे नृपति सिर हुक्म धरे ध्यावे एकांत मन आठों ही याम से बंधन कटजाय और जगत बीच बधे मान इच्छा सब पूर्ण होय महावीर धाम से, मेरे तो तुम धनी दीन देख अरज सुनी तेरी छत्र छाया में रहता आराम से ॥ ३१ ॥ कोटिक गणचन्द्र कुल शाखा वज्रस्वामी की आपके पाटानुपाट बड़े यश धारी सो, दादा जिन कुशल सूर मेरे हाजर हजूर पाठक वर क्षेम कीर्ति शाखा के भारी सो, साधु गुण भये लीन धर्म शील गुरु प्रवीन कुशल के निधान आप जग के उपकारी सो, करुणाछत्तीसी या रची रामऋद्धिसार पाठक पद बिरुद धार विघ्न के विदारी सो ॥३२॥ इति श्री उपाध्याय युक्तिवारिधि रामलालजी रचित करुणा छत्तीसी सम्पूर्णम् ॥

अथ सद्गुरु स्तवन ।

राग रेखता—कुशल गुरु देव के दर्शन, मेरा दिल होत है परसन, जगत में या समो कोई, न देखा नयण भर जोई ॥१॥ निरुद भू मंडले गाजे, फरस ते पाप सब भाजे, पूजते सम्पदा पावे, अचिंती लच्छ घर आवे ॥ २ ॥ एक मुख गुण कहु केता,

मुझ हिये ज्ञान नहीं एता, लाल की अरज सुण लीजे, चरण की सेव मोहे दीजे ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग कैरवो—कुशल सूरिंद गुरु पूजो भवि हितसु कुश० टेर ॥ केसर चन्दन कपूर अरगजा, भाव धरी करो पूजा हितसु ॥ कु० ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुध माल करो भवि रचि सु ॥ कु० ॥ १ ॥ असरण शरण परम गुरु मेरो, धम्म ध्यान धरो आतम चित सु ॥ कु० ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगत गुरु, आशा पूरे गुरु मणु दत सु ॥ कु० ॥ २ ॥ ध्यान सुधारे ज्ञान वधारे, रूप रग देवे चित हित मति सु ॥ कु० ॥ कुशल सूरीन्द गुरु सांनिधकारी, परतिख परचा पूरे मतसु ॥ कु० ॥ ३ ॥ श्री जिन हर्ष सदा सुविलासी, सत्य रत्न सुख करी छतसु ॥ कु० ॥ इति पदम् ॥

राग देव श्री चलत ।

आव करो रे उच्छाह श्रीजिनकुशल सूरीन्द आगे ॥ टेर ॥ या आधी वेला ने श्रो आवो दान, इन आजी वेला क्यू करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो मन रग, हिलमिल गावो साजन सग, आ० धूप दीप करो नैवेद्यमार, फुलवारी नो नहीं जिहा पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अक्षत श्री फल ढोवे जेह, पुत्र कलत्र पामें सपदा तेह, आ० सुरनर नारी ऊभा कर जोड़, कोण करे म्हारे दादाजी नी होड़ ॥ आ० ॥ ३ ॥ श्री खर तर गच्छपति सिरदार, रावल राणा ने वे इकतार, आ० महिर निजर करो श्री गुरु राज, कुशल सूरिंद गुरु गरीब निवाज ॥

आ० ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष करे उच्छरग, सत्य रत्न मन ज्ञान उमग ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग बगालो घाटो ।

मैं निरख्या गुरु महाराज छतिया हर्ष भरी मैं० ॥ टेर ॥ अमल अनत गुण आगरू रे, समता रमनो धाम, परम पग्म परमातमा रे, वछित दायक स्वाम ॥ छ० ॥१॥ करुणानिधि गुरु दीलती रे, सेवक जन प्रतिपाल, भवि जन भक्ते भाव सू रे, लावे भर २ थाल ॥ छ० ॥ २ ॥ केसर चन्दन कुमकुमा रे, भरियकचोली हाथ, पदमण आवे मलपति रे, पूजे सहियर साथ ॥ छ० ॥ ३ ॥ कुशल सूरीश्वर साहिबाँ रे, श्री जिन चन्द सूरि पाट, बलिहारी जिन कुशलनी रे, गाजे पणु गहगाट ॥ छ० ॥ ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख सपूरण हार, श्री जिन हर्ष सूरीश्वरू रे, सत्यरत्नसुखकार ॥ छ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

होरी सिन्ध काफी दीपचन्दी ।

गुरू पूज रचो रे सुज्ञानी, भले हिय भक्ति भराणी ॥ टेर श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहिब, खरतर गच्छराजानी, देश २ में थानक गुरू का, शोभा जग पहिचानी, सदा रवि तेज समानी गु० ॥ १ ॥ केसर चन्दन मृग मद मेली, चरणन पूज रचानी, धूप दीप वालि आगे ढोवो, बहुविध पुष्प चढानी, भले फल भेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ बाट घाट में परचा पूरक, हाजर हाँन

सहानी, जिन सौभाग्य सूरि के साहिब, वंछित काज करानी, सदा गुरु महर लखानी, गु० ॥ ३ ॥ इति पदम ॥

होरी ।

सद्गुरु के चरण चित लाय २, जिनदत्त सूरिंद गुरु करो रे सहाय ॥ स० ॥ टेर ॥ बावन वीर अनेवलि चौसठ, जोगण वश कीनी हर्ष लाय, विद्या पुस्तक सोवन अन्दर, श्री गो वज्र निहार पाय ॥ स० ॥ १ ॥ मुलतान में पच पीर महाबल, पच नदी साधी चित्त लाय, इत्यादिक बहु परचा पूरन, गुरु समरया सब दुःख जाय ॥ स० ॥ २ ॥ गुरु के नाम से अठसिद्धि नवनिधि, गुरु गुण गावो मनही भाय, श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

होरी राग लहरी ।

भाया भक्ति से पूर रहो रे, दुरजन सब दूर हरो रे ॥ भा० ॥ टेर ॥ मेरे मन में भक्ति वैरागी, चित्त चरणन लगन सु लागी, मेरी भाग्य दशा अब जागी, जिया हो ॥ भा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिल कर आवो, गुरु चरणे चौक पूरावो, वालि अक्षत थाल वधावो, जिया हो ॥ भा० ॥ २ ॥ गुरु महिमा बहुत सवाई, गुरु नाम सदा सुखदाई, गुरु सेवा पाप पुलाई, जिया हो ॥ भा० ॥ ३ ॥ घस केसर भरिय कचोली, माहे मृगमद कुंकुम घोली, गुरु पूज रचो भर झोली, जिया हो ॥ भा० ॥ ४ ॥ जिन हर्ष सूरीश्वर राजा, बाजै जग जशना बाजा, सत्य रत्न करै शुभ काजा, जिया हो ॥ भा० ॥ ५ ॥ इति पदम ॥

तिताला धमार।

जिन कुशल सूरिंद गुरु सदा नमो ॥ टे ॥ सुख सम्पति ऋद्धि सिद्ध सब हाजर, देश देशान्तर जाई भमो ॥ जि० ॥ १ ॥ घाट घाट अर विषमी विरिया विघ्न बुराई दूर गमो ॥ जि० ॥२॥ अहनिश नाम सदा उच्चारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ॥ ३ ॥ इकमन ध्यावे वांछित पावे, विपत व्यथा सब दमो दमो ॥ जि० ॥ ४ ॥ अभय महासुख संपति पावो, थिर थारू क्षिति जमो जमो ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

ताल ठुमरी।

सदा सहाई कुशल सूरिंद गुरु दो सानत गुरु रायजी ॥ स० ॥ टेर ॥ गाढ़ि न लूटे रोरचो र टूटे, दिन २ नधे सवायजी ॥ स० ॥ १ ॥ सज्जन सुत अरु सुन्दर नारी, शुभ परिकर सुखदायजी स० ॥ मित्र समागम सुजस वधारण, नित प्रति हरख उछाहजी ॥ स० ॥ २ ॥ राजा प्रजा पाय नमे सहु, गुरु समरण सुपसाय जी ॥ स० ॥ दोषी दुश्मन नृप भय पड़िया, सद्गुरु करय सहायजी ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी विरिया सकट पड़िया, समरया आवे धायजी ॥ स० ॥ भूखा भोजन तिसिया पाणी, निरधनिया धन दायजी ॥ स ॥ ४ ॥ संघ सकल ने दो सुखशाता, जिम कीरति जग थायजी ॥ स० ॥ थानक थिरता पर घल भोजन, पगपगं कुशल सहायजी ॥ स० ॥५॥ अभय महा सुखदाई सदगुरु, नव निधि वंछित थायजी, सुमति सवाई नित घर संपत, दान विशाल लहायजी ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

सद्गुरुजी सुणो मोरी अरजी ॥ स० ॥ टेर ॥ पहिले धाम किये बहुतेरे अरता बिरुद बिचारी, पल २ चूक पड़ी सद्गुरुजी मैं सुनजब का गरजी ॥ स० ॥ १ ॥ ध्यान तुमारो बहुत न ध्यायो, पूजा करी नहीं तेरी, तोही सेवक वांछित पूरा, थारी थारी मरजी ॥ स० ॥ २ ॥ निश्चे सेती तुम गुण गावे तुरत कटत दुःख बेड़ी, भक्त उधार कहावत जग में, ताहे करत हूं अरजी ॥ स० ॥ ३ ॥ ओर देवकूं मैं नहीं ध्याऊं, शरणागत मैं तेरी, दूर थकी मैं भेटण आयो, निपत दशा सब तारजी ॥ स० ॥ ४ ॥ कुशल गुरु का मैं हूं सेवक लोक जाणे सब कोई, क्षमा रत्न की वीनती सुणने, दरशण दो सद्गुरु जी ॥ स० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

छत्रपती थारे पाय नमेजी, सुरनर हाजर सेव, जोति थारी जग जागती दादा, दुनिया में परतिख देव ॥ १ ॥ हूं तो मोहि रह्योजी म्हारा राज, सदगुरुरे दरबार (टेर) केशर अंबर केवड़ोजी, कस्तुरी कपूर, चंपो मदन राय चंपेली, भक्ति करूं भरपूर ॥ हू० ॥ २ ॥ मागुलिया ने पाव समापे, आंधलिया ने आंख, रूपहीना ने रूप देवे दादा पांख हीना ने पांख ॥ हू० ॥ ३ ॥ चंद पाटोधर साहिबा जी, श्रीजिन कुशल सूरिंद, आठ पहर थाने ओलगेजी, रंग घणे राजिंद ॥ हू० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

सहाना धमार ।

श्री जिनदत्त सूरिंदा परम गुरू श्री० (टेर) परम दयाल दया कर दीजे, दरशण परम आनंदा परम गुरु श्री० ॥१॥ जगम

सुरतरु घटित जायक सेवक जन सुखकन्दा प० श्री०, सद्गुरु ध्यान नाम नित समरण, दूर हरण दुख धन्दा ॥ प० श्री० ॥ २ ॥ निज पद सेवक साविधकारी, रखिये गुरुराजिन्दा, प० श्री०, बेकर जोड़ि निजयुनविनवे, श्रीजिन हर्ष मुनीन्दा ॥ प० श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

प्रभाती तिताला ।

मणि मस्तक पर दीपे जिन के, बड़े गुण जयकारी जी (टेर) श्रीजिनचन्दसूरि मणियाले, गुणगावे नरनारी जी, आश तो तो और भरोसा, मुझ को शरण तुम्हारी जी ॥ म० ॥१॥ जल चन्दन अरु पुष्प मनोहर, अक्षत उज्वलकारी जी, धूप दीप नैवेद्य आरती, पूजो फल निस्तारीजी ॥ म० ॥ २ ॥ अल्प बुद्धि में गुण समुद्र तुम, कैसे करो विचारी जी, शशि मण्डल जिम जलके भीतर, बालग्रहे करधारी जी ॥ म० ॥ ३ ॥ नाग प्रताप हमू पर कीनो, कृपा आपकी भारी जी, श्रीजिन चद हर्ष हृदय में, आया शरण तुमारी जी ॥ म० ॥ ४ ॥ इति पदम्॥

ईमनी तिताल ।

सद्गुरु मणिधारी महाराज, श्रीजिन चन्द्रसूरीश्वर साहिब, दरशण दीजे राज ॥ टेर ॥ महर करी ने प्रेम धरी ने, निज जन ने चितधार, श्री जिनदत्त पटोधर मुनिवर, आनन्द सुखदातार ॥ स० ॥ १ ॥ जन दुख भजन विरुद तुमारो, जाणे सहु नरनार, श्रावक जन मन वंछित पूरन, सुरतरु ज्यों जगसार

॥ स० ॥ २ ॥ वाद विवादे जगजस पावे तारे जलधि जिहाज, घाट घाट भय सक्ट टाले, समरण श्री गुरुराज ॥ स० ॥३॥ पुत्र पुनीता परम विनीता, रूपें लक्ष्मी नार, ऋद्ध सिद्ध सुख सपत घर में, बलि भरियो भण्डार ॥ स० ॥ ४ ॥ आरति चूरो वंछित पूरो अवधारो अरदास, श्रीजिन चन्द्र अक्षय निधि दायक, सफल करो हम आस ॥ स० ॥ इति पदम् ॥

लूम इकताला ।

सद्गुरु करुणा निधान, राखो लाज मेरी स० ॥ टेर ॥ जय २ जिन कुशल सूरि, समरत हाजर हजूर, महन्त निम यश पूर, महिमा जग तेरी ॥ स० ॥ १ ॥ जापर तुम हो दयाल, छिन में करदो निहाल, सङ्कट को चूर देत, दौलत की ढेरी ॥ स० ॥ २ ॥ तुम हो सुरतरु समान, वंछित फल देवो दान, सेवक को दान जान, मेटो भव फेरी ॥ स० ॥ ३ ॥ शरण आये की रखो लाज, वंछित सब पूरो काज, हर्ष चन्द्र शरण आयो, कीरति सुण तेरी ॥ स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

भूपाली झपताला ।

कुशल गुरु ध्याइये, कुशल मंगल करण, खरतरे गच्छ में अधिक राजे, भाव मन में धरी, अगर केशर करी, पूजता मन तना दुःख भाजे ॥ कु० ॥ १ ॥ विकट सङ्कट टले, सजन आवी मिले, आपना भक्तनी आश पूरे, ध्यानमन धारजे सेव गुरुनी करे, तेहनी आपदा जाय दूरे ॥ कु० ॥ २ ॥ सकल संसार दरबार सेवे सदा दिन दिने जासु महिमा सवाई

माहरी लाज गुरु राज तुम ने अछे, इम करो जेम वाधे बड़ाई ॥ कु० ॥ ३ ॥ उदय फर २ अधिक खरतर धनी, सूरि जिन रग सेवक तुमारो, सदा चढती कला करो गुरु माहरी, विषम वैरी बुरा दूर वारो ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

विहाग जत।

कुशल गुरु अब मोहि दरशण दीजे ॥ टेर ॥ ऐसी भांति करो मेरे सद् गुरु, ज्यूं मन मूढ पतीजे ॥ कु० ॥१॥ जल दातार विरुद अमृत रस, श्रवण अञ्जलि भर पीजे, सुरतरु शम दरशन बिन देखे, कहो नयन किम रीझै ॥ कु० ॥२॥ परम दयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुनीजे, परम भक्त जिन राज तुम्हारो, अपनो कर जानीजे ॥कु०॥३॥ इति पदम्॥

भैरवी तिताला।

कुशल गुरु कुशल करो भरपूर ॥कु०॥ टेर ॥ सेवक जन मन वंछित पूरन, समरया होय हजूर ॥ कु० ॥१॥ परम दयाल प्रेम रस पूरन, अशुभ हरण भय दूर, सघ उदो कर सद् गुरु मेरा, विनवे श्री जिनचंद सूर ॥ कु० ॥२॥ इति पदम् ॥

भैरवी धमार।

कुशल गुरु दरशन दीजे हो ॥ कु० ॥ टेर ॥ खरतर गच्छ पति कुशल सूरींद गुरु, मुझ पर महर धरीजे हो ॥ कु० ॥१॥ पतित उधारण विरुद तुमारो, इतनी अरज सुणीजे हो ॥ कु०

॥ २ ॥ आधि व्याधि अरु दोषी दुश्मन, ये सब दूर हरीजे हो गु० ॥३॥ क्षेम रता सेवक कूं निश दिन, सदगुरु सानिध कीजे हो ॥ गु०॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

भैरवी खेमटा ।

गुरुदेवजी का ध्यान सदा, चित्त में लाइये, भव भव के सकल पातक, छिन में मिटाइये गु० ॥१॥ निरुपम स्वरूप जिनका, अमी रस से है भरा, निर्मल गुणों को देख के, आनन्द सुख पाइये, गु० ॥ २ ॥ साहिब सुजान जिनके, चरण की शरण गही, जागी सुमति सु घर से, परम पद को ध्याइये, गु० ॥३॥ दाता दयाल इन के, सिवा जग में कौन है, जिनकी कृपा से बोध, हिया में जगाइये ॥ गु० ॥ ४ ॥ गुरु भक्ति आन अपन, हृदय बीच चुन्नीदास, सेवा में मन को दीजे, सु जस मुखसे गाइये ॥ गु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

गौड मल्हार आडा चौताला ।

कैसे कैसे अवसर में गुरु राखी लाज हमारी, कै० ॥ टेर ॥ मोकों सबल भरोसा तेरा, चन्दसूरि पटधारी ॥ कै० ॥ १ ॥ तुम बिन और न कोई मेरे, या जग में हितकारी, मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी ॥ कै० ॥ २ ॥ आगे तो केइ वेर हमारी, चिन्ता दूर निवारी, अबकी बेर भूल मत जावो, सद्गुरु परउपगारी ॥ कै० ॥३॥ अबकी आप लाज गूजर की, राखिये गुरु यश धारी मेरे कुशल बुध्दि गुरु तेरा, बडा भरोसा भारी ॥ कै० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

आसावरी धमार।

श्री गणधर गुरु कुशल सूरिन्द के, चरण कमल परवारी ॥टेर॥ केसर चन्दन अक्षत कुमकुम, जल भर कचन झारी ॥ श्री० ॥१॥ देव के आगे मगल दीपक, फूल धरो फुलवारी ॥श्री०॥२॥ ऐसी भाति करो विधि पूजा, आन के चित्त इकतारी, राज कहत मेरे परम गुरु जी, वेर २ बलिहारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

सारग कहरवा।

वारी जावों गुरु राय चरण की, वा० ॥ टेर ॥ श्री जिन दत्त सूरीश्वर सद्गुरु, सफल घड़ी सेवा चरन की ॥ वा० ॥ १ ॥ प्रथम अमल गुरु राय की सेवा, अशुभ कर्म्म सब हरन की ॥ वा० ॥ २ ॥ दारिद्र भजन भारि सब गजन, पग २ सानिध करन की ॥ ३ ॥ मोहें नहि परवाह अनेरी, शरण गही इन चरन की ॥ वा० ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष तुम चरण को दासा, आश पूरो सुख करन की ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

चाल लूअरकी।

सद्गुर पूजन जावस्या, कुशल सूरिन्द गुण गास्यां हे माय॥ टेर ॥ स० श्रीफल भेट चढावस्या, चरणारी पूज रचास्या हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेश मे शोभता, नगर बीकाणे राजे हे माय स० ॥ गाम-गडाले दीपता, महियल महिमा छाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरया सकट चूरता, कुशल करन अवतारी हे माय म० ॥ सुख दायक श्री सपने, खरतर गच्छ

अधिकारी हे माय ॥ स० ॥ ३ ॥ दूर देशांतर थी घणा, हिलमिल यात्री आवे हे माय स० लुल २ शीश नमावता, भत सुजस मिल गावे हे माय ॥ स० ॥ ४ ॥ सझ सिणगार मनो-हरू, ठम २ पाँय ठमकावे हे माय, तन मन प्राण लोभावती, गोरी मगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥ विछड्या साजन मेलने, अनमी पाय नमावे हे माय, मनरा मनोरथ पूरने, पर घल लख मीलावे हे माय ॥ स० ॥ ६ ॥ विखमी वेला वाट मैं, समरयाँ सानिध आवे हे माय स० ॥ भूखा भोजन मेलवे, तिसिया नीर पिलावे हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ यात्री आवे नित नवा थान आगल थिर थाट हे माय, सीरणिया नित सामठी, गावे गुण गहगाट हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ कुशल सुरिन्द गुरु आगले, भवि मिल भावना भावे हे माय, चवफते मुनि नित नमें, पर मानद सुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

दादा चिरजीवो, सेवक जन सुखदाई दरशण सदा देवो ॥ टेर ॥ दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरया आपे सुख शाता, दादो जग बधव जग गुरु भ्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जग सगले पूरे, दादो सेवक ना सकट चूरे, दादो दुरित हरे सहुनी दूरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो अलगा थी यात्री आवै, दादा देखी नें ते सुख पावै, म्हारा दादाजीनी जोड़ कोई नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगर माहे छाजे, जिहा सुजस नगारा नित बाजे, दादो थोगाला सेहर छाजे ॥ दा० ॥४॥ दादा घस केसर मृकद घोली, हाथे लेइ सोवन कचोली, पूजो दादानी नें मिल २ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरतिया थागति टाले,

दादो सेवक जन ने प्रतिपाले, दादो जिन शासन नित उज-वाले ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावंत महाराजा, दादो राजै खरतरगच्छ राजा, दादो समरथा सफल करै काजा ॥ दा० ॥ ७ ॥ दादो कुशल सूरिन्द बहु गुण धारी, दादो परतिख सुर तरु अवतारी, जाऊं दादाजीनी हूं बलिहारी ॥ दा० ॥ ८ ॥ दादो श्री जिन चंद सूरिंद पाटे, दादो गाजै गुणियन गह गाटे, जसु थान सोहै जग थिर थाटे ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महर निजर मुझ पर करिये, दादा आरति पीड़ा दुःख हरिये, दादा जिम जग जय कमला वरिये ॥ दा० ॥ १० ॥ दादा सेवक ने साझि करजो, दादा दुश्मन ने दूरे हरजो, जिनचंद ना मन वंछित फलजो ॥ ११ ॥ इति पदम् ॥

गाजै जिन कुशल गडाले, सेवकना संकट टालै हो ॥ गा० ॥ टेर ॥ परतिख गुरू परचा पूरे, सेवकनी चिन्ता चूरै हो ॥ गा० ॥ १ ॥ छतरी निरखी छबि छाजे, विचमें थिर थूभ विराजै हो ॥ गा० ॥ झूलरे यात्री मिल आवै, दादोजी दीठा सुख पावै हो ॥ गा० ॥ २ ॥ केसर घस भरिय कचोली, माहे वालि मृग मद घोली हो ॥ गा० ॥ पूजो पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ दादोजी दुःखिया सुख देवै निरधनिया धन नित देवै हो ॥ गा० ॥ हय हाथी रथ पति बहुला, गुरुना मैं पामैं कमला हो ॥ गा० ॥ ४ ॥ सफ़जा सुत सुन्दरनारी, पामै परिकर सुख कारी हो ॥ गा० ॥ अलगा थी रोग गमावै, गुरु पूज्या वञ्छित पावै हो ॥ गा० ॥ ५ ॥ पावै गुरु तिसिया पाणी, तिण वेला जलधर, आणी हो ॥

गा० ॥ गह गोचर चोर जजार पीड़ा हुँ थाने गार्म हो ॥ गा० ॥ ६ ॥ थाने जा जजुना गाजा, गर्जे गरतगच्छ राज हो ॥ गा० ॥ जसु जेत सिरी वर भाता, जिरहागर गति विख्याता हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ मम्मन मनरंसय इकयासे वासी पूनम पन्नाची हो ॥ गा० ॥ मह मघ सहित सुविलासे, अधिक घर हेत उल्लासे हो ॥ ८ ॥ उग थान नरी आनन्दे, निज भक्ति धतीश्वर व द हो ॥ गा० ॥ इति पदम ॥

सद्गुरुजी थे शासनो श्रीजिन चन्द्र सूरीश हो मेवर नै सानिध करो, पूरो मनहजगीस हो गेलत त्ना हो ल्लालाजी सयन दीं ॥ टेर ॥ १ ॥ गलत ने गुर माहरा, थाग विरद अनेक हो था समरया सक्ट टले, माही ल्लालाजी थाँरी टेक हो ॥ दो० ॥ २ ॥ जीनी चौसठ योगणी, मस किया बावन वीर हो, सिंघ माहे भाने साधिया, पच नदी पच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥ पडिकमणा माहे बीजली, बैतिय जति महमाय हो, थे मंत्र राखी तिका, तूठी वरदे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्छव करता उष मे, मुग्गो मुगल रो पूत हो, जाय करी ने जीवाडियो, सघ माहे राख्यो वाद सूत हो ॥ दो० ॥ ५ ॥ बडनगर रे ब्राह्मणे, देहरे धरी मृत गाय हो, पर प्रवेश विद्या चले, पिशु न लगायो दादे पाय हो ॥ दो० ॥ ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दर कियो सहु दु ख हो परिवार पिण पोतै कियो, सहु नै दियो दादे सुख हो ॥७॥ अवड हाथे अक्षरे, थे प्रगट्या लल रेख हो, युग प्रधान पद तू जयो, आखे अम्बका देव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ थाभो बज्र विदारने, पोथी परगट कीध

हो, विद्या सोवन असरे, उज्जेणी माहे दीध हो ॥ दो० ॥९॥ इम विरुद घणा छे ताहरा, करता नावे पार हो, भाग्य सयोगे दादो भेटियो, अडवडिया आधार हो ॥ दो० ॥ १० ॥ हु छू सेवक ताहरो, थे आपो धन ऋद्ध हो, कनक कीरति सुपसाउले, लाग उदय सुरा सिद्ध हो ॥ दो० ॥ ११ ॥ इति पदम् ॥

हू तो अरज करू कर जोडनें जी म्हारी गरज सुणो गुरराय सद्गुरु सुनिजर जोयजो सान्त्रा, निरूद घणा छै राजराजी काई, सुरि सकल शिर ताज ॥ स० ॥ १ ॥ थारे सकल गणा राजवी जी काई, थारा पूनम पूजे पाय ॥स०॥ केसर अगर नै कुमकुमा जी काई, मृग मद म्हा महकाय ॥ स०सु० ॥ २ ॥ थारे घुडलारा आगल गृमराजी काई, दुलत चमर गज दाल ॥ स० ॥ कारण सेवै कामनीजी काई, निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ॥ ३ ॥ थारी ठावी ठोडै थापनाजी काई उदयापुर आमेर ॥ स० ॥ थारी महिमा भली गुरू मेडतेजी काई, सालूडे वाली सागानेर ॥ स० सु० ॥ ४ ॥ थारी जोत घणी वणू झिगमिगेजी काई, बधती गढ बीकाण ॥स०॥ आम्या पूरण आयजोनी थे तो, देरावरा दिवान ॥ स० सु० ॥ ५ ॥ म्हारी बीनतडी भल मानज्योजी काई, दादाजी दीनदयाल ॥ स० ॥ कुशल सदा कविराजनै जी काई, पाटोधर प्रतिपाल ॥ स० सु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

सागानर विराजे, गुरु परतिख निटा राजै रे, म्हारा सद्गुरुजी नी बलिहारी ॥ टेर ॥ मन बञ्छित पूरो म्हारा, म्हेतो चरण

पखाला थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ मोगन भरिय कचोली माहे चलि मृग मद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजू सद्गुरु पाया पूज्या सब पाप पुलाया रे ॥ म्हा० २ ॥ पूनम नैं सोमवारा, थारे यात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ शुद्ध मन पूजा कीजै, दुख दोहग दूर हरीजै रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुग माहे थारी, कीरति चिहु दिशि माहै भारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह मम अवर न कोई, दीठो मैं परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूहेवाली सागानेरे, जिहा राज करे नित मेनेरे ॥ म्हा० ॥ श्री सघ मिल तिहा आवै, जिहा लूणिया गोठ रचावेरे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ज्ञान सार गुरु राजा, ज्यारा बाजे सदाई नाबाजा रे ॥ म्हा० ॥ क्षमानदन गुण गावे, कर जोड़ी शीश नमावे रे म्हा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

आयो २ रे समरता दादोजी आयो ॥ टेर ॥ सकट देख सेपकक सद्गुरु, देरावरतै धायो जी ॥ स० ॥ १ ॥ बरसे मेह नै रात अधेरी, वायु मिण सजलो वायो, पचनदी हम बैठे बेडी, दरिये चित्त डरायोजी ॥ स० ॥ २ ॥ उच्च मणि पोहचावण आयो, खरतर सघ सवायो, समय सुन्दर कहे कुशल कुशल गुरु, परमानन्द सुख पायो जी ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

दिनमै ऋद्धि समृद्धि मिली शुभ योगे पुण्य दशा सफली, जिन कुशल सूरि गुरु अतुल बली, मन वञ्छित आपे दादो गुण रली ॥ १ ॥ मगल लील समे विपुला, नवनवा महोच्छव रग रेला, प्रगसाये गुरु चढनी कला, मुक्तलीणी पुननी महिला ॥ २ ॥ सन ही दिन थाये सवला मन्वास स्फुरतरण तुरला,

हय गय रथ पायक बहुला कल्लोल करै मन्दिर कमला ॥ ३ ॥ चोंके चमर निशान घुरे, नर थे दरबार खड़ा पहुरे, जय २ कर जोड़ी उच्चरे, सानिद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरस भोजन पान सदा, दु ख रोग दुकाल न होय कदा अविचल उलट त्याग सुधा गुरु कुशल दीए सम्पत सदा ॥ ५ ॥ घम २ मद्दल नाद घुरे, बत्तीसे नाटक रंग रमे, प्रगटयो पुण्य प्रताप हमें, अनल्प अगणित आय नमें ॥ ६ ॥ तन सुख मन सुख चीर तणे, पहिरे बेला उर हारगण, ध्यावो कुशल गुरु एक मनै, जृंभक सुर भंडार भरय घनै ॥ ७ ॥ तन गिर वन गच्छ्यो आधे घोर श्याम घटा मेह बरसाने निसिदा तोय तुरत पावे, जल दाता त्रिजग सुजस गावे ॥ ८ ॥ लहरया जल कल्लोल करे प्रवहण भरसायर मझधार, बूडता साहेब जे समरे, ते आपद निश्चय थी उबरे॥ ९ ॥ झट खड खड्ग प्रहार बरे सौदामिनी जिम सम सेर सोहे, कुशल २ गुरु नाम कहे ते क्षेम कुशल रण गज्झ लहे ॥ १० ॥ शुभ शकुन परचा पैरे, श्री नागपुर संकट चूर, मगलोर थाकी नूर, देराउर भय टाले दूर ॥ ११ ॥ बीरमपुर नगर सुभर, खंभायतपुर विक्रम नगरे, जिन चन्द्र सूरि पाटे पवर, जसु कीरति गही मंडल पसर ॥ १२ ॥ पूरब पश्चिम दक्षिण आगे, उत्तर गुरु दीप सोभागे, दश दिशि जन सेवा मागे, श्री खरतरगच्छ नी महिमा जागे ॥ १३ ॥ पुरपट्टन जनपद ठामे, साहेज कुशल नाम गामे पूजे ते नर हित कामे, ते चक्रधारी पदवी पामे ॥ १४ ॥ श्री जिन कुशल सूरि शाम्न, नाचो भाव जन न सुखिया राखे, समरया गुरु दरशन दाखे, श्री साधु कीर्त्ति पाठक भाखे ॥ १५ ॥ इति स्तवन ॥

पुनः

आयो सहु श्री संघ आस धरै, गुरु मौन गद्या करे प्रेम भरै, दरशन वहिलो सद्गुरु दाखो, निज सेवक जाण महर राखो ॥ १ ॥ इय विरुमी निरिया श्राय बणी भेट्यां करिये तुम्ह अरज घणी, हिव अलगा छो तो वेगा आवो, हिव ढील घड़ी भर मकरावो ॥ २ ॥ तु सद्गुरु खरतरगच्छ साचो, कोई मन जायो तुम्हने काचो, रण सरूट में आलम मरगे, दादा दुश्मन नै दूर हरो ॥ ३ ॥ कोड चूक पड़ी सद्गुरु हम सु, तो जिम कष्ट सो तिण पर राम सु, पिण हिवणा हठ थे मत ताणो, निश्चय पोता नो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया सब श्री सघ भठालगे, पाछा किम जाना इणे पगे, इण पर करिने गुर अरज इसी, हिव सगला मेलो करो खुशी ॥ ५ ॥ जिन कुशल सूरीसर जग चारो अपणायत कर वेगा आवो, अगला विरुद ये उजवालो, पर घल निज छोरू प्रतिपालो, ॥ ६ ॥ गुण गाग गढाले ये गायो, सुणाता सद्गुरु वेगो आयो राजी हुय सगला रगरली, निन चदनी आस्था सफल फली ॥ ७ ॥ इति पद्म् ॥

कामितकामगवी, सुगुरु मेरो कामि० ॥टेर॥ मन शुद्ध शाह अकब्बर दीनी, युग प्रधान पदवी ॥ सु० का० ॥ १ ॥ सकल निशाकर मंडल सम सूरि, दीपत वदन छवी ॥ सु० का० ॥२॥ महि मंडल माहैं महिमा जाकी, दिन प्रति नवी नवी ॥ सु० का० ॥ ३ ॥ जिन माणक्य सूरि पाट उदय गिरि, श्रीजिन चन्द्र रवी ॥ सु० का० ॥ ४ ॥ पेखत ही हरखित भयो मन मेरो, रत्न निधान कवी ॥ सु० का० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

चाल पनिहारी की।

पाटोधर गुरु गछपति सद्गुरजी हो कुशल सूरि गुरु राज, वाला छो, नायक श्री जिन धर्म ना ॥ स० ॥ नायक सुर शिर ताज, वाला छो ॥ १ ॥ भगत वछल भगवन्त छो ॥ स० ॥ सरणाई साधार, वाला छो, दरशण दीजो दीजिये ॥ स० ॥ करुणानिधि करतार, वाला छो ॥ २ ॥ वीनतडी अवधारिये ॥ स०॥ पूरो वंछित काज, वाला छो सेवक पर सुनिजर करो ॥ स० ॥ महर करो महाराज, वाला छो ॥ ३ ॥ खरतरगछना साहिबा ॥ स० ॥ सेवक जन प्रतिपाल वाला छो, परचा पूरो परगटा ॥ स० ॥ वरजस जगत विख्यात, वाला छो, दुरजन जन दूरे करो ॥ स० ॥ खरतरगछ हितकार वाला छो ॥ ४ ॥ उदय करो जिन धर्म नो ॥ स० ॥ इण पंचम कलिकाल वा० ॥ एक भरोसो आपरो ॥ स० ॥ चरण शरण आधार वा० ॥ ५ ॥ महिमा मोटी राजरी ॥ स० ॥ महियल में सुखकार वा० ॥ दीन दयाल दया करी ॥ स० ॥ दीजिये वंछित दान वा० ॥ ६ ॥ जिन सौभाग्य सूरिन्द यूं ॥ स० ॥ पर उपगार प्रधान वा० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग।

कुशल गुरु की निरखण दो असवारी ॥ टेर ॥ केसर चंदा अवर कुमकुमा, मृगमद महक अपारी, अवर गुलाब केतकी चंपो, फूल रही गुलक्यारी ॥ कु० ॥ १ ॥ देव भवन को इन्द्र भवन है, झिगमिग जोति विचारी, वंछित फल दायक वरदाई

सुर नारी सुखकारी ॥ कु० ॥ २ ॥ गला गला नृपत ठाठ मचत हे, हय गय भीड़ हजारी, रावत गन सेट सेनापति, आवत है असवारी ॥ कु० ॥ ३ ॥ भेरी शंख मृदंग घन बाजत, गुण गावें सुर नारी गावत हे केइ मधुर मधुर धुनि, मानव गण मनुहारी ॥ कु० ॥ ४ ॥ गणनायक श्री चंद्र पटोधर, खरतरगच्छ अवतारी पदम सूरि यु अरज करत है कुशल २ सुखकारी ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति पदम ॥

राग प्रभाती ।

दरशण दो गुरु मांने दादा दरशण दो० ॥ टेर ॥ सारे मन मनोरथ सद्गुरु के, निरखत तुरत निवाजे ॥ दादा० ॥ १ ॥ माल नवलखा थारा मनोहर भाव भक्ति अति छाजे ॥ दादा० ॥ २ ॥ यात्रा करण श्री संघ उमाह्यो, पंच शब्द धुनि गाजे ॥ दादा द० ॥ ३ ॥ ठौर ठौर थारा सद्गुरु का महिमा अधिक विराजे ॥ दादा द० ॥ ४ ॥ कल्याण विनय कहे कुशल सूरिंद गुरु, खरतरगच्छ सिराजे ॥ दादा द० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग चलत भैरवी ।

जय गणनायक जय वरदायक श्री गुरुदेव गणेशा ॥ जय० टेर ॥ तुम कूं निशदिन ध्यावत सुर नर, शोभा करत सुरेशा, चंद्र कान्ति गुण निरमल शोभित, यश गंगाजल जैसा ॥ जय० ॥ १ ॥ नाम प्रतापते अष्टसिद्ध नवनिद्ध, हाजर होत हमेशा, दाता साहिब वंछित दाता, कलु में सुरतरु जैसा ॥ ज० ॥ २ ॥ पूजन चरण पुष्प कर हरखित, नावत मस्तक नरेशा, श्री जिन

कुशल सूरि गुरु सेवन, पावत फल सवेरा ॥ सु० ॥ ३ ॥
इति पदम् ॥

राग विहाग ।

मोहि शरण तिहारा कुशल गुरु मोहि शु० ॥ टेर ॥ सुपन
में सोवत निस दिन जागत चरण कमल आधारा कुशल गुरु
मोहि ॥ म० ॥ बाट घाट रखवाल सदाई, शापद विघन निवारा,
दह दिसि दीपे महिमा जाकी, परतिख सकल संसारा कु०
मो०॥१॥ धाडीना कुं धन के दाता आपे बहु परिवारा, सद्गुरु
गुण गाये सुख दायक, श्री जिन हर्ष अपारा कु० मो० ॥ २
॥ इति पदम् ॥

राग कैरवो ।

सेवो सुगुरु सुखदायरे से० ॥ टेर ॥ श्री जिन कुशल
सूरीसर साहिब, मन चिंत वांछित थायरे ॥ से० ॥१॥ आधि व्याधि
और रोग उपद्रव नाम लिया भग जायरे ॥ से० ॥२॥ करत
वदन अनन्त सुखसुख, पूजो नित हित लायरे ॥ से०॥३॥ बाट
घाट अरु निसमी विरिया, समरया होत सहायरे ॥ से० ॥४॥
अभय सदा सुखदाई सद्गुरु, पग २ वांछित थायरे ॥ से० ५
॥ इति पदम् ॥

राग फागुण ।

गुर वदन आये विवुध पती ॥ टेर ॥ सुरगण गाये शीश
नमाये, गुण ... गंधर्व गती ॥ गु० ॥ १ ॥ युग प्रधान जग
गुरु नग ... क्षेम जिनदत्त सूरि यती ॥ गु० ॥२॥ वरनाई

वाचा जग जाचा साचा सानिवन गनी ॥ गु० ॥ ३ ॥ विपद विडारण सपत कारण, विरुद उधारण वडवखती ॥ गु० ॥४॥ सदगुरु दरस सुधारस, वरसत, पाप सताप रहै न रती ॥ गु० ॥५॥ चद चकोर मोरघन गरजत, चित चाहत नित चरणनती ॥ गु० ॥ ६ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरिंद गुरु सेवम, सेवक सुगुण करे विनती ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

निरमल हुय भजले प्रभु प्यारा । राग ।

कुशल सूरिंद गुरु ध्यान धरो हिये, ज्यू होवै आनद अधिक अपारा ॥कु०॥ निरमल नीर पखाली निज तनु पहिरी धोरोदक वस्त्र सुप्यारा ॥ कु० ॥ १ ॥ कचन कलश भरी पचामृत, चरण पखाले शुद्ध मकारा कु० ॥ केसर घोली भरीय कचोली माहे मृगमद घसघन सारा ॥ कु० ॥ २ ॥ धूप दीप बलि अक्षत नवद्य, फल पुष्पादिक बहु विधसारा, अगर द्रव्य सब पूजन केरा भावे लीजे चित्त उदारा ॥ कु० ॥३॥ गुरु चरणामृत अगोचर चित, दुष्टदुष्ट जाय जाय विकारा सदगुरु नाम जिये सब नासे आधि व्याधि दुख दोष प्रचारा ॥ कु० ॥ ४ ॥ घर २ मंगल नवनिध ऋद्ध सिद्ध, हाजर होय रमेश अपारा, श्रीजिन सौभाग्य सूरि सुगुरुपद, सेवत होय सबे सुखकारा ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

जिनदत्त सुगुरु बलिहारी सुखकारी ॥जि०॥टेर॥ सघ सकल को सकट भागे, पच नदी जिन नागी ॥ मु० ॥ १ ॥ विद्या पोथी

परगट थाये, थाने यज निरागे ॥ मु० ॥ २ ॥ मृतक गऊ जिन जिन मंदिर ते र ते भविय उठागे ॥ मु० ॥ ३ ॥ नाग राग गुरु नगरा कमल पर यागे आऊ वार हजारे ॥ मु० ॥ ४ ॥ इति पद ॥

(चाल) विलमें ऋद्धि समृद्धि मिली ।

मन वन्दित पूरण जगनाथो, जिनदत्त सूरीश्वर गुर न्याथो, आपद नमु नाम थकी विघटे भगति ती नाहि परे प्रगट ॥ १ ॥ गुरु गुनस तणो पार न पाऊ, पिण भवित थकी तुझ ने ध्याऊ, ॥ वडगोत्र वाहड दे माता, धुधुकानगरी यादग ताता ॥ २ ॥ सम्वत इग्यार बत्तीसे, जनम्या शुभ महुरत शुभ दिवसे, दीक्षा इग्यारे इकताले, गुरपद पाया आश्रम टाले ॥ ३ ॥ गुणसत्तर पटु वैशाख वदी, चितौड थाप्या गच्छपती, मन्दिर थंभे पोथी जाणी, विद्या बल निज पागे आणी ॥४॥ जोगणिया शावक रूप किये, उज्जयणी मे उपयोग लियो, कैमरा चाचोटा तासु ग्ले, गुर कीनी नतशिर मर चले ॥ ५ ॥ वडनगरे ब्राह्मण मनक गऊ, जिन मन्दिर द्वारे आणमड़ विचावन आश्रम पाग नम्या, गुरु महिर धरी अपराध खम्या ॥ ६ ॥ सिंह मुगल तणो सुत जीव दियो, साभेला माहे मग कियो, बीजली पात्र नले राखी, ये विरुद तणा छ जग साखी ॥ ७ ॥ गिरनार महण अम्बा देवी, अठम भक्ते अनड सेवी, हुय परगट कसतन वर्ण लिख्या, वाचता युग परधान लख्या ॥ ८ ॥ भरू दरिये मजहण पार करयो, समरता सारी कष्ट गयो, नल आगन तोर म्यापर केग,

भय भगा नाम मुगुरु तेरा ॥९॥ तुझ मुनिजर रातु पाय नमे, मत होरा लियारे पुत्र रमे, गच्छतरगच्छ नायक गुरु राया, बहु पुण्य थकी दरशण पाया ॥ १० ॥ सवत बारसे इग्यारे, सुर ग्यपुरन में शिहु जग सारे, इग्यारस सुदि आषाढ तणी, अजमेरे पहुंता स्वर्ग भणी ॥ ११ ॥ थिर थापना थूभे निज गंभे, गुरु सुजस तणा बाजिंत्र बाजै, नडवडा नरपति तुम ध्यावै, दरशण करना जानी आवै ॥ १२ ॥ समरथा सद्गुरु सुराकारी, जिनदत्त सूरीसर बलिहारी, चिंतामणि रयण समो देवा, दया गरु चाहे सुगुरु सेवा ॥ इति पदम ॥

ढाल चिछियारी।

अरे लाला श्री जिन कुशल सूरीसरू, सर्वाजे मन शुद्ध मानो लाला, परतिख परचा पूरवे, इन कलियुग मे गुरुराय लाला श्री जि० ॥ १ ॥ अरे लाला केसर चदन घसकरी पूजो मेरी घनसाररे लाला, पवित्र वस्त्र पहरी करी, नव नेवज करो उदाररे लाला, श्री जि० ॥ २ ॥ अरे लाला शुभ भलो दे राउरे, शोभा बहु जेसलमेररे लाला, मुलतानै मरोट मैं, गुरु सोह बीकानेररे लाला ॥श्री जि०३॥ अरे लाला योधपुर नै मेड़ता सैतारण नै नागोररे लाला, सोझत नैं पालीपुर, नालारे श्री साचाररे लाला ॥श्री जि०४॥ अरे लाला गगनगर नै सूने, रत्नायन पाटण माहिरे लाला, मेवुजे मोटे सदा, नवे नगर उछाहरे लाला, श्री जि० ॥ ५ ॥ अरे लाला पुर पुर मैं तुम दीपतो, दादो जी परतिख दरस लाला हडक आगा पूरव निण नगमहु सारे

सेवरे लाला ॥ श्री जि० ॥ ६ ॥ अरे लाला नामे सकट सविटले, तिसिया ने पावे नीररे लाला, रण में जे समरण करे, सदगुरु होवे तसु भीररे लाला ॥ श्री जि० ७ ॥ अरे लाला इम महिमा जग जेहनी, जाणे सहु को नर नाररे लाला, सुख सपत दे सेवका, बहु पुत्र कलत्र परिवाररे लाला ॥ श्री जि० ८ ॥ अरे लाला समरया दरशण देइज्यो, सेवक नी कज्यो साररे लाला, राज सागर कर जोड़ ने, वीनती करे वारवाररे लाला ॥ श्री जि० ९ ॥ इति पदम् ॥

(मोरा भोला गुरू पाणी मंत्र दे तीन चलू) राग ।

दादा कुशल सूरिंद, तुम दरशणतै परमानन्द ॥ दादा० टेर ॥ नित तेरे प्रभुपद अरविंद, वंदे रावल राणा वृंद ॥दादा०॥१॥ तुम दरशण से मुझ मनजोर, हरख लहे जिम चन्द चकोर, दादा० ॥ निरुदनिसुणी जिम जलधर शोर, मुझ मन नाचत जिम वन मोर ॥ दादा० ॥२॥ तरणि डूबती जलधि मझार, ते तारी निज गुण संभार ॥ दादा० ॥ वंछित पूरण अतहि उदार, कालि में गुरु सुरमणि अवतार ॥ दादा० ॥ ३ ॥ तो सम सुर नहीं दीनदयाल, तुम हो शरणागत प्रतिपाल ॥ दादा० ॥ तुम समरण ते लहे विशाल, सेवक जन नित मगल माल ॥ दादा० ॥ ४ ॥ अजीमगजपुर में सुखदाय, थूभ विराजे सहु मन भाय ॥ दादा० श्री जिन हर्ष सूरिंद सुपसाय, दरशण लह्यो शिवचद सुहाय ॥ दादा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सारग ।

नित नमिये कुशल सूरिंदजी नि० ॥ टेर ॥ परचा साचा

नवला पूरे, ये देवा सिर इदजी ॥ नित० ॥ १ ॥ अष्ट महा-
भय विघन निवारै, चिता चूरे मुणिंदजी ॥ नि० ॥ सुदर सूरत
वदन सुहावे, दीठा पूनमचन्दजी ॥ नित० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

राग सारग।

नित कुशल सूरीसर ध्याइये ॥ टेर ॥ सद्गुरु सेवा मन शुद्ध करके, म न वंछित फल पाइये ॥ नित० ॥ १ ॥ चिंता संकट कष्ट निवारण, श्री गुरु नाम कहाइये ॥ नित० ॥ दीन दयाल दया कर मोपर, दु ख सब दूर गमाइये ॥ नि० ॥ २ ॥ मकसूदाबाद में शुभ थप्यो है, शुभ वेला सुखदाइये ॥ नि० ॥ रासी पूनम सद्गुरु भेट्या, हरख २ गुण गाइये ॥ नित० ॥ ३ ॥ प्रहसम सद्गुरु ध्यान धरीजे, चरण कमल चित लाइये नि० ॥ आलमकू निज सेवक जाणी, आनंद अधिक वधाइये ॥ नित० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग नट।

दीपे बडली में गुरु थारो देहरो ॥दी०॥ टेर ॥ जिहा जिन दत्त कुशल गुरु सोहत, खरतरगच्छ को सेहरो ॥ दीपे० ॥ १ ॥ रमणी रंग बधावो सुगुरु,को, मस्तक धरणी को वेवरो ॥ दी० ॥ पाटण संघ सहित जिन चद सूरि, जात्र करत बान्यो नेहरो दीपे० ॥ २ ॥ जाकू सानिधकारी सद्गुरु, दवरण अहे याको छेहरो ॥ दीपे० ॥ महिमराज ऊपर सुनिजर कर, वूठो सुधारस मेहरो ॥ दीपे० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

देशी करहेरी ।

देरावर थारो देहरो हो साहिब, गढ़ बीकाणे राज, नवला थे नागोर में हो साहिब, मोज समद निहाज, थापर वारी हो सद्‌गुरजी साहिब मुजरो मानोजी राज ॥ १ ॥ टेर ॥ महिमा घणी थारी मेडते हो साहिब, माने जैसलमेर, तप थारा सूरज तपे हो साहिब, छत्र धरावो सागानेर ॥ थापर वारी० ॥ २ ॥ चरणे चढाऊ केतकी हो साहिब, सूघो जी अगर गुलाब, भमर लपेटी मालती हो साहिब, जाई जूई रे जबाब ॥ थापर वारी० ॥३॥ दीवलो करू कपूर रो जी साहिब, महके मेण मेंताब, धूपड खेवू करू आरती हो साहिब, गगाजल रो आव ॥ थापर वारी० ॥४॥ केसर भरू कटोरड़ी हो साहिब, पूजू जी थाहरा पाय, नव नेवज करनेतरूहो साहिब, मिश्री दूध मिलाय ॥ थापर वारी० ॥५॥ बिडलो पान पचासरो हो साहिब, नायक नागरबेल, माहे सुगधी एलची हो साहिब, मुखड़े परिमल मेल ॥ थापर वारी० ॥६॥ अमर करो नैण अमी भरो हो साहिब, श्री जिन कुशल सूरिन्द, राज रमण रींभा करो हो साहिब, अरज करे राजिंद ॥ थापर वारी० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग केदारो कहरवो ।

गणधर सेवो गुरु कुशल सूरी ॥ ग० ॥ टेर ॥ अमल विमल शशि मुख छवि सोहे, निरख २ नैना हरख भरी ॥ गण० ॥ १ ॥ नयन कमल दल अधिक विराजे, झल हल भाण ज्यू भाल धरी ॥ ग० ॥ २ ॥ नाशा दीप शिखा ज्यू सुरगी, लाल

प्रवाली अधर परी ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु के विरुद को पार न पावे, जो ध्यावे वाकी धन्य घरी ॥ ग० ॥ ४ ॥ श्री जिन हर्ष लहे सुग्व सपत, सत्य रत्न दुःख दूर हरी ॥ गए० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग कहरवा ।

तिहारे दरश की चाह रही, मोरी अरज सुणो गुरुरायजी ति० ॥ टेर ॥ तिहारे दरश तें आनन्द उपजैं, रोम २ विकसाय जी ॥ ति० ॥ १ ॥ और देव सुपने नहीं धारू, तुम बिन चित अकुलायजी ॥ ति० ॥ २ ॥ कुशल कला जग में वरताई, तातें कुशल कहायजी ॥ ति० ॥ ३ ॥ परतिख दरशन दीजे मुझको, रिद्ध सिद्ध नवनिद्ध थायजी ॥ ति० ॥ ४ ॥ रम विनय गुरु के गुण गावे, चरण कमल चित लायजी ॥ ति० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

पूजो भजो रे भाई, गुरु महिमा होत सवाई ॥ पूजो भ० ॥ टेर ॥ मृग मद केशर चन्दन अरचो, सुदर पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ १ ॥ तन मन वश कर ध्यान हिये धर, जिनदत्त जप वरदाई ॥ पू० ॥२॥ भविक जीव मिल गुरु गुण गावे, सद्गुरु होत सहाई ॥ पू० ॥ ३ ॥ या गुरु की मैं कनलग वरणू कीरत धीर बडाई ॥ ४ ॥ श्री जिन सौभाग्य सूरि सुगुरु मेरे, निशदिन हर्ष बधाई ॥ पूजो भ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग कहरवो।

अरज सुणो गुरु एक हमारी ॥ अ० ॥ टेर ॥ तुम दरशन विनहू बहु भटक्यो, आयो अब शरणागत थारी ॥ आ० ॥१॥ पतित उधारण विरुद तुमारो, राखो सद्गुरु मोहि निरधारी ॥ अ० ॥ २ ॥ अहनिश ध्यान तुमारो ध्याऊ, राखू चित हित सें इकतारी ॥ अ० ॥ ३ ॥ परचा पूरण कलियुग में गुरु, शोभा जग में बहु विस्तारी ॥ अ० ॥ ४ ॥ हर्ष विशाल शिष्य इम भाखे, चरण कमल की मै जाऊ बलिहारी ॥ अ० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग कहरवा।

आज हमारे आनन्द भयो, में भेट्या श्री गुरुरायजी ॥आ० ॥ टेर ॥ खरतर गच्छपति दीपतो रे, जिनदत्त सूरिंद कहायजी ॥ आ० १ ॥ यात्री आवे बहु देसनारे, पूज रचे बहु भायजी ॥ आ० २ ॥ निरमल गंगाजल भरीने, चरण प्रक्षाल करायजी ॥ आ० ३ ॥ केसर चंदन घस करीने, मृगमद माहि मिलायजी ॥ आ० ४ ॥ धूप दीप नैवेद्यथीरे, पंच रंग पुष्प चढायजी ॥ आ० ५ ॥ तीन प्रदक्षिणा देइनेरे, लुल २ शीश नमायजी ॥ आ० ६ ॥ इत्यादिक बहु भेदसूरे भक्ति, करो चितलायजी ॥ आ० ७ ॥ निश्चय सुगुरु नें भजेरे, कमणा नरहेकायजी ॥ आ० ८ ॥ आधि व्याधि दोषी पुन दुश्मन, गुरु नामें मिट जायजी ॥ आ० ९ ॥ सेवक कु संकट पड्यारे, समरथा होत सहायजी ॥ आ० १० ॥ संवत् उगणतिड़ोत्तेरे, भाद्रव मास सुहायजी ॥ आ० ११ ॥ शुक्ल पक्ष पूनम दिनेरे, दरशण

पायो मैं श्रायजी ॥ श्रा० १२ ॥ हर्ष विशाल शिष्य ऊमहीरे, प्रीति सुन्दर गुणगायजी ॥ श्रा० १३ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

सद्गुरुनी शोभा सवाई ए॥स०॥आज आनद वधाई ए॥टेर॥ श्रीजिन कुशल सूरीसर साहिब, वडवखती वरदाई ए ॥स० १॥ चद पटोधर चावो चिहु दिसि, दुनिया में फिरत दुहाई ए ॥स० २ ॥ कनक कचोल्नी केशर घोली, मृगमद माहि मिलाई ए ॥ स० ३ ॥ दीप धूप अक्षत फल नैवद्य, बहुविध पूज बनाई ए ॥ स० ४ ॥ थाट घाट वाले सिखमी वेला, समरया होत सहाई ए ॥ स० ५ ॥ श्रीजिन हर्ष सूरिंद गुरु गच्छपति, सुगुण सेवक सुखदाई ए ॥ स० ६ ॥ इति पदम् ॥

राग कालिंगडा ।

मैं बलिहारी गुरु चरना ॥ मैं० ॥ टेर ॥ श्रीजिन कुशल सूरिंद साहिब के, चरण कमल का सरना ॥ मैं० ॥ १ ॥ केसर चदन घरचू चरने, फूल चढ़ाऊ शुभ वरना ॥ मैं० ॥ भाव विशुद्ध गुरुगुण गावो, ध्यान हिये में धरना ॥ मैं० २ ॥ सुरतरु सम गुरु बछित दायक, मन से नाहि विसरना ॥ मैं ॥ चरण कमल को कर आराधन, कलियुग से निस्तरना ॥ मैं० ॥ ३ ॥ सेवक अरज सुणो सद्गुरु जी, बछित पूरन करना ॥ मैं ॥ दरशण दीजे ढील न कीजे, होत नहीं अव जरना ॥ मैं० ॥ ४ ॥ गच्छ उदो करदो गुण सपद, आपद दूरे हरना॥मैं॥ जिन सौभाग्य सूरीसर, साहिब, विजय सदा सुख करना ॥मैं०५॥ इति पदम् ॥

राग कालिंगड़ा ।

वीनउड़ी सुण लीजिये सद्गुरु जी मोरी ॥ वी० ॥ टेर ॥ श्रीजिनचंद सूरिंद पटधारी, गोपर सुनिनर कीजिये ॥स०॥वी० १॥ खरतरगच्छ के प्रभु प्रतिपालक, दरशण बहिलो दीजिये ॥ स० वी० ॥ गच्छ उद्धो पर साहिब मेरा, आपद दूर हरीजिये ॥ स० वी० ॥२॥ प्रगट प्रवीन परम सद्गुरु थी, और न आस करीजिये ॥ स० वी० ॥ धाय रखो कलिकाल जगत में, किण विध धीर धरीजिये ॥ स० वी० ॥ ३ ॥ प्रबल प्रमाद नदी गुण समुद्र, आतम कुल न पतीजिये ॥ स० वी० ॥ नाव पुरायी गहरी गहरी, बेड़ा पार करीजिये ॥ स०वी०॥ ४ ॥ धर्म नाव निर्यामक जग मे, गुरु बिन कौन करीजिये ॥स० वी० ॥ जिन सौभाग्य सूरिंद के साहिब, जग गुरु विजय करीजिये ॥ स० वी० ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

सद्गुरु जी म्हारे मन भाया ॥स०॥ टेर ॥ जब से दृष्टि पड़ी गुरु चरने, देखत नयन लुभाया ॥स०॥ १ ॥ थे म्हारा म्हे थाकर थारा, एही संयोग बनाया, सेवक आनंद कुशल सूरिंद कू, निरखनने निद्ध पाया ॥ स० ॥ २ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ ।

सद्गुरु मेरे तूही प्यारा है ॥ स० ॥ टेर ॥ मात पिता सब ही स्वारथ के, तेरा ये सहारा है ॥ स० ॥ १ ॥ मेरे मन

तुम्ह ही मूं अटक्यो, सो मधू होवत न्यारा है ॥ स० ॥ २ ॥ दुरमन दाटे घाटे घाटे, विघन हरन सुखकारा है ॥ स० ॥३॥ [अरद अनेक भू मे वेता, महिमा अधिक अपारा है ॥ स० ॥ ४ ॥ तातें जश शोभा सुख दाजे, आलम दास तिहारा है ॥ स० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ।

नित चरणा मे चित लीनो है ॥ नि० ॥ टेर ॥ बैठत ऊठत नाम तुम्हारो, लेता मुझ मन भीनो है ॥ नि० ॥ १ ॥ मात पिता सद्गुरु तू माहरे, शरण सदा तुम्ह हीनो है ॥ स० ॥ २ ॥ चारित्र सुन्दर नाम तुम्हारो, तुम्ह गुण गाथा लीनो है ॥ स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग।

सद्गुरु ने पकड़ी बाह, नहीं तर बह जाते ॥ स० ॥ टेर ॥ भवसागर के बीच परे रे, काम महागन दाह, मच्छ गल्ला गल जहा लगी रे, दुःख जल पूर अगाह ॥ न० स० ॥ १ ॥ देव असुर नर वर बडे रे जामें बहत निहार, तन मन मेरो थर हरे रे, शरन को आधार ॥ न० स० ॥ २ ॥ निर्यामक सद्गुरु मिले रे, तारक भव्य जिहान, धम पोत के निच बेरे रे कहत क्षमा कल्याण ॥ न० स० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग।

तुम्ह सूरत सुखकारी मैं वारी जाऊ ॥ तु० ॥ श्री जिन हरख सूरीसर साहिब ॥ तु० ॥ टेर ॥ कलियुग मे गुरु नाम

तुमारो है परचो अति भारी, मैं वारी जाऊ ॥ है प० ॥ १ ॥
पूनम २ ने सोमवारे, आय मिले नर नारी, मैं वारी० आ० श्री०
केसर चन्दन पुष्पमाल सू, पूजा रचे अति भारी ॥ मैं वारी० पू०
श्री० ॥ २ ॥ जो सद्गुरुनो ध्यान धरे मन, नित २ बात करारी
मैं० नि० श्री० श्री जिनचन्द अधिक उच्छव सू, यात्र करी जय
कारी ॥ मैं वा० वा० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग काफी ।

सुणियो अरज हमारी सुगुरुजी ॥सु०॥ टेर ॥ दीनदयाल
कृपानिध साहिब, आसा एक तुमारी जी, वंछित दायक वंछित
दीजे, इक तुमरी इक तारी जी ॥ सुणि० ॥ १ ॥ चंद पटोधर
कुशल सूरिंदजी, जस जग में विस्तारी जी, भक्त वत्सल भगवत
प्रभू को, चरन शरन सुखकारी जी ॥ सुणि० ॥ २ ॥ सुनिजर
कर प्रभु साहिब मेरे, दरशण वहिलो दीजे जी, सद्गुरु अपनो
सेवक जाणी, वंछित पूरण कीजे जी ॥ सुणि० ॥ ३ ॥ परम प्रभु
मेरो परउपगारी, शरणागत साधारी जी, बालक है मोहि वंछित
दीजे, वधती बान वधारी जी ॥ सुणि० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

कुशल करण मेरे परम गुरु जी, बेर २ बलिहारी ॥ कु०
॥ टेर ॥ श्री जिन चन्द सूरिंद पटधारी, जिन शासन उजवारी,
गाम नगर थिर थूभ विराजे, वारी जाऊ बार हजारी ॥ कु०
॥ १ ॥ महिमा मेरु समान है जाकी, कहि न सकू विस्तारी,
श्रीजिनकुशल सूरीसर साहिब, सुणिये अरज हमारी ॥ कु०

॥ २ ॥ सुर सुख मगन लगन लागी जब, तातें दिया विसारी, ऐसे सद्गुरु तुम नवि छाजे, लीजे काण तुम्हारी ॥कु० ॥३॥ निज गण निज पद लज्या अपनी, राखिये बिरुद सभारी, गिरुआ कबहू छेटन दाखे, राखे मान अधारी ॥ कु० ॥ ४ ॥ मेरी चूक पर निजर न दीजे, कीजे अनुग्रह भारी, श्री जिन हर्ष सूरीसर सद्गुरु, समरथा सानिधकारी ॥ कु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः प्रभाती ।

श्री जिन कुशल सूरीसर सद्गुरु, तुम दरशण बलिहारी ॥ श्री० ॥ टेर ॥ मन वंछित पूरण इन कलि में, गुरु सुरतरु अवतारी, करुणानिधि जलनिधि तें तरणी, करुणा कर निस्तारी ॥ श्री० ॥ १ ॥ तुम हो त्रिदश शिरोमणि साहिब, तुम सहु जग उपगारी, सगले सहु नरपति नित वंदे, तुम पद कज मनुहारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ अति विस्मी अटवी ग्रीषम में, तप तरसितकू निहारी, जलदायक निज बिरुद सभारी, जल पावे सुखकारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ तुम समरथा खेचर अरु व्यंतर, साकणि भय अति भारी, मिट जावे सहु तिमिर पुलावे, जिम दीठा तिमरारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पाली पुर गुरु थूभ विराजे, सब उदय जयकारी, शिर नामी शिवचंद इम जंपे, वारी जाऊ बार हजारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग अलहिया वेलाउल ॥

श्री जिन कुशल सूरिंद गुरु साहिब, पूरण परम दयाला है करुणानिधि किरपाला है ॥ श्री० ॥ टेर ॥ अष्ट प्रकारी पूजा

भविजन, विधि सु करत विशाला है, याकूं अष्टभीति नहीं आवे, काटे कष्ट कराला है ॥ श्री० ॥ १ ॥ हीर चीर पाटंबर अंबर, माणक मोती माला है, पूजो परम गुरु के पगला, पग २ रिद्ध रसाला है ॥ श्री० ॥ २ ॥ पुत्र कलत्र मित्र मन भावे, दे हाथी मतवाला है, मोटा मन्दिर महल मालिया, सुन्दर रूप रसाला है ॥ श्री० ॥ ३ ॥ विपत विडारन सकट टालन, आपद उधारण वाला है, समरथ है साहिब गुरु मेरा, घड़ी घड़ी रिछपाला है ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सानिध करत सदाई सेवक, जपे गुरु पद माला है, रतन कहत मन राजी हुय के, कबहु नाहीं कसाला है ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

श्री जिन कुशल सूरीश्वर साहिब, तुम हो पर उपगारी ॥ श्री० ॥ टेर ॥ खरतरगच्छ नायक गुण लायक, जिन चन्द सूरि पटधारी ॥ श्री० ॥ १ ॥ सत उधारण सुजस बधारण, भीड भंजन अति भारी, नाम तुमारो कुशल करण जग, बारीजाऊं चार हजारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ जगबछल तुम ही हो जगत गुरु, करुणानिधि करतारी, कहे जिन चंद मेरे हो सद्गुरु, हमें है आश तुमारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

तू है दाता मेरो कुशल गुरु ॥ तू० ॥ टेर ॥ तुम बिन औरन किणपे याचू, कोहे दाता थनेरो, ध्यान हृदय बिच नित प्रति धारू, एक भरोसो तेरो ॥ तू० ॥ १ ॥ राज रमण रिद्ध

सिद्ध सब हाजर, नाम जपे सहु तेरो, दीनदयाल सेवे सुखदाई, कीरतवत बढेगे ॥ नू० ॥ २ ॥ देव दयाकर दरशण दीजे, सारो काज सवेरो, राज करत मोहि अपनो जानो चरण कमल को चेरो ॥ नू० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग अलिहिया वेलाउल ।

कुशल सुरिंद सहाई हमारे ॥ कु० ॥ टेर ॥ मन वंछित सुख सब ही पूरे, याते फिकर न काई ॥ कु० ॥ १ ॥ परचा पूरण चिन्ता चूरण, श्री गुरु नाम कहाई, प्रगट विरुद जगमें सद्गुरु को, सेवक को सुखदाई ॥ कु० ॥ २ ॥ श्री जिन कुशल सूरीश्वर ध्याऊ, चरण कमल चितलाई, मेरे एक भरोसो तेरो और न कोई सुहाई ॥ कु० ॥ ३ ॥ सेवक ऊपर सुनिजर कीजे, यामें नव निधि पाई, आनद चद सदा सुख दीजे, दिन २ होत वधाई ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम ॥

राग जय जयवती ।

आज तो आनद मेरे, आई भली भावना ॥ आ० ॥ टेर ॥ भई जो कुशल गुर, भेटन की कामना, कलियुग मे सुरतरु दुरित को दावना ॥ आ० ॥ १ ॥ दादा को दरश पायो, लोचन कू अधिक भायो, सुधा ते लग्यो सवायो, पूज्या सुख पावना ॥ आ० ॥ २ ॥ श्री जिन कुशल सूर, सेवक को हा हजूर, दुरित हरण दूर, अधिक वधावना ॥ आज० ॥ ३ ॥ कुकुम चदन घसि, सरस गुलाब रसि, उलसि उलसि पूज, गुरु गुण गावना ॥ आ० ॥ ४ ॥ प्यासे कू ज्यू पाणी पावे, भूले कू राह वतावे, बधन

छोटावे, दूर विछुरे मिलावना ॥ आज० ॥ ५ ॥ लक्ष्मी वल्लभ की आस, पूरे सदा सुख वास, कविराज जसवास जगत सुहावना ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग परज ।

कुशल सूरिंद सुखकारी हो सुगुरु मेरो ॥ कु० ॥ टेर ॥ कुशल सुरिंद गुरु परतिख जगमें, परचा पूरत भारी हो ॥ सु० कु० ॥ १ ॥ कुशल मंडन, पातक खंडन, सुरतरु सम जस-धारी हो ॥ सु० कु० ॥ २ ॥ सुजस सुण्यो तेरो महियल में, आयो शरण तुमारी हो ॥ सु० कु० ॥ ३ ॥ दया मन्दिर की यही अरज है, दरशण द्यो हितकारी हो ॥ सु० कु० ॥४॥ इति पदम् ॥

राग ।

मेरे होउ सहाई सद्गुरु ॥ मेरे हो० ॥ टेर ॥ तुझ सम-रण थी अठ सिद्ध नव निद्ध, कमणा न रहे काई ॥ मे० स० ॥ १ ॥ आधि व्याधि अरियण अरु विरमी, वेला सहु टल जाई, पग २ कुशल सूरिंद गुरु सानिध, करणा कर दिखलाई स० मे० ॥ २ ॥ दुष्ट निकंदन, सेवक रंजन, खरतरगच्छ वरदाई, क्षेमरतन कू दरशण दीजे, दिन २ चढत सवाई ॥ स० मे० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

राग आसाउरी ।

हमकू शरण तिहारी हो, दादा राखो शरण तिहारी ॥ ह० ॥ टेर ॥ सतकी बात कहूं तुम आगल, जो हम मुखिसर भारी

व्याधि मिटावो, ज्ञाति वधावो, सपन यो सुरसाग्री हो ॥ दा० ॥१॥ मारू भर निद्रा में पोढे, अनहु न बात विचारी, आलस छोडो, करू निहोरो, सुणिये वीतक सारी हो ॥ दा० ॥ २ ॥ माहरे दोला द्वेषी दुश्मन, लपट्या आण नरारी, लेटने हणिये, ढील न करिये एही अरज हमारी हो दादा ॥ दा० ॥ ३ ॥ घणु २ सू उलभो दीजे, सांभीने मनुहारी, अपनाइत कर जाण पतित नी, करिये गुरु रखवारी हो ॥ दादा दा० ॥ ४ ॥ अब तो दिवस घणा ही बीता, सुमसन हुओ गणधारी, श्री जिन कुशल सूरीश्वर जी , क्षेमरतन बलिहारी हो ॥ दादा दा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग प्रभाती ।

श्री सद्गुर महाराज कुशल गुर, तुम हो पर उपगारी ॥ श्री० ॥ टेर ॥ शिव सुखदायक लायक स्वामी, जिन चंद सूरि पटधारी, नाम तुमारो कुशल कुशल गुर, करुणानिधि खरतारी श्री० ॥ १ ॥ वाट घाट घणु विगमी वारे, समरण कीया सुख कारी ॥ श्री० ॥ २ ॥ नित प्रति ध्यान तुमारो ध्यावे, पावे ऋद्धि समारी, तुम ही मात पिता हित वच्छल, निसदिन याद तुमारी ॥ श्री० ॥ ३ ॥ केसर चंदन तगर अरगजा, लावे नर२ नारी, पूज रचावे, भक्ति बनावे, गुण गावे अति प्यारी ॥ श्री० ॥ ४ ॥ नाम लेत गुरु संकट टाले, पाले विरुद सुमारी, श्री जिन हर्ष सूरि सुपसाये, सत्यरतन बलिहारी ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः प्रभाती ।

श्री सद्गुरु जिन कुशल सूरीश्वर, साचो नाम धरावे ॥ श्री०

॥ टेर ॥ परमानंद पद परम सुधारस, गुरु पूज्या घर आवे ॥ श्री० ॥ १ ॥ सेवग जन मतिपाल जगत गुरु, जिन शासन उजवाले, करुणानिधि करतार परम गुरु, दरशण परतिख आले॥ श्री० ॥ २ ॥ केसर चंदन अगर कुंकुम, श्रीफल मोदक सोहे, भेट करी गुरु आगल हरखी, पाय परत मन मोहे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ महियल में विख्यात सकल गुरु, महिमा घत सहाई, तिमिया रन में तुमही पिलायो, ओपमा ऐसी पाई ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिहा २ थान बिराजे सद्गुरु, तिहा अतुली बल गाजे, श्री जिन हर्ष सूरि सानिध कर, सरवरता सुरा काजे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ इति पदम ॥

पुनः राग प्रभाती ।

कुशल करण गुरु कुशल सूरीश्वर, साचा सद्गुरु मेरा रे ॥ कु० ॥ टेर ॥ सेवक जन सानिध गुरु समरया, विघन हरण तुम नेरा रे ॥ कु० ॥ १ ॥ श्री जिन चंद सूरिंद पटधारी, सूरि सकल शिर सेहरा रे, निरमल कीरति जग गुरु तेरी, जैसा चंद उजेरा रे ॥ कु० ॥ २ ॥ मात तात जग तू ही परम गुरु, तू साहिब सुख केरा रे, तुम सम देव नहीं कोउ जगमें, कहन सकू गुण तेरा रे ॥ कु० ॥ ३ ॥ कुमति विडारन, सुमति वधारन, वारण विखमी वेरा रे, श्री जिन हर्ष गुरु चरण प्रसादे, प्रति दिन शुभ वर तेरा रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

कुशल करो रे महाराज कुशल गुरु ॥ कु० ॥ टेर ॥ सेवक ऊपर करुणा करके, दीजे सुख समाज ॥ कु० ॥ १ ॥ आधि व्याधि

श्ररु विपत व्यथा गर, दूर करो गुरु राज ॥ कु० ॥ २ ॥ आपद उदधि सू पार उतारो, राखो मेरी लाज ॥ कु०॥ ३ ॥ संकट विकट निकट नहीं आवे, समरण श्री गुरु राज॥ कु० ॥ ४ ॥ तुम गुण नाम जिहाज जगत में, अशुभ हरण शिव काज ॥ कु० ॥ ५ ॥ अभय सदा सुखदाई सद्गुरु, सब देवन सिरताज॥ कु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग विहाग ।

मोकू शरण तिहारा कुशल गुरु ॥ मो०॥ टेर॥ सुपनांतर सोवत, निश दिन जागत, चरण कमलु आधारा ॥ कु० ॥ मो० ॥१॥ बाट घाट रिछपाल सदाई, आपद विघन निवारा ॥ कु० ॥ मो० ॥ दहदिस दीपे महिमा जाकी, परतिख सकल ससारा ॥ कु० ॥ मो० ॥ २ ॥ धन हीना कू धन को दाता, आपे बहु परिवारा, सद्गुरु गुण गावे सुख दायक, श्रीजिन हर्ष अपारा ॥ कु० ॥ मो० ३ ॥ इति पदम् ॥

राग बंगालो धाटो ।

आसा सफल फली, मैं पायो परमानंद ॥ आ० ॥ टेर ॥ श्रीजिन कुशल सूरीसरूरे, देवा सिर हरदेव, पुहवी माहे परगडोरे संघ करे नित सेव ॥ आ० ॥ १ ॥ हम घरी मन हरखियोरे, दीठे दीन दयाल, दु ख दोहग दूरे गयारे, टाल्या दु ख जंजाल ॥ आ० ॥२॥ ग्यान तणो गुरु आगरूरे, परतिख गग प्रवाह, मन ममता मित्र मेलवेरे, अति आनंद उछाह ॥ आ० ॥३॥

तुम गुण गाता सद्गुरुरे, कहता नावे पार, मगनंत नें तुम मन धार्यारे, जपता जैजैकार ॥ आ० ४ ॥ इति पदम् ॥

देशी फतमलरी ।

गछपति खरतरगछ सिणगार, कीरत भूमंडल कहे ॥ ग० ॥ देखण तुझ दीदार, राजा राणा आगल रहे ॥ ग० ॥ रतन कचोलो विसाल, केसर चंदन घस भलो ॥ ग० ॥ गूथ २ फूल माल, पूजे निर्मल मन करी ॥ ग० ॥२॥ देश बंगाला मझार, थूम झलाहल दीपतो ॥ ग० ॥ परचा पूरण हार, इन कलि काल नें जीपतो ॥ ग० ३ ॥ रहसु तुमारे पाय, दरशन दीजे मोभणी ॥ ग० ॥ पटधर कुशल सूरिंद, महिमा जस जग जागती ॥ ग० ४ ॥ आपे सदा जिनचंद, चरण कमलनी वीनती ॥ ग० ५ ॥ इति पदम् ॥

पुनः फतमलरी देशी ।

सद्गुरु श्रीजिन कुशल सूरिंद, चावो चदपटों धरू ॥स०॥ खरतरगछ राजिंद, विरुद वड़ा अलवेसरू ॥स० ॥१॥ परतिख पुहवी मझार, कीरत थारी कलियुगें ॥ स० ॥ भला भला केईरे भूपाल, आगल ऊभा ओलगे ॥ स० ॥ महिमा नो मंडाण, भाणतणी पर भलहले ॥ स० ॥ जागतो थूभ जेसाण, मेला नित गहमह मिले ॥ स० ॥ ३ ॥ दुखिया सुख दातार, निरधनिया बहु धन दिये ॥ स० ॥ सरणाई साधार, हित वछल मोटे हिये ॥ स० ४ ॥ भलेरे ऊगो सुविहाण, सफल दिवस भाई बीजनो ॥ स० ॥ मिल महाजन मंडाण, रंग लीनो घणो

रीझनो ॥ स० ५ ॥ आडंबर उछरंग, जुगत जुहारया जग गुरु ॥ स० ॥ सु निजर धरज्यो सूरींद, श्रीजिनचंद-गुरु-सुरतरु ॥ स० ६ ॥ इति पद्‌म् ॥

(सांगानेर विराजे) चाल ।

पूजो रे पूजो पूजो, दादे सम देव न दूजोरे, भविया भाव धरीने पूजो ॥ टेर ॥ परतिख आशा पूरे, दादो सकट सगला चूरेरे ॥ भ० ॥ १ ॥ जिनचंद सूरि पटधारी, दादो खरतरगच्छ अधिकारीरे ॥ भ० भा० ॥२॥ समरया सानिधकारी, ये अजब कला गुरु थारीरे ॥ भ० भा० ॥३॥ दोनू गह मन में धारी, कोई आन न खंडे थारीरे ॥ भ० भा० ॥४॥ चंदन केसर भेली, चलि मृगमद माहे रेली रे ॥ भ० भा० ॥५॥ चरण कमल इम चरचो, इन गुरु नो मोटो परचोरे ॥ भ० भा० ॥६॥ पूज्या वंछित पावे, सहु दुनिया ए जस गावेरे ॥ भ० भा० ॥ ७ ॥ धाजेडा कुल चंदो, ए कुशल गुरु चिरनंदोरे ॥ भ० भा० ॥८॥ ग हीज पंचम आरे, सेवक जन ने साधारेरे ॥ भ० भा० ॥९॥ चाकीरे वेला वारे, जे गुरुनो नाम समारेरे ॥ भ० भा० ॥१०॥ संवत अठार तेतीसे, वदि मिगसर तीज जगीसेरे ॥ भ० भा० ॥११॥ धन २ हिम्मत कोठारी, जिन यात्रा कराई सारीरे ॥ भ० भा० ॥१२॥ चौरासी गछ मुनि संगे, गुरु पाय नम्या मनरंगेरे भ० भा० ॥१३॥ दान घणो तिहां दीधो, सहु संघ में ए जस लीधोरे ॥ भ० भा० ॥१४॥ चंदवाचक इम ध्यावे, गुरु दादो, चढते दावेरे ॥ भ० भा० ॥१५॥ इति पद्‌म् ॥

कलश।

रिगद् जिनेसर सो जयो, मगल केलि निवास, वासव वंदित पाय कमल, नग मगु पूरे आस ॥१॥ चाल ॥ चद कुलां वर पूनम चद मदो श्री जिन कुशल मुणींद, नाम मत्र जसु महिमा निवास, जो समरे तसु पूरे आस ॥ २ ॥ मरुमडण समियाणो गाम, धन कण कचन अति अभिराम. जिहा वसे जिल्हागर मत्रि, जैतसिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरमे सीसे जन्म, रैताले गिरि सयम रम्म, पाटण सतोनरे तसु पाट, नत्यासि ये जसु स्वर्ग वाट ॥ ४ ॥ भूमडल स्वर्ग पायाल, सचराचर जग इग पतिकाल, गुरु मताप नवि माने सोय, मेवाविनय ने दीठो होय ॥ ५ ॥ निरधन लहे धन धान्य सुवन, पुण्य हीन पामे बहु पुन, असुखी पामे सुख सतान, एकमना धरता गुरु ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सब टले, श्रेय शाति सुख सपति मिले, आधि व्याधि चिन्ता सताप, सहु छडे नवि गडे व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि लागे तिहा, गुरु दरसण उत्कठा जिहा, सेवता सुरतरु नी छाह, निश्चय दालिद्र मेले वाह ॥ ८ ॥ विस विस हर विसमें नर नाह, भूत मेत ग्रह वितर राह, गुरु नामें जे न करे पीड, भाजे भावठ भव भय भीड़ ॥ ९ ॥ रोग सोग सब नासे दूर, अधकार जिम ऊगे सूर, मूरख फीटी पंडित थाय, गुरु पसाय दु ख दूर पलाय ॥ १० ॥ दिन २ जिन शासन उद्योत, जिहा अछे भव सायर पोत, सो सद्गुरुजी मैं भेट्या आज, रलिय रग सहु सीधा काज ॥ ११ ॥ उलालो अज घर अगण सुरतरु फलियो, चिंतामणि कर कमले मिलियो, उदयो परमानद

करे, आज दीट में घनें गिणियो, जुग पवरागमजों मे थुणियों, चद्र गच्छ महिमा निलोए ॥ १२ ॥ काई करो पूर्वापति सेवा, काई मनावो देवी देवा, चिन्ता आणो काई मने, वार २ ये कवित्त भणीजे, श्री जिन कुशल सूरि सम रीजे, सरे काज आयास विना ॥ १३ ॥ सवत् चवद इक्यासी बरसे, मुलक वाहन परसर विन हरसे, अजिय जिनेसर पर भवनो, कियो कवित्त ये मगल कारो, विघन हरण बहु पाप निवारन, कोई मत सशय धरो मने ॥१४॥ दिन २ सेवे सुर नर राया, श्री जिन कुशल मुनीश्वर पाया, जय सागर उवझाय थुणे, इम जे सदगुरु गुण आनदे, ऋद्धि समृद्धे सोचिर नदे, मन वछित फल सुफल हुवोए ॥१५॥ इति पदम् ॥

दादोजी परतिख देवता, दादोजी देश दिवाण, म्हारा सद्गुर परतिख जस जग परगडो, बाचे सहुण्व राण ॥ मारा० ॥१॥ वाद घाट सकट हरे, तारे जलधि जिहाज ॥ म्हा० ॥ ऋद्धि वृद्धि सुख सपदा, समरण श्री गुरु राज ॥ म्हा० ॥ २ ॥ तुमें अमीणा साहिबा, अमे तुमीणा दास ॥ म्हा० ॥ कृपयाहिवन रहे कदा, ईहक मूरख आस म्हा० ॥ ॥ ३ ॥ नगर २ गाम गाम में, थिर कर ते गुरु थान ॥म्हा०॥ पूजे अरचे पादुका, नर नारी नय राण ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ शोभे सूरत विदरे, गुणधारी गच्छराज ॥ म्हा० ॥ श्री जिन लाभ सूरीशना, सारेज्यो सगला काज ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

जसु हृदय कमल गुर नाम वसे, तसु सरसति वदन सदा उलसे, वरसाते हाथ लिये भरतीं, जपिये श्री जिन दत्त सूरि यती

॥ टेर ॥१॥ संवत् ग्यारे सौ वरसे, वर्त्तिले जनम्या शुभ दिवसे, जसु वाछग चाह डदे मुहर्ती ॥ ज० ॥ २ ॥ इगताले शुभ व्रत ग्रहण कियो, गुण हतेर जिन सूरि मन लियो, थाप्पा जिन वल्लभ पाट पती ॥ ज० ॥३॥ लिख दीधो अबा अवड करे, दासानुदास सोवा अक्षर, वाच्यो पद जुग वर निज उगती ॥ ज० ॥४॥ जोगणी जिन थभी नें राखी, वरसात लिया गुरु सहु साखी, थभी वलि विजली भुय पड़ती ॥ ज० ॥ ५ ॥ दिल्ली ने भर अथ उज्जयणी, अजमेर वसे चोसठ जोगणी, मन में अभिमाने जें वहती ॥ ज० ॥ ६ ॥ प्रति बोध्या श्रावक लाख गिणे, वस कीधा सुर नर नार निये, तसु वरस गुण्यासी श्रायु वरती ॥ ज० ॥७॥ संवत् बार इग्यारम में, श्रासाढा जाणे शुभ दिवसे, शुभ ध्यान थई सुर लोक गती ॥ ज० ॥ ८ ॥ अजमेरे सद्गुरु ना पगला, समरथ जे श्राय नमे सगला, खेवे धूप करे श्रारती॥ ज० ॥ ॥ ९ ॥ न्हाही निर्मल धोती पहरी, घस केसर चंदन अति सखरी, शुभ भवते पूज करो सुमती ॥ ज० ॥ १० ॥ सुर किन्नर नर नारी राया, श्रावी लागे जेहने पाया, जसु श्राणार माने महियपती ॥ ज० ॥ ११ ॥ परदेश भमता काई फिरो, घर बैठा सद्गुरु ने समरो, जेहने न हुवे दोषी कुमती ॥ जे० ॥ १२ ॥ जिन दत्त सूरि जीना गुण गावे, तसु विघन व्यथा दूरे जावे, पावें जयचद दौलत चढती ॥ ज० ॥ १३ ॥ इति पदम् ॥

दौलत थाय, बाकी रे वेला न पडे काय,
पूजो दादा कुशल सूरिंद, पूजो मन रली ॥

टेर ॥ दादोजी तुरत गभावे पीड, दादोजी भांजे सगलो भीड़ ॥ पूजो म० ॥ १ ॥ केसर चन्दन अगर कपूर, पूजता दादाजी होवे हजूर ॥ पू० ॥ २ ॥ पूनम २ ने सोमवार, आय जुड़े दादे दरबार ॥ पू० ॥ छुट माग्या वरसावे मेह, दादोजी साथे तूटा नेह ॥ पू० ॥ ३ ॥ दादोजी गज नगर दीवान, पूज्या बोल चढे परमाण ॥पू०॥ दादेजी रा सेवक होय, तेहने गज न सके कोय ॥ पू० ॥ ४ ॥ जिन रंग सूरि कहे कर जोड, कवण करे म्हारा दादेजी री होड ॥ पू० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग धमाल घाटो ।

चलो सखी पूजण जइये, जिन दत्त सूरि गुरु राज॥च०॥ टेर ॥ हिये भाव अधिक धरी ने, पूजो पूजो शुभ काज ॥ च० ॥ १ ॥ सहु सघ साथी आवे, सब सामग्री साज ॥ च० ॥२॥ पूजा कर अष्ट प्रकारी, शुभ भावना पाज ॥ च० ॥ ३ ॥ बोहिथरा समरण करते, तारी तुरत जिहाज ॥ च० ॥ ४ ॥ दरशण सुगणांने दीजे, सद्गुरु गरीब निवाज ॥ च० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

(सुणियो वाला राय सदाशिव) लावणी चाल ।

कुशल गुरुजी अरज सुणीजे, दरशण दीजे महाराजा, दास पै महिर करो सद्गुरुजी, मन वांछित होवे ताजा ॥ कु० ॥१॥ सोमवार ने पूनम दिवसे, दरशण कू श्री सघ आवे, एक वार सद्गुरु ने समरे, मन चित्या फल वे पावे ॥ कु० ॥ २ ॥ पुण्यवान परतापचन्द के, पुत्र पाच पाडव कीना, श्री सद्गुरु की

भक्ति करके, नर नारी लाहो लीना ॥ कु० ॥ ३ ॥ लगडा लूला परो पागला, कोढी शरणे आन पडे, एक वार सद्गुर ने समरे, कचन सी काया सुधरे ॥ कु० ॥ ४ ॥ डाकण वगतर भूत-भयङ्कर, एवी, वाथन आन पडे उन वेला सद्गुरु ने समरे, कदेयन उनका रोम खिरे ॥ कु० ॥ ५ ॥ जेसलमेर के अमर सागर मे, थूभज खूब बण्या भारी, खेम सिद्ध मुनि अगरचन्द ने, करी लावणी शुभकारी ॥ कु० ॥ ६ ॥ इति पद्मम् ॥

(नीदड़ली रुठीली चैरण हो रही) देशी ।

श्री जिन कुशल सूरीसरू, सहु देवा सिर ताज हो, सद्गुरु मोरा, इण कलियुग सुरतरु सारिखा, खरतरगछ महाराज हो, स० श्री० ॥ १ ॥ जिहा तिहा तुम परचा घणा, पामन सके कोई पार हो ॥ स० ॥ तुरत सुजाणसिंह भूप ने, कीधो बहु उपगार हो ॥ स० श्री० ॥२॥ भक्त गरीब निवाज छो, जिन शासन दीवान हो ॥ स० ॥ सकट तिमिर गमाइवा, तेजें झल हल भाण हो ॥ स० श्री० ॥ ३ ॥ गुण गिरवा गुरु रायना, रामरण थी जिन वृद हो ॥ स० ॥ हय गय सुत धन कामनी, पामें मन आनद हो ॥ स० श्री० ॥ ४ ॥ थूभ विराजे गुरु-राय नो, सुथिर गडाले सुरा छाय हो ॥ स० ॥ वाचक पुण्य शील राजना, प्रहशम प्रणमें पाय हो ॥ स० श्री० ॥ ५ ॥ इति पद्मम् ॥

(राणपुरो रलिया मणो रे लाल) चाल ।

श्री जिनदत्त सूरीसरू रे लो, जिन शासन दीवान गुणकारी रे, भेटो भवि भावे मुदारे लो, खरतरगछ राजान म्हारा वाला

रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ गुरु वारे सुर पद लह्यो रे लो, अजयमेरु थिर थान ॥ म्हारा० ॥ वंछित कारज साधवा रे लो, सेवे सफल निहार ॥ म्हा० श्री० ॥ २ ॥ यात्री जन आवे घणा रे लो, परतिख परचो पेख ॥ म्हा० ॥ आस विलूधा मानवी रे लो, पूरे आश अशेष ॥ म्हा० श्री० ॥ ३ ॥ चौसठ वस करी जोगणी रे लो, बालि वस बावन वीर ॥ म्हा० ॥ सानिधकारी सेवका रे लो, राखो सुगुन सधीर ॥ म्हा० श्री० ॥ ४ ॥ दिवस बहु मनमें हुती रे लो, भेटवा श्री गुरुराय ॥ म्हा० ॥ ते आम्या सफली थई रे लो, भेट्या श्री गुरु पाय ॥ म्हा० श्री० ॥ ५ ॥ आधि व्याधि आतापना रे लो, पिंड तणी हर पीड़ ॥ म्हा० ॥ दुःख दोहग दूरे हरो रे लो, भाजो भावठ भीड़ ॥ म्हा० ॥६॥ लाभ थानू इण गच्छनी रे लो, उदयकर नयण निहाल ॥ म्हा० ॥ पोता वटपेते राखस्यो रे लो, तो करस्यो सभाल ॥ म्हा० श्री० ॥ ७ ॥ जे बिलम्या तुम केडले रे लो, ते किम मूके मेड ॥ म्हा० ॥ रूठडो वालम मनाविये रे लो, द्यो दिलासा तेड ॥ म्हा० श्री० ॥ ८ ॥ तुम्ह जेहवा धणी मूकने रे लो, केहने कहिये जाय ॥ म्हा० ॥ कहिवानो वल था लगे रे लो, करिवो श्री गुरु पाय ॥ म्हा० श्री० ॥ ९ ॥ तिल एक सुनिजर जो हुवे रे लो, तो सरे वंछित कोड ॥ म्हा० ॥ दुरमन जन दूर हरो रे लो, अम्हची तुम लग दोड ॥ म्हा० श्री० ॥ १० ॥ मात तात बंधव तूं ही रे लो, तूं साचो गुरु देव ॥ म्हा० ॥ भोला ढाला बालका रे लो, चरण शरण नित मेव ॥ म्हा० श्री० ॥ ११ ॥ विनय सभी इम विनवे रे लो, श्री जिन

हर्ष सूरीश ॥ म्हा०॥ महिर निजर मुझ ऊपर रे लो, धरज्यो विसवा वीस ॥ म्हा० ॥ श्री० ॥१२॥ सवत् अठार सड़सठ में रे लो, वदि फागण शुभ नूर ॥ म्हा० ॥ युक्ति सहित यात्रा करी रे लो, चढते पुण्य पड्डूर ॥ म्हा० ॥ श्री० ॥१३॥ इति पदम् ॥

(नमो रे नमो सेत्रुंज गिरि रे) चाल देशी ।

श्री जिन कुशल सूरीसरू रे, राजे श्री महाराज रे, तुझ गुण सामल मन ऊमह्यो रे, दरशण देखण काज रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ दरशण द्यो महाराज जी रे, थारा गुण अनेक रे, तुझ सम दूजो कोई नहीं रे, कुशल करो सुविवेक रे ॥ श्री० ॥२॥ मिल २ बहुला मानवी रे, जात्र करे सुरसकार रे, नीर पखाली पगला विन्हे रे, पूजे विविध प्रकार रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ आगल ऊमा ओलगे रे, गावे गीत रसाल रे, मन बच काया ये करी रे, चरणनमें तिहु काल रे,॥ श्री० ॥ ४ ॥ सवत् अठार गुण-चास मे रे, कार्तिक शुक्ल उदार रे, सघ सहित यात्रा करी रे, पूनम दिन सोमवार रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आस धरी हू आवियो रे, दोलत द्यो राजान रे, धरमचद इम वीनवे रे, यात्र चढी परमाण रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

राग जयतसिरी ।

सहाई मेरे श्री जिन कुशल गुरू ॥ टेर ॥ कुशल करण कलि माहे प्रगटयो, खरतरगछ वरू ॥ स० ॥ १ ॥ बावनो चदन मृगमद भेली, पूजो प्रेम भरू ॥ स० ॥ चिता चूरण

विघन विडारण, दालिद्र दूर हरू ॥ स० ॥ २ ॥ दिन २ साहिब चढते थारे, ध्यावो ध्यान धरू ॥ स० ॥ बाजे जेहना जसना बाजा, ठावी ठामे जरू ॥ स० ॥ ३ ॥ सवत् अठारसमें अड सठे, मिगसर मास थिरू, मघ सहित श्री सद्गुरु भेटे, श्री जिन हर्ष सरू ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गडाले चरण नमता, तूठो कल्पतरू ॥ स० ॥ पाठक श्री विद्या हेम गणि ने, उदय रतन वरू ॥ स० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

दादा पूर हो वंछित मोरा, वलि २ करू रे निहोरा ॥ दादा पू० ॥ टेर ॥ साचो साहिब जग में जाणी, चरण नमूं तिल तोरा ॥ दादा० ॥ १ ॥ अमर सरे गुरु महिमा जागी, तो सम कोइयन तोले, बाल गोपाल सबे मन हरख्या, श्री गुरु ना गुण बोले ॥ दादा० ॥ २ ॥ वाट घाट तू ही साधारे, चोर चक्र भय वारे, माता जिम बालक प्रतिपाले, तिम तू तोरे सारे ॥ दादा० ॥ ३ ॥ लखमी लीला संपति सोहे, घर भवता के होवे, गुण विनय कहे साहिब साचो, सोम निजर कर जोवे ॥ दादा० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

देशीनी चाल ।

हेली हे सद्गुरु जात मनास्या हे, हेली सद्गुरु वेग पधास्या हे, हेली सद्गुरु पूजरचास्या हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु गुण जस गास्या हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु म्हारो बड भागी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु सुगुण सोभागी हे ॥ हे० ॥ सद्गुरु विरद बडाला हे ॥ हे० ॥

सद्गुरु म्हारो रिछपाला है ॥ हे० ॥ सद्गुरु निरभय थाटे है ॥ हे० ॥ सदगुर दुग्मन दाटे है ॥ है० ॥ सद्गुरु म्हारो रख नामी है ॥ हे० ॥ सद्गुरु अंतर जामी है ॥ हे० ॥ सद्गुरु सुखल सुरिंदा है ॥ है० ॥ सद्गुरु मेवे सुरवृन्दा है ॥ हे० ॥ सद्गुरु म्हारो वरदाई है ॥ है० ॥ सद्गुरु हर्ष सदाई है ॥ हे० ॥
इति पदम् ॥

जी हो लाभपुरे तिम आगरे, दादा महिमा मडोर मभार, जी हो रागानेर अमरसरे, दादा सेवक जन सुखकार ॥ सु० ॥ ६ ॥ जी हो इम पुर २ थूभ प्रणमिये, दादा नासे सहु विखवाद, जी हो राज समुद्र इम वीनवे, दादा समरया दीजो साद ॥ सु० ॥ १० ॥ इति पदम् ॥

देशी ।

कीजे छे कर जोड ने दादाजी, वीनतड़ी निगताय हो, सद्गुरुजी, अरज मोरी सामलो दादाजी, राज निगर पिण आगले दादाजी, अतर कहीय न जाय हो ॥ सद्गु० अ० ॥ १ ॥ थारे तो सेवक घणा दादाजी, म्हारे थे गुरु राय हो ॥ सद्० अ० ॥ तुम्हें अम्हादींश की जो मया, दादाजी, ज्ञान निजर सुपसाय हो ॥ स० अ० ॥ २ ॥ आदि युगादि तणा अथे, दादाजी, मगट थारा परभाव हो ॥ स० ॥ गिणती सू आवे गिणया, दादाजी, जिम जल कण दरियाव हो ॥ स० अ० ॥ ३ ॥ म्हारे समरण राज नो, दादाजी, थारो हीज आधार हो ॥ स० ॥ म्हेतो थारा ओलगू, दादाजी, थे म्हारा करतार हो ॥ स० अ० ॥ ४ ॥ इण गच्छ में वरते उदो, दादाजी, थोक भला भला थाय हो ॥ स० ॥ सोसगलाई राजरा, दादाजी, सुनिजर रा गहगाट हो ॥ स० अ० ॥ ५ ॥ जिण चेला दरशण हुवे, दादाजी, कीजे समरण ध्यान हो ॥ स० ॥ नयण हसे तन उल्लसे, दादाजी, विकसे मन असमान हो ॥ स० अ० ॥ ६ ॥ धन २ दिन भाई बीजनो, दादाजी, आयो भाग्य प्रमाण हो ॥ स० ॥ मल आटवर भेटिया, दादाजी,

खरतरगच्छ दीवान हो ॥ स० श्र० ॥ ७ ॥ पग २ में नाथ करो, दादाजी रात दिवस इक रंग हो ॥ स० ॥ इ धू मेरस राउलो, दादाजी, फदेयन छोड़ सग हो ॥ स० श्र० ॥ ८ ॥ श्री जिन कुशल सूरीसरू दादाजी, जिन चन्द्र सूरि पटधार हो ॥ स० ॥ श्री जिन लाभ सुरिंद ने दादाजी, महिर निजर अवधार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

राग झालरा।

पूजवा चालो रे सुगुरु ने, पूजवा चा० ॥ टेर ॥ सोल श्रृंगार सझी सहु वनिता, टोला मिल २ चाली, उज्जल थाल भरी मुक्ताफल, सुन्दर हाथे झाली ॥ सु० ॥ १ ॥ गीत गावती बहु गुणवती, सद्गुर चरणे आवे, कनक कचोली केसर घोली, चरणारी पूज रचावे ॥ सु० ॥ २ ॥ हियड़े उल्लसती नाटिक करती, ठम ठम पाय ठमकावे, पाच सात मिल सखिवी वाला, लुलुलुल शीश नमावे ॥ सु० ॥ ३ ॥ मुखरो मटको हाथा फेरो लटको, न्यारडली अणियाली, हाव भाव कर सहु भवि जनना, चित चोरे मतवाली ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री जिन कुशल सूरिंद के आगे, भावना इण विध भावे ॥ सन सारियन की भक्ति देखके, खेम रतन गुण गावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

देशी हरियां मन लागो।

अलवट देश सुहावणो, गाम सुहावे माल रे, सद्गुरु सुण मेरा, तिहा तू आप विराजियो, खरतरगच्छ रखवाल रे ॥ स० ॥ १ ॥ अकल कला कांई ताहरी, सो सम अवरन कोय रे ॥

स० ॥ ताहरी कीरत शाम्भली, मोमन अचरज होय रे ॥ स० ॥ २ ॥ परतिम्न परचा पामिनो, श्री बीकाण नरेश रे ॥ स० ॥ एतो कीरती ताहरी, जागी देश विदेश रे ॥ स० ॥ ३ ॥ विषमी बेला वार तु, तू अमचो आधार रे ॥ स० ॥ सुजाणसिंह नर राज ने, अरि भय लियो उतार रे ॥ स० ॥ ४ ॥ अम्हे तुमीणा ओलगु, तू अमचो सिरदार रे, वरदाई तू सेवका, परचो दे निरधार रे ॥ स० ॥ ५ ॥ भाग्य मले तू भेटियो, सुथिर गङ्गाले थान रे ॥ स० ॥ हिव अम्ह पर कीजे मया, दीजे बंछित दान रे ॥ स० ॥ ६ ॥ दादाजी दीनदयाल तू, देवा सिर हर देव रे, निज सेवक जाणी करी, दीजो पद रज सेवरे ॥ स० ॥ ७ ॥ यात्र सफल जिन भक्ति नी, माने ज्यों गुरु राय रे ॥ स० ॥ बलि महिमा ए बीनती, करो मुझ सदा सहाय रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

नइया मेरी दादा तुम ही खेवइया, तुमारे नाम बेड़ा पार लघइआ ॥ न० ॥ गहरी नदिया नाव पुराणी, जोर हीवाय चलइया ॥ न० ॥ २ ॥ उतार वार कछु सुकृत नाही, तुमरो ही नाम जपइया ॥ न० ॥ ३ ॥ संकट देख सेवक कू सद्गुरु, देरावर तें अइया ॥ न० ॥ ४ ॥ संकट दूर हरो इक छिनमें तुरतही पार लघइया ॥ न० ॥ ५ ॥ सेवक सरणे आयो तुमारे, तुम चरणन कू गहिया ॥ न० ॥ ६ ॥ जाव जीव ए चरण न छोड़, तू मेरा सुख दइया ॥ न० ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

होरी ।

सद्गुरु का ध्यान हृदय मेरे ॥ स० ॥ श्री जिन दत्त सूरि-

धर साहिब, पद पंकज प्रणमू तेरे ॥ स० ॥ १ ॥ श्री जिन वल्लभ सूरि पटोधर, करणा कर राज जग केरे ॥ स० ॥ २ ॥ सब सज्जन सानिधकारी, दुःख लोहन दूरे गेरे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ सुण के शुद्ध उपदेश गुरुर को, बूझे नारी जन बहुतेरे ॥ स० ॥ ४ ॥ वैमानिक सुर पदवी पाई परतिख प्रभु विचमी येरे ॥ स० ॥ ५ ॥ कहत क्षमा कल्याण अहोनिशि, सुनिजर धरियो गुरु मेरे ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम ॥

पुनः होरी ।

बलिहारी हूं कुशल सूरीश्वर की बलि० ॥ सेवक जन मन वंछित पूरण, सुरगवि सुरमणि सुर तरु की ॥ ब० ॥ १ ॥ सकट विकट तिमिर भय हरने, तरण तेज ना सर कर की ॥ ब० ॥ २ ॥ जिन शासन नित २ उजवालन, श्री जिनचन्द्र पटोधर की ॥ ब० ॥ ३ ॥ सुन्दर खरतरगण गगणांगण, वर शिवचन्द्र शोभा कर री ॥ ब० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

ढाल बिछिये की ।

म्हरे लाला श्री जिन दत्त सूरीश्वरू, दादो महरू नाम ते सुर रे लाला, भावधरी पूजे सदा, घस कुंकुम मेल कपूर रे, लाला श्री० ॥ १ ॥ जीती चोसठ जोगणी, बस कीना बावन बीर रे लाला, नव चले करि साधिया, जिन पच नदी पच पीर रे लाला श्री० ॥ २ ॥ प्रतिबोध्या श्रावक श्राविका, मिल लाख सवा सह देश रे लाला. जैन धरम दीपाविओ, खरतरगच्छ कमल दिनेश

रे लाला श्री० ॥ ३ ॥ हिंगा टानी जीवनी, जयसिंध सवा लग देश रे लाला, दानव मानव देवता, माने सहु आण नरेश रे लाला श्री० ॥ ४ ॥ जुग प्रधान पद जेहनें, देवता परगट हुय दीध, रे लाला, पुण्य पुण्य जग पर गजे, जिन करणी उज्वल कीध रे लाला श्री० ॥ ५ ॥ कामित दायक कलियुगे, साचो सुर तर अवतार रे लाला, समरत स्याम घटा करी, महियल वरसे जलधार रे लाला श्री० ॥ ६ ॥ आज विषम पचम आरे, जेहना मोटा अवदात रे लाला, नागे न पड़े बीजली, न छुवे जल छिद्र तिल मात रे लाला श्री० ॥ ७ ॥ सवत बार इग्यारेंसे, आसाढ शुक्ल पक्ष जाण रे लाला, इग्यारस सद्गुरु तणो, अजेमेरु नगर निरमाण रे लाला श्री० ॥ ८ ॥ मदिर थुंगी शुभ ऊपरे, गुरु युग्म निजर निहाल रे लाला, राज हरस कर जोड नें, वंदे मन शुद्ध त्रण काल रे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इति पद्यम् ॥

राग ।

जय २ जग जन दयाल सद्गुरु महिमा धारी ॥ जय० ॥ टेर ॥ ओस विमल वश मान, समरा लज साहजान, रासल पितु देवी मात, देहण सुखकारी ॥ ज० ॥ १ ॥ कोटिक गण कुल चद सार, खरतर शुभ बिरुद धार, नायक जिन चन्द सूरि महिमा सुनि भारी ॥ ज० ॥ २ ॥ जगम युग वर प्रधान, श्री जिन उप-पद बखान, दत्त सूरि पाट उदय, गिरि रवि अवतारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ किंकर सम अमर ग्रास, सेवत कृत निकट वास, दिल्ली-पति निपट दास, ध्यावत नर नारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ दोलत घर

गरन भूर, सकट दा करा भूर, प्रणमत नित मुनि कपूर, दर-
गा बलिहारी ॥ जय० ॥ ५ ॥

अथ संस्कृत गुरुदेव स्तुति ।

दासानुदासा इव सर्वदेवा, यदीयपादाब्जतले लुठंति ॥
मरुस्थलीकल्पतरुः स जीयात्, युगप्रधानो जिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥
चिन्तामणिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्ति भव्याः किमु कामगव्या ॥
प्रसीदतः श्री जिनदत्त सूरेः, सर्वेपदा हन्ति पदे प्रविष्टाः ॥ २ ॥
नो योगी न च योगिनी न च धराधीशश्च नो शाकिनी, नो वेताल
पिशाचराक्षसगणा, नो रोग शोको भयम् ॥ नो मारी न च विग्रह
प्रमुनय भीमा महादुःखके, जय जय श्री जिनदत्तसूरिसुगुरो
र्नामाक्षर ध्यायति ॥ ३ ॥

अथ श्री जिनदत्तगुरोरष्टकम् ।

यो दृष्ट स्मरण गतोपि सततं दृष्टिं मनके संमुखे, भक्ते
भक्तिपर नुतोपि कुरुते सर्वार्थसंपादनम् ॥ दुःखार्त्त तमुते स्पदानि
दुर्मति कारणयवारानिधि, स श्रीमान् जिनदत्तसूरियतादस्मान् स्वप
दाश्रितान् ॥ १ ॥ तव उदितानि नामान्यप्यत्र पावयन्ति, ददति
परमशान्ति दिव्यभोगान् जनेभ्य ॥ जिनपदयुततस्मादादरात् दत्त
सूरे, रुचिरवचनपुष्पैरर्चनं ते करोमि ॥ २ ॥ अशुभमतिरमतमहासे-
सक्त, मततमनार्यविशालभावमच ॥ अनुदिनकृतपापयप्रयुक्त
पुरुषपशुर्यदिमादृशोऽर्चयेत्वाम् ॥३॥ विमलमतिरमतलर प्रशान्त,
शुचिचरितोजिनसत्वमिरभूत ॥ प्रियहितवचनस्तव प्रसादाद्भवति,
भवतिजनोजिनन्दनगुर्विर्य ॥ ४ ॥ सकलशीलगुणाबुधिरापद,,

भरं कृतमुपसुर ॥ करुणानिलय मुनिदु म्हर, जिनदत्तगुरु प्रणमामि परम् ॥७॥ यस्वाच्छगमत्रिसुमुम्बद कुनआह्ददेशम प्रभुम् ॥ विगत व्यसन हितद समुदा, मुनिगणमहं प्रणमामि तं ॥ ८ ॥ श्रीमच्छ्री जिनदत्तसूरिसुगुरो कल्याणमालीकरो, निर्व्योर्गाधे गुरु द्धिनलधे भौपानिधेश्चिन्निधे ॥ सत्यूर्णविधिना मगर्धमुनिना लब्धगुरो रष्टक, ये ध्यायन्ति नरा भनां सतत चाणाक्य श्रीगरा ॥ ९ ॥ इत्यष्टकम् ॥

अथ कुशल गुरोरष्टकम् ।

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा, प्रसरदेश्वरचर्चितपद्मयुगम ॥ गस्तु गुरु यगङ्ग नयमण्डिन, कुशलसूरिगुरु प्रयत स्तुवे ॥१॥ पनि भ गलि नियद्धरदायिनो, भुवि भवान गुगुरु यपिनाश्रित ॥ गुरुमार्गयेन्ऽस्मिन् गतो भवेत, निगपरोऽलज्ञाचयपद्मे ॥ २ ॥ पटिनश्च इमगा कुल धर्मनि, प्रवरसाग्ज्यसमा वितमभा ॥ मम हृदि स्मरण तव सर्वदा, भवतु नाम जपस्तुगुरो मुना ॥३॥ विरट सङ्कट कोटिपु करपता, गतनु- भूताविपमानमनाम्मा ॥ सुगुरुराज तवेप्सितदर्शनाद्भुभवनिम गोरचं मूर्णलाम् ॥ ४ ॥ नृपसभासुयशोवहुमानता, निविधमानजनेजयमाप्तता। सुपरिवारसुशिष्यपरम्परा, तवगुणे गुरुमाम्गुणनतरा ॥५॥ न खलु राजभय न रणाद्भय, न खलु रोगभय न विपद्भय ॥ न खलु अग्निभय न रिपोर्भयं, भवति भक्तिभृता नरभूपृताम् ॥६॥ अपर पूर्वगुरोर्दिश मंडले मरुसुमल्लिनासिद्धिपुनगले ॥ मगधमालुकनेप्वापिगुर्जरे, प्रतिपुर महिमा तव गीयते ॥ ७ ॥ मम मनोरथ कल्पलतामुना, कुशलसूरि गुरो फलिताधुना ॥ प्रवरभाग्यरत्नेन मयानया, यदमूनन्ददतेतन दर्शनम् ॥८॥ शशिधरस्मरनागरमद्धिवि प्रमितविक्रमभूपतिसंवति ॥ समय

सुन्दरभावित, नमस्कृत, कुशलसूरिगुरुभ्रातश्रये ॥ ८ ॥ इति समय सुंदरोपाध्यायरचित कुशल गुरोरष्टकम् ॥

कुशल गुरोर्द्वितीयाऽष्टकम् ।

सुत सर्वामपद्यमेति पदयोर्यन्ययदले, विनिद्रावागीशा हृदय कमले सरिदधिकम् ॥ निरागं मर्वांगेप्वपि च भगवद्भिरनिश समृद्धयर्थं वदे कुशलगुरुदेवस्य चरणौ ॥ १ ॥ निशिन्यापाधीन निशग्निमधीनौ समयिना, पर वाणीलक्ष्मीनिलयमपितद्दाननिपुणौ ॥ सदा यो वर्तेते जयइव सुधाजोजयुगल, समृद्धयर्थं च० ॥२॥ निपतौ तौ मेत्ता सरसिरुहयोर्यो मृदुलगौ, जपापुष्पाभासौ किसलयजिताशेषमहसौ ॥ रासक्लेश्यालक्ष्य प्रकटितपरा श्रीसदनयौ, समृद्धयर्थं च० ॥३॥ सुरेन्द्र श्वरस्वेन्य कतिपयदिनैर्य फलामृयो, ध्वाचितेन्द्राक्रियमपिपरिद्वायपगमाम् ॥ सुरङ्गल्पदनोपामतद्भरिवुधौ यौ भुवि गतौ, समृद्धयर्थं च० ॥४॥ सुरेशराचन्ते परमगुरुधर्मोपदिशत, सन्नाम पीतासृतरसतराशेरपिगिर ॥ शृता यस्यश्रेय श्रियमपिदिशतिस्थिरधिया, समृद्धयर्थं च० ॥५॥ निधि सर्वश्रीणा शनधिक्रणौ सर्वविपदा, मृत्स्निग्धौ शोणावुपचितनखौ गूढगुटिनौ॥ समानौ प्रोत्तुग प्रपदपटशाखा वितासितौ, समृद्धयर्थं च० ॥ ६ ॥ ययोर्वासूते धनसुरधरा धामरमणि, शरीरारोग्यत्व निनयनयविद्यानिपुणताम् ॥ गुणानौदार्यादीनपितनयतहस्याश्रितनृणां, समृद्धयर्थं च० ॥ ७ ॥ भयकारागारामयसमरपारीन्द्र फणभृत्, महापारावारा द्विरदयनवैश्वानरभवम् ॥ डाकिन्यांद्युग्रग्रहगरलजल्पस्नमृताल, समृद्धयर्थं च० ॥८॥ इत्थं श्रीजिनपद्मसूरिरचितः स्त्यार्हः सद्गुरोः, पुण्यमन्त्रमय मनोज्ञफलदं पापौघविध्वंसनम्॥ भक्त्या यः पठति

भरं इन्दुकुलगुरु ॥ कल्याणनिलयं सुरादि महद, जिनचन्द्रगुरुं प्रणमामि वरम् ॥७॥ वरबोधकमौलिमुनीन्द्र ज्ञानादर्शनदायक प्रभुवर ॥ जिनदत्तं जिनदत्तसुगुरुं मुनिगणमहं प्रणमामि सदा ॥ ८ ॥ श्रीमच्छ्री जिनचन्द्रसूरिसुगुरोः कल्याणकक्षीनगा, [illegible] निधि [illegible] [illegible] ॥ [illegible] सर्वधर्मनिना [illegible] [illegible], [illegible] भवति [illegible] [illegible] ॥ ९ ॥ इत्यष्टकम् ॥

अथ कुशल गुरोरष्टकम् ।

नतनरेश्वरमौलिमणिप्रभा, प्रवरकेशरचर्चितपद्युगम ॥ [illegible] सुस्थगडालयमहितं, कुशलसूरिगुरुं प्रणत स्तुवे ॥१॥ कविन [illegible] क्तिनदन्दायिनो, मुनि महान् सुगुरुर्मनि [illegible] ॥ [illegible] गतो गवन क्रिमपूर्गेईलताचकरूपकें ॥ २ ॥ [illegible] वर्त्तनि, प्रवरसौम्यसमन्वितसद्धनि ॥ मम हृदि [illegible] तव सर्वदा [illegible] नाम [illegible] ॥३॥ विकट सकट कोटिषु [illegible], [illegible] [illegible] ॥ सुगुरुराज [illegible] [illegible] मूर्तताम् ॥ ४ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible], [illegible] ॥५॥ न खलु राजभयं न [illegible], न खलु रोगभयं न [illegible] ॥ न खलु [illegible] रिपोर्भयं, भवति भक्तिभृतां तव [illegible] ॥६॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible], [illegible] महिमा तव गीयते ॥७॥ मम मनोरथ [illegible], [illegible] फलिताद्भुना ॥ [illegible] भवानया, यद [illegible] दर्शनम् [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

सुन्दरभानित नमस्तु ते, कुशलसूरिगुरुर्भवताश्रये ॥ ८ ॥ इति समय सुन्दरोपाध्यायरचित कुशल गुरोरष्टकम् ॥

कुशल गुरोर्द्वितीयाऽष्टकम् ।

गुरु सर्वासपद्ममति पदयोर्यस्य वदने, विनिद्रावाणीशा इव यमले सदिदपिरम् ॥ निराग सर्वाङ्गेष्वपि च भगवद्भक्तिरशि मगृद्धयर्थं वदे कुशलगुरुद्वयस्य चरणौ ॥ १ ॥ निशिम्वापाधीन निशदिनमधीनौ समयिनां, परं वाणीलक्ष्म्योर्निलयमपितद्दानगिगुणौ ॥ सदा यो वर्तेते जयइव सुपाथोजयुगल, समृद्धयर्थं च० ॥२॥ न्निपतौ तौ मेत्रा सरसिरुहयोर्यो मृदुलयो, र्जपापुष्पाभासो किसलयजिनाशेषमहसो ॥ रासक्ते बालकस्य भजतिनपग श्रीसदनयो, समृद्धयर्थं च० ॥३॥ सुरेन्द्र स्यस्येन्द्र श्रतिपयतिनिर्य फलसन्धो, कदाचित्तद्राकश्रियमपिदशिक्षायपरमाम ॥ गुरुतुल्यरक्षोपमनदृशिबुधौ यौ भुवि गतौ, समृद्धयर्थं च० ॥४॥ गुरोराम्बाध ते परमगुरुधर्मोपदिशत , सदाकाम पीतामृतरसवरश्रेरपिगिर ॥ शुता यस्यगेन्य त्रियतपिदिशतिस्थिरधिया, समृद्धयर्थं च० ॥५॥ निधि सर्वश्रीणा गनधिरयौ सर्वविपदा,मृत्युस्निग्धौ शोणातुपचितनखौ मृदुघुटिरा॥ रामानौ प्रोत्तुग प्रपदपदशाखा विलसितौ, समृद्धयर्थं च० ॥ ६ ॥ ययोरर्चायुते धनसुतधरा धामरमणि ,शरीरारोग्यत्व निनयनगरिमा निपुणताम् ॥ गुणानौदार्यादीनपितनयराहम्याश्रितनराः, समृद्धयर्थं च० ॥ ७ ॥ भयकागागारामयसमरपारीन्द्र,फणभृत्, महापारावाग द्विरदवनवैश्वानरभवम् ॥ न डाकिन्याद्युग्रग्रहगरलजत्वेतसमृगत, समृद्धयर्थं च० ॥८॥ इत्थ श्रीजिनपद्मसूरिरचित दिव्याष्टक-सद्गुरो ,पुण्यगनमय मनोजफलदं पापौघविध्वंसनम्॥ भक्त्या य मठति

श्रेयस्यमाज्ञाज्यद प्रभु ॥६॥ तेषामशेषामार्थचे,शभागामापद प्रभु । गेहस्नहन य गुरुं शुद्धध्यानगुणेम्पदा ॥ ७ ॥ जिनकुशलगुरूणां मुदित नन्गु न्गा, धा निजितदर्शी नां गनानिताग पुनाम्॥ प्रातजं परिजा नी या निधेजविवर्यो, स भवति नन्नाय सिद्धिला मीसनाथ ॥८॥ कष्टसङ्कलमह्क मया, ऽपारि नतरगच्छदगद्गुरो ॥ईप्सितप्रद मनरपरपारयन, स्त्मोमसमस्तथ शोभनम् ॥९॥ इतिगुरुस्तुतिगुर्वष्टकम् ॥

श्री घग्घर निसाणी ।

नायक रिध सिद्धा मेवा रिद्धा परतिख सुरतरुकन्दा है, परिवारज थाथे गुणो शशाभे श्राजहदा पुलचन्दा है, नि न ग निरन्कर नेरसपच्छर नर्गासे राम सहरा है, कुल भद्दण जाणो धन्न विहाणो जेलण जयती नन्दा है ॥१॥ तेरे दीनाने भाग्य निशाले भाव दिखावन्दा है, गुरयोग्य निधानी बहु सनमानी स हथपाट दियन्दा है बहु कुरा समप्पे कालदवप्पे श्रीजिनकुशल सूरिन्दा है, सहुलोकन्क अखे इन गुरु पखे दुख इच्छा पूरिन्दा है ॥२॥ निज परण जाने प्रभु पिछाने शुभ ध्याना ध्यावन्दा है, चौरासी लख योनि भ्रम जीवासुखामदा है, अणसण सागारी और इकतारी सुखकारी जोवदा है, पच्छम सन्यासी के अविनाशी सुखकारी गावन्दा है ॥३॥ थिर धुभजप्पे दालिदकप्पे देरावर थापन्दा है, चीरमपुर बारे भलि बीकाणे आरियनक जीपदा है, मुनारगुण गाये सहरसेनाथे ,योधपुरे जन्दा है, नागोर नगीनो बहु नर लीनो ध्यतर भूतभन्दा है ॥४॥ जे धन नर नारी

ऊठ सवारी जाके पाय नमदा है, उन्हें जलनाहे अतिउमाहे इति अतीतर् मदा है, जसुध्याने जे नर होवे सुधरत तसु ग्रह दुष्ट न-सदा हे, अति उज्वल सखरी धोती पहरी कुकम लेप घसदा है, घर वासना चदन पाप निकदन शुभ भावे पूजदा है ॥५॥ खसवोही चगीरचिये अगीमधुकर तिहा गुजदा है, मलयागर सखर वलि कृष्णागर धूपदसूधूपदा है, कस्तूरी पूरी कपूरी चूरी गोहूलाभेलदा है, फुलवृद्धा लायक सुखादायक साजन बहु मेलदा है ॥६॥ जसु महिमा चारी श्रावक आवी जाको जस वाचदा है, महल सुरणाई ससरीघाई मेघाज्यू गाजदा है, गुणगीत जगावे सीस नमावे नाटक मिलनाचदा है, झल्लरकसाला देदेताला वाजिंत्र बहु वाजन्ता है ॥७॥ इम आलस धारी कर इकतारी जे मन शुद्ध ध्यावदा है, ते सघली भाते सथल सघाते मन इच्छा पावदा है, रायजादी राणी गुणे वखाणी वदनज ओपम चदा है, तसु देख्या सुखा जाये दु खा घुघरिया रणकदा है ॥८॥ कटिसोहे शुभा अनोपम वक्षा कटि मेखल झणन्दा है, जोवन वयमाती सहसुहाती तिणसू केल करदा है, वलि घोड़ वयल्ला साथ छयल्ला सिर पर छत्र धरदा है, इकचित्ते ध्यावे वेग वधावे पद चकराच लहदा है, ॥९॥ तसु हयगययद्धा बोलतभद्दा मुह आसीस कहदा है, खरतरगच्छ ईसर कुशलसूरीसर ताके गुण गावन्ता है, सेवक साधारे शत्रुसहारे तरस्या तोष पावदा है, सुर सपति पावे अधिकेदावे चगासीमलहदा है, घग्घर निशाणी सहु वखाणी जय मुनिचद कहन्ता है ॥१०॥ इति घग्घर नीसाणी प्रथम सपूर्णम् ॥

॥ १३ ॥ तू श्री सघ रखे श्री सघ परखे श्री सघ दिल्लनसदा है, श्री सघ धूभ आए कुशल वधाए श्री सघ कुशल होवदा है, सघ मिल्न इकचित बोले कीरत पारन को पाउदा है, श्री सघ लही रिध सिधि पाई नव निधि श्री सघ नित वाधन्दा है ॥१४॥ सवत् अठारे वरस चिहुत्तर कार्तिक मास वहदा है, पूनम रवि वारे गुरु दरबारे मेला खूब सोहदा है, तहा मैं भी आया दरशण पाया गोरू तू तसदा है, घग्घर निसाणी कुशल कहाणी उदय रतन कहदा है ॥ १५ ॥ इति कुशल गुरु घग्घर निसाणी संपूर्णम् ॥

अथ छंद लिख्यते।

खरतरगछ जाणे खलक, राजे श्री गुरु राज, दादो दरशण देखता, सरे सहु शुभ काज ॥ १ ॥ छद भुजगी—सरे सब काज सटक सटक, तूटे दुख जाल तटक तटक, मिले मन मेलू मटक मटक, लगो गुर पाय लटक लटक ॥ १ ॥ खरे मन मेट खटक खटक, चोखे चित चाह चटक चटक, हरो हठ वाद हटक हटक ॥ लगो० ॥२॥ थुमे नर थान थटक थटक, वधारे नारेल वटक वटक, गिलजे सेस गटक गटक ॥ लगो० ॥३॥ गुणो गुण माल गटक गटक, घणा मिसटान घटक घटक, जुडे गज खान झटक झटक ॥ लगो० ॥ ४ ॥ भगे भय भूर भटक भटक, अरी रहे दूर अटक अटक, कदे न पुकारे कटक कटक लगो० ॥ ५ ॥ दीजे सहु रोग छटक छटक, पुले सत सीस पटक पटक, झडे सहु पाप झटक झटक ॥ लगो० ॥ ६ ॥ कलश—लटक लटक पाय लगे जगे जस प्रगट पुरयाई, गुरु

सेवा सुरगवी आप लक्ष्मी घर आई, बीकानेर विशेष जागतो सुर गाले, जिनदत्तसूरि जिन कुशलरा आप बिरद उजवाले, विजय हरष सौभाग्यवर, उवज्झाय एमधरमसी अरवे श्री संघ ने आनंद कर ॥ ७ ॥ इति छंद संपूर्णम् ॥

अथ छंद दूसरा।

समरु माता सरस्वती, कुमारी कर जोड, तू माता कवियण तणा, पूरे बंछित कोड ॥ १ ॥ कुशल करण जग कुशल गुरु, दायक बंछित देव, अह निसि तो ओलग करे, सुर नर सारे सेव, ॥ २ ॥ पुर पट्टणगामें प्रगट, जग सगले जस वास, पुरावनी तो पालियो, वसे दादोजी वास ॥३॥ छंद मोतीदाम—दादोजी वास न्यि दोलत, वधे छत्रछाया सेवकवित्त, वधोरे मान दशोदिशिवान, धरे इक चित्त जिके गुरु ध्यान ॥ ४ ॥ पूनम २ पूजे पाय, नवा २ नेवज पारन पाय चंपावलि केतकी फूल चरच, अनोपम श्रीफल लेई अरच ॥५॥ लहे घर सुन्दर लाछ अछेर, सभती सोलवधती नेह, लहे घर नारी लोयणवान, लहे वलि पुत्त सुपुत्त सुजाण ॥ ६ ॥ लहे भल गाम सुठाम भूपाल, लहे ढिग मीत भला ढीचाल, लहे घर मंदिर घोड़ा जोड़, लहे भट सेव करे कर जोड ॥ ७ ॥ लहे हित साजन हल्ल कलोल, लहे नित लीला छाका छोल, लहे घर कुरला कूर कपूर, लहे घर जीमण मोती चूर ॥ ८ ॥ लहे घर विद्या पुण्य पडूर, लहे घर सुख उगते सूर, लहे घरमंगल मद्दमसत्त, लहे घर चीर अनोपम सत्त ॥ ९ ॥ लहे घर बंछित भोग रसाल, लहे घर साल कचोला थाल, घरे नित गीत तणा गहगाट, भणे नित जय २

चारण भाट ॥ १० ॥ भरत पुत्त मधुचिय बाम्भ फलन, विछोहा वाला बेग मिलत, अनेकानेक बिरद् अपार, दीठो इक पलु में न आधार ॥११॥ जिहा सहस हुवे जो मुख, कह इक जीहा केइ मुख, यहा विरत्ताहग अणियात, नर नारी केइ आवे जात, गुणे तू गिरि ओ समुद्र शरीर, कथो में केइ न करज्यो रीस ॥ १२ ॥ दोहा—रीस न करज्यो कवियणा, मैं माहरी मति लार। कहियो जग में कुशल गुर, खरतरगच्छ सिणगार ॥१३॥ छन्द लघुनाराच—शृंगार हार साहए, सु काम धेनु दोहए, धरनि ध्यान जो सना, टलति दूर आपना ॥ १४ ॥ प्रथम जो नेरा उरे, सुथान सिंधयी उरे, जसाए शुभ जाग तो, सुदिष्ठ मघ माव तो ॥ १५ ॥ मुलताण मीर सवता, अनेक पीर देववा, फेरो हरे फतेपुरे, गुरु सत्रा उदो करे ॥ १६ ॥ मरोट थान मूलगो, एकात चिंघ ओ लगो, बीकाणवान सोभतो, सुथान मान सोभतो ॥ १७ ॥ मभारनारिणीपुरे, नीसाण बाजता घुरे, भेटो नर भहनेर, जगत्र सहु हुवे जेर ॥ १८ ॥ नागोर नाम दीपतो, दायाज देव जीपतो, तोरख तेम सोहए, जगत्र मन मोहए॥१९॥ सरूप मेडते सही अपार लब्धि जिहा लही, महिम माल पूर तो, लाहोर दु ग्व चूरतो ॥ २० ॥ कला अनेक आगरे, छत्तीस पवन मूलरे, दादेरी करत सेव, हिंदुआ तुरका देव ॥ २१ ॥ महासिद्ध सागानेर, जाल्मी करत जेर, अमरसरे कला अनेक, रारसोज तोड़े टेक ॥२२॥ मालपुरे सुभमान, खान खान सेवे थान, नाणपुरे राज रीत, जैतारण जगजीत ॥ २३ ॥ सोभत नुख सहय, नेना तटे निरूहय, गेजटले खरो सदा, वाहड़मेर सपदा ॥ २४ ॥ जोधाण मिले जातरा, जुहत देश देशरा, वीर-

मधुर तिमरी, करत नृत्य श्रमरी ॥ २५ ॥ जालोर जैतमिहरी, लभायंत खराखरी, प्रगट आप पाटणो, सुगन सुख आपणो ॥२६॥ अनन तेज अहम्मदा, सुमगलोर सर्वदा, साचोर सुज सासतो, तुरत शत्रु श्रासतो ॥ २७ ॥ जइपुरजईडरे, सेगावे कोटटेगुडे, गुरु सदा उदो करे, एकांत ध्यान जो धरे ॥ २८ ॥ भमत भाण जे तले, कीरत्ति कोटि ते तले, कहू केता जीभ एक, कोडधी कला अनेक ॥ २९ ॥.दोहा—कला श्रांक कुशल गुरु, समरया होय हजूर । अलगी टाले आपदा, जिम अधारे सूर ॥ ३० ॥ कलश—सूर तेज तिम सूरि दूरि आपद भय टाले, माविश्रा ज्यू मया करी सेवगा प्रतिपाले, मन बछित माह बाप कुशल गुरु का मित दाता, पूनम पूजे पाय रहे ध्याने जे राता ॥ ३१ ॥ सुप्रसाद सोम सुन्दर सुगुरु श्रमय सोम श्रोलग करी, प्रगटियो शुभ पालीपुरे विजयसिंह लीला वरी ॥ ३२ ॥ इति कुशल गुरु छंद सपूर्णम् ॥

सद्गुरु छुन्द तीसरा ।

दोहा—परतिख परचा पूरवे चूरे सकट कोडि ॥ श्री जिन कुशल मुनिंदवर वर्णुं दोय कर जोडि ॥१॥ छंद—कर जोड सद्गुरु पाय लागू सजन घर उच्छव घणो, वरनयर देरावर वखाणू सकल थूभ सोहामणो, परतिख्ख परचा सयलपूरे दुरिय चूरे सत तिणो, जिनकुशल सूरीसर निरखा ढियो हरखे श्रम्हतणो ॥२॥ रिधनाथधनराज रंग पुत्र स्थेय सपुत्रिया, स्रे भागिया सोभाग अप्पे सुम्ख सपे साविया, इक चित ध्याने सुगुरु श्रह-

निशि दिहा चिंतामणि जिस्यो, जिनकुशलसूरीसर शिरोमणि वमुत्पटदाता इन्यो ॥३॥ सड मडति सडसड सर विछूटे जडति जोर निहडिये, खड भडनि खग प्रहार बज्जे कुति कुजर गडिये, हुकार भण हक्के भडो भड इम्ये रण सद्गुरुसंगे, जिन कुशल सूरीसर प्रसादे जयति निश्चै ते वरे ॥४॥ थलवदधाट, पुलति पथी पडे जेहनिमालूया स्रूकत होठ मिलत लोयण लगजीहाता लुया, गयजीव आमे नामसामे सुगुरु नाम जिके कहे, जिन कुशल सूरीसर प्रसादे नीर निर्मल ते लहे ॥५॥ अल्लोल जल कल्लोल माला मगर मच्छ भयंकर, घणघोर नीर, गुतीर सायर सयल जन धुन्नेमग, बुडति वाहण मज्झि जे जिन कुशल नामति उच्चरे, जिन कुशल सूरीसर प्रसादे तारि सकट उद्धरे ॥६॥ चरसिंह विसहर सिंस निम नर वदि खाना बधण, डायणि साइणि गोगल भोगा जाम्वरस्ललसभय घणे, समरत सद्गुरु नाम धरिजे मत्र जे अहनिसि भणे, जिन कुशलसूरीसर प्रसादे मिले नवनिधि अगणे ॥७॥ मालवे मरहट्ट मेदपाटे मूलताने मडले, घण पाट लाट कुपाट सोरठ गुज्जराते सिंधले, खुरसाण गजनीपमुह देसा माहि महिमा जाणिये, जिन कुशल सूरीसर शिरोमणि सुगुरु एम वखाणिये ॥८॥ भावना चदन मेल केशर सुगुरु पूजा नित करो, मृगनाभि अगर कपूर भेली भोग उगाही गरो, नागेल नेवज ढोइ आगलि गीत गावे भामिनी, जिन कुशल सूरीसर प्रसादे आस पूर्ण मन तणी ॥ ९ ॥ कलश— आस्या पूर्ण सकल सुणि जिन कुशल पसाले, देसोरी वर नगरि वनि मधुर भणि गावे, समरथ सद्गुरुराय पायप्रणु म निज नरवर

अग वर्चामे लीलवती ॥१०॥ युवति गुण लायक नैतमिरी, भल चौसठ भेद कला सू भरी, लखरूपदे अवतार लियो, कुल जाण के भाण उद्योत कियो ॥११॥ जन मन पुत्र भयो जयकार, सघोषे वाजित्र मगलाचार, अनग रूपी निभो दणियार, तिलक कुदण देव कुमार ॥१२॥ बधते वेसथयो वडवीर, सराहे योगींद्र शील सधीर, इते जिन चद भट्टारक थाय, मन्मथ जीत महा मुनिराय ॥१३॥ तपे सहु सूरतिया सिरताज, त्रिया धर छत्र गरीब निवाज, बलाबल हाजर बावन वीर, मली जेरे चोसठ योगणि भीर ॥१४॥ भयभीत पेक्खर दूर भजे, फिर पच नदी पच पीर नमे, डरे तान दारुण दानव देव, सकेनाथ धारण चारण सेव ॥१५॥ अहो तपतेज अभीत ओनाड, महा-नन सधर मेर पहाड, पगोतल लोटे छत्रपती जडधार इसो महा योग जती ॥१६॥ दोहा—गढ सनियाणे जगत गुर, आया गच्छ मनि आप, भेटण आवे नूरती, पुहवी सुण परताप ॥१७॥ मनी जेरहो कुल मुगट, कुयर साथ कियाह, निधि हित आयो वादवा, लायक सपलियाह ॥१८॥ श्रीजीरी वाणी सुणी करे वचन कर जोट, श्रक धरू सुत आपरे, महीपति गजपति मोड ॥१६॥ आगे ही सुत अपियो, स्वप्ने दायक साम, कुल दीपक भल हुल कमल, जन्म्यो तो घर जाम ॥२०॥ कही जे तो सुत करमसी, जोग सकल सिद्धहत्थ, समपे जिनचद सूरिने, कुल म रहसी कत्थ ॥२१॥ चित हित कर छाजड तणा, वचन सुणी वरदाय, अन्हा टोंमी आषाड सिद्ध लीनो कठ लगाय ॥२२॥ भूमडल जिचे अमर पृथ्वी लौ नमु पाय, इनरे श्रावग आदियो,

बंदल गहर वणाय ॥२३॥ धर गुज्जर मगल धवल, थिरवो मभै थाट, पाटणचन्द पधारिया, घणाहुआगट गाट ॥२४॥ संवत तेरसतहत्तरे, बैठो चढ विमाण, तपे पाट कुशलेमाचिया ज्योतिवत घण जाण ॥२५॥ छंद मोतीदाम—तिण पाट तपे कुशलेसाकि मो, जिनदत्त बीयो जिनचंद जिसो, कुल हंस समोपम देव कला, अवतार भयो शमु आपइला ॥२६॥ नग नेत्र भलोमल कम्मल नूर, परमल गात्र सकोमल पूर, दीपे घन सार महा सुर देह, अनत सुजानन्न रूप अछेह ॥२७॥ प्रभु जिन धर्म चले सुधराह, बडा इद्र देव वखाणे नाह, जीता जिणे पांचे इंद्री जोध, फदे तस नामन व्यापे क्रोध ॥२८॥ पगपग जीव दया मनिपाल, ठावी जेरे मोक्ष तणी मन ढाल, महा सिद्ध योगींद्र भूप मरद, सम्मेवपु भूमण शील जरद ॥२९॥ वणे सिर ऊपर टोप वैराग, धरे मन धीरज लागो भ्याग, क्षमा खग साहि क्रमा खल खट्ट, जिसो मृगराज कुरग भपट्ट ॥३०॥ करा दृढ भाल विवेक कमाण, भरयो गुण बाण वडो भोथाण, चमाचम बीजल चारित्र शेल, फने गज अग दुआदस फेल ॥३१॥ इसो तप तेज अभग तुरग, नचे पद जापनेज्ञान वरग, महा भड जीत त्रिवरू मदन, वधे घण पोरस जोस वदन ॥ ३२ ॥ जपे ऋषि जोगींद्र जय२ कार, वदे पग चौविह सघ जिवार, गावे गुण गधर्व नागेंद्र गोम, भयो मुख कीरति सारी भोम ॥ ३३ ॥ दोहा—नव तत्त भेद गजोग युत, पथ सजम मतिपाल । नव्यासिये सुर वर निडर, हुओ अमर हठि आल ॥ ३४ ॥ देराउर पुर सिंध दिसि, प्रगटी ज्योति प्रमाण । पग पूजे हिन्दु आण पति, मीर पीर

गुणलाण ॥ ३५ ॥ कमल २ चढती कला, इला मनावे आण ।
गच्छखरतर कुशलेश गुरु, दादो जैन रो दीवाण ॥ ३६ ॥
छंद मोतीदाम—दादो जिन धर्म तणो दीवाण, रटे जस राणिंद रावल राण, दाता मन वंछित दै वरदाय, पृथ्वी सहु हाजर सेवे पाय ॥ ३७ ॥ निरमल गंग अनोपम नीर, अरचे चंदन फूल अबीर, घणो घनसार कस्तूरी घोल, चढे रंग केसर कुंकुम चोल ॥ ३८ ॥ झिगा मिग दीपक ज्योति झलक, मरी छिब मंडल गाण झलक, गिले अठगंध सुधूप महक, गावे उछरंगे गीत गहक ॥ ३९ ॥ वधावे श्री फल उज्जलनराज, पूगीफल चाढि मिठाई पान, करे नवनेनज ढोवे कोटि, जपे गुरु जाप चिहुं कर जोटि ॥ ४० ॥ इसी विध तीनेही टक अभ्यास, खरे मन पूज करे पद भास, जतावे रूप तुरत तयार, तुसे गुरु देवतो लाविन यार ॥ ४१ ॥ मिले घर सपत मंगल माल, सदामद भोजन साक रसाल, पीवे नित दूध कटोरे पूर, सन्धी जन उच्छव ऊगो सूर ॥४२॥ तीरा मृगमद सगरा तंबोल, करे अंग न्हाग कपूर कठोल, वामा पतिव्रता नयण विशाल, भलो मुखचन्द विराजे भाल ॥ ४३ ॥ पृथ्वी जस कीरति पूत सपूत, अनमी आय करे अमनूत, मोती मणि माणक मूंदरडा, कर कंकण हेम जड़ाव कड़ा ॥ ४४ ॥ मडा अंग ओलग दाम सलाम, दशो दिस हाजर दासी दास, घर जोड़ घणा नर सेव करे, धर मोग वे चामर छत्र धरे ॥ ४५ ॥ सुखासन आसन रथ सहल्ल, महा सुख माणे रंग महल्ल, आराहित कच्छी खग उछग, मदोमत घूमत जूथ मतंग ॥ ४६ ॥ थटी गढ महिषी गाया थाट, मथाणे गोरस

थे माद, भरया नवनिद्ध थाराट भंडार, कृपा कर आप तूठा करतार ॥ ४७ ॥ कलश—कृपा कर करतार, आप तूठो अलवेसर गणधर गौतम जेम, पूठवी दाता परमेसर, सोमवार सिरतार, प्रगट पूनम निशि प्राची, सेवे पदम छत्तीस, भाव भगता कर जाणी, गोजा समद उतार, मही मंडल महिमा घणी, कविराज रीझ वद्धिन करण, धन हो धन खरतर धणी॥४८॥ इति राजसिंह मुनि कृत कुशल गुरु छन्द सम्पूर्णम् ।

अथ सद्गुरु जिनदत्तसूरि छन्द ।

दोहा—वरदायक हम वादनी, सारद मात सहाय । त्रिभुवन सुख दातार तू, कीरती किती कहाय ॥ १ ॥ जग मांहे, पंडित जिके, वांचे अनिगल वाण । ते प्रगाट सहु साहरो, आगम निगम पहिचाण ॥ २ ॥ वाणी वाले व्याकरणी, वैदक तेम विनाण । पनि मुख वासो तू करे, तद रीझे राजान ॥३॥ श्री सद्गुरु सीखावियां, भाषा पद रस भेद । जण २ मुख वाणी जुई, सुणता वधे उमेद ॥ ४ ॥ गाऊ गुण गछपति तणा, पदवी युग प्रधान । जगपुर महिमा जागती, श्री जिन दत्त सुजान ॥ ५ ॥ ज्यां सेव्यो त्यां जाणियो, ज्यो अन लियो मरद । जल थट थलथट जुगति सु, समरया त्यै सवद ॥ ६ ॥ इण खोटे पंचम अरे, पुहवी वडी प्रसिद्ध । गाम २ कोटे गढे, नगर २ नव निद्ध ॥ ७ ॥ छंद जात सारसी—नवनिद्ध रिद्ध प्रसिद्ध वाधे गुरु जप्या गहगाटए, सुर असुर ऊभा करे ओलग थान आगल थाटए, परचा देखालण कष्ट टालण गच्छखरतर

पतए, जिन दत्त सूरीस सद्गुरु सेवता सुख सन्त ए ॥ ८ ॥ मधत् इग्यारैसे त्रीसे सागवाड सुगतए, मन्त्री वाछिग गोत्र हूबड, गुनता गजगजए, तसु घरणी वाहड़ देवी नामें, सत्त शील सफल ए ॥ जि० ॥ ९ ॥ शुभ स्वप्न सूचित पुत्र जनम्यों वदे वर्ति वसावनी, वाजिया ताल कसाल बहु विध, राग रंगे मनरली, दश दिवस चोरया ढिवद्गठण पोस्विया कर पतए ॥ जि० ॥ १० ॥ तिण काल तिणहीन समे तिण पुर देन्व उच्छव हरण सू, गुरु नाम जिन वल्लभ जती सर पूजिया कर परखम् , तप जप्प सयम दया पालक रिरण जिम जसु कातए॥ जि० ॥ ११ ॥ तसु पाय प्रणमी अग ऊलट आण मन उछ-रग ए, इग्यारसै इकताल भवन् मक्षा न्न गुरु सग ए । जिन बचन किरिया शुद्ध साधन आग मन एकात ए ॥ जि० ॥ १२ ॥ इग्यार अंग उपाग वोरे भेद भाव भला भणया, गुरु बचन सहिता विनय यहिता सत्र माहि अर ये सुणया, सतशील सजम शुद्ध समकित सह विध सीग्वत ए ॥ जि० ॥ १३ ॥ गुरु देख न्नणिमा शिष्य महिमा वलिय गरिमा गज ए, सगलाई शिष्या माहि दीपक रान राणा रज ए, उद्योत-कारी ने आचारी शुद्ध धर्म सफल ए ॥ जि० ॥ १४ ॥ अनु-क्रमे दिन २ पुण्य वधते ऊपनी मन आसता, पगसिद्ध घटवय राग प्रगट्यो सरदहे गुण सासता, परिणाम गगा नीर निरमल खरीधर मन सत ए ॥ जि० ॥ १५ ॥ निज पाट थाप्या करि महोच्छव इग्यार सै गुणहोत्तरे, सूरि मत्र साधन गुरु आराधन चाकिरा सेवाकरे, मन माह आणी गुरु परंपर मत्र शक्ति महत

सुगविहारे ॥ जि० ॥ १६ ॥ गुरु निधे पुरगिरि न्दर पगिदग
रसम, मेदगरो मानु सने धर्म चरचा चरचना, गजा न गणा
य श्राव मेरवा कहु मन ए ॥ जि० ॥ १७ ॥ जालोर नयरे
र्गिय नागी सगर नरा चहु श्राण ए तनु पुन चोहिल्थ तेण
कुक पय प्रणमिया गुण जाण ए दीनाडियो फर जाप जिनदत्त
ईन धर्म सम्कत ए ॥ जि० ॥ १८ ॥ प्रजमेर नयरे तीर्थ पुरु-
कर मयना हट रग ए, तसु पोतरा वामदेव नाम कियो उज्जल
सग ए, कुकडा वग्गी गायनो धी चोपड़ाया सत ए ॥ जि०
॥ १९ ॥ परचा दिग्वाले दुरियटाले मन शन्ते माहनी, उपगार
कारी दया धारी शोभ जगमें सोहनी, सो वर्णवर्णी सीध फाग
राव सहु रीझत ए ॥ जि० ॥ २० ॥ बड बडे गामे ठाम ठामे
भूपति मति बोधिया, इक लक्ख ऊपर सहस तीसा कलू में श्रावक
कीया, परचा देखाइया रोग भाड्या लोक पायलसनए ॥
जि० ॥ २१ ॥ गुनातार सीरा पच पीर पच नन्यिा पन्निरे,
चोसठि जोगणी वीर बावन दस दुनिया थर हरे, जयसान जपता
जापदू सन श्राय पाय पटत ए ॥ जि० २२ ॥ वरमान चोसठ
जोगणी वलि दीया लीया गुरु कने, इण ठाम वहिने निको कामी
मान मलना कलमने परिवार पूरे पाटधारी वचन सिद्ध सर्वत
ए ॥ जि० ॥ २३ ॥ पडिक्रमण माहे बाग लीना देख बहु
भनकार ए ते मत्र राखी सघ साखी जग सुनम जयकार ए,
तुम्ह पाय लागी मीख मागी सुघडिये दासत्त ए ॥ जि० ॥२४॥
अंबड सुमारग हाथ यचर दासानुदासादिक मही, गुरु सुमत
प्रगटे प्रगट अम्नग जाणने जुग नर सही, परसिद्ध जुग प्रमाण

पद्वी अंबिका वरा सन ए ॥२५॥ मेतरामने सीट सामत तासुसुत आस्थान ए, गुरु पाय लागी ऋद्धि मागी सफल विधि सुविधान ए, पन्दिम दिशि तुरुष्क माम्य फलर्सी राय वश नथत ए ॥ जि० ॥ २६ ॥ हिव उच्च नगर वड़े उच्छव आविया उग थान फै, सुरपति पुत्र प्रमाण जाणी अजम मन मे आण फै, करि जाप विधा बल बुलायो हर्ष लारु हसत ए ॥ जि० ॥ २७ ॥ इण विधे विक्रम पुर विहार करि उपद्रव मेटियो, करि शात याणी वाट पाणा सर्व रोग समेटियो, श्री सघ सगलो सुजस आखे कवि कीर्ति महत ए ॥ जि० २८ ॥ बडनगर माहे एक ब्राह्मण जैन द्वेषी जाण ए, देहरा द्वारे मृतक गमनी धींस नागी आण ए, परकाय में परवेश विद्या प्रगट कर पर सत ए ॥ जि० ॥२९॥ उज्जैण नगरे देव यात्रा वज्र थभ विचाल ए, प्रच्छन्न विधा सोवनी विधि लिण समै ततकाल ए, लघु लाघवी करि उरीलीधी दिवस तिण दीपत ए ॥ जि० ॥ ३० ॥ सवत् बार इग्यार बच्छर गुर थया निरवाण ए, आसाढ मासे तिथि इग्यारस शुक्ल पक्ष सुजाण ए, अजमेर नगर वडे उच्छव पादुका पूजत ए ॥ जि० ॥ ३१ ॥ इम विरुद्ध बहुला जगत माहे कवी कहो कुण कह सके, सुर असुर सगला पाय नामी ताहरा सरणो तके, दौलत दाता मुक्ख माता पुहवी जस पसरत ए ॥ जि० ॥ ३२ ॥ चल छिद्र साकिण डायणी नहि भूत प्रेत भयकरा, जिन दत्त जापे तुरत आपे प्रसन्न होय जावे परा टालि रोग सोग फदेन न्यार गुणी जन गहरत ए ॥ जि० ॥ ३३ ॥ वलि वाट घाट मगु घाट क्षण हाट केनला शुभ रूप पुर कलत्र मननि

वैर चाहे जेतला, भूखिया तिमिया दिये भोजन अचल जस इच्छ ए ॥ जि० ॥२४॥ कलश कवित्त—श्री जिनदत्त सूरिंद प्रभु आगे जग सारो, श्री जिनदत्त सूरिंद आज चारो वरतारो, श्री जिनदत्त सूरिंद सेवता रिद्धि समप्पे, श्री जिनदत्त सूरिंद कष्ट सब कप्पे, विद्या निधान पाठक विनय श्री रुघपति पाठक सह, गुण ताल भमे गहगाट सूं रचियो छंद मनोहरू ॥२५॥ इति जिनदत्त सूरि गुरु छंद सपूर्णम् ।

राग कड़खेकी (छंद)।

प्रेम मन धार नित पहर परभात रे, विविध जसवास गुण रासवादो, अमल आसियात विलियात गुण इण इला, दीपती देस जग माहि दादो ॥ १ ॥ घाट रिपु थाट जल थाट, औघट घणे इणे मह आपदा भय हुय हजूरे, सूरि सिरदार दे सकल सुख सेवका पूर नित कुशल जिन कुशल पूरे ॥२॥ अधिक घण झाड उजाड अवगाहता तस्करा तस्करा पड़या लारे, धींग गच्छराज रो ध्यान मन ध्यावता, विकट संकट सहु निकटवारे ॥ ३ ॥ वटकनी भाजती बूड़ती वेडिया, पार उतार जिन विरद पायो, तुझ सेवक तणा दुःख भाजे तुरत, धर्मसी कुशल गुरु नाम ध्यायो ॥ ३ ॥ इति ॥

बावन बीर किये अपने वश चौसठ जोगणि पाय लगाई, डाइणि साइणि भूचर खेचर भूतक प्रेत पिशाच पुलाई, बीज अपटक भटक रहे मन माहि खटकनसाई, कहे धर्मसिंह लंघ कुण लीह दिये जिनदत्त की एक दुहाई ॥ १ ॥

राजै थूभ ठोर २ ऐसो देव नाहि और दाद्रो २ नाम। जगत जस गायो है, अपने कू भाव आय पूजे लोक लसपा प्यासन कू राण माहि पाणी आण पायो है, माट घाट शत्रु था हाट पुर पट्टण में देह गेह नेह से कुशल वरतायो है, धर्ममि ध्यान धरे सेवका कुशल करे साचो श्री जिन कुशल सूरि ना यू कहायो है ॥ २ ॥ कुशल अग उच्छरग कुशल विराजे व्य पारे, कुशल देव देहरे कुशल धणराज दुवारे, पुण्यपसाये कुश कुशल श्री सघ भणिज्जे, धाहण आने कुशल कुशल घर २ गाईज्जे जिन चद सूरि पुह पट्टधर नाम मत्र आगति टले, जिन कुश सूरि पाय पूजता नव निधान लम्मी मिले ॥ ३ ॥ कुशल बड़ो ससार कुशल सज्जन जन चावे, कुशले मगल माल लच्छ घर कुशले आवे, कुशले घोड़ा थट्ट कुशल पहिरिये सुवस्रो, कुशले धन बर- सत कुशल धन धन रवन्नो, ऐसो नाम सद्गुरु तणो कुशले जग रलिया मणो, जिन कुशल सूरि जप्या जुगत घर २ होय वधा- मणो ॥ ४ ॥

मिश्री घृत खीर गलाय मिलाय प्रभात मर्मे गटके गटके, सुखरास निवास सुधारण कू मन मेल मिले मटके मटके, भली ऋद्धि बड़ी दिल रजन कू सन आय मिले सटके सटके, रुघपत्त महत्त जुगत्त मिल्या गुरुदेव नमू लटके लटके ॥ ५ ॥

मसूर पठाण गरज्ज कियो भट्ट या वाद चढ्यू कोई पडित जागे, साह सलेम वुलाय श्री पूज्य कू मोहि भरोसा चदन भाग, भट्ट हार गयो इक चाट रागद्द की जीत भई यू जैन के तागे, वाद जीतो जिन चद भट्टारक यू पतसाह त्रिलोपति आगे ॥६॥

मृग नयण चले गुरु मदा छूट मानू गजराज घटा,
...रण नेउर हार बण्यो गल माल वती विच छूट लटा,
गावन गीत सुहागण मगल पूरत मोतिय चोक छटा,
...जो जिन चंद भट्टारक सनमुख जाके वादी हटा ॥ ७ ॥

अकबर पानशाह प्रतिबोधक जिनचंद्र गुरु छन्द ।

...नी सतन की मुख वाणि सुणी जिन चंद मुणिंद महत ...ती, तप जप्प करे गुरु गुज्जर में प्रति बोधत है भवि कू मुगती, सब ही चित चाहन चूप भई समय सुंदर के प्रभु गच्छ पत, पठाय पतिसाह अजव्व की छाप बोला ए गुरु गजराज गति ॥ १ ॥ एजी गुज्जर तें गुरुराज चले विच में चउमास जालोर रहे, मेदनी तट मत्र मटाण कियो गुरु नागोर आदर मान लहे, मारवाड रिणी गुरु वदन कू तरसे सरसे विच वेग वहे, हरप्यो सप लाहोर आये गुरु पति साह अकब्बर पाव गहे ॥२॥ एजी साह अकब्बर वव्वर के गुरु सूरत देखत ही हरखे, हम योगी जती सिद्ध साध मती सब ही खट दर्शन के निरखे, तप्प जप्प दया धर्म धारण कू जग कोई नहीं इनके सरखे, समय सुन्दर के गुरु गच्छपती यूं साह अकब्बर ने परखे ॥ ३ ॥ गुरु अमृत वाण सुणी सुलतान ऐसा पतसाह हुकम्म किया, सब आलम माहि अमारपलाये बोलाय गुरु फरमाण दिया, जग जीव दया धर्म दाखण त जिन शासन में जो सौभाग लिया, समय सुन्दर के गुणवत गुरु दग देखत हरखित होत हिया ॥४॥ हेजी श्री जी गुरु धर्म गोष्टि मिली सुलतान सलेम अरज्ज करी, गुरु जीव दया मन चाहत है चित अतर प्रीति प्रतीत खरी,

कर्मचद बुलाय दियो फरमाण छोडाई खमायत की मछरी, समय सुन्दर के सब लोकन में है खरतरगच्छ की ख्यात खरी ॥ ५ ॥ हे जी श्री जिन दत्त चरित्र सुणी पति साह भये गुरु राजीयेरे, उमराव सबे कर जोड़ खड़े पभणे अपणे मुख हाजीयेरे, चामर छत्र मुरातिब भेट गिगड़दू धूधू वाजियेरे, समय सुन्दर तू ही जगत्र गुरु पतिसाह अकब्बर गाजिये रे ॥ ६ ॥ हे जी ज्ञान विज्ञान कला गुण देख मेरा मन सद्गुरु रीझियेरे, हुमायूं नदन एम अखेमानसिंघ पटोधर कीजीयेरे, पतसाह हजूर थप्पो सिंह सूरि महाण मत्रीश्वर वींझियेजी, जिन चंद पटे जिन सिंह सूरि चद सूरज ज्यू प्रतपीजियेजी ॥ ७ ॥ हे जी रीहड़ वश विभूषण हस खरतरगच्छ समुद्र शसी, प्रतप्यो जिन माणिक्य सूरि के पाट प्रभाकर ज्यू प्रणमू उल्लसी, मन शुद्ध अकब्बर मानत है जग जाणत है परतीत इसी, जिन चद मुणींद चिर प्रतपो समय सुन्दर देत आशीस इसी ॥ ८ ॥ इति अकब्बर पाति साह प्रतिबोधक दादा श्री जिन चद्र सूरि गुरु अष्टक छद ।

अथ अष्ट प्रकारी पूजा प्रारम्भ ।

दोहा—क्षीरो दधि जल अमृत निधि, गगा गोमती वार, कचन कामित कलश भरि, चरण हवण करे सार ॥१॥ श्लोक—निर्दोषस्नपनतपनोत्करिमा, मरिमासितसत्क्रमणम्यगुरो चरवारिभिरादरितस्त्वरित, तरुपुष्पकलापमवासरमै ॥१॥ उँ ह्रीं श्रीं श्रीसद्गुरोर्जन्म निर्विपामितेस्वाहा ।

चंदन केशर ॥ दोहा ॥ कुंकुम चन्दन चरचिये, कस्तूरी घन सार, मरन सुगंधि द्रव्य मेलिये, कीजे विधि विस्तार ॥१॥ श्लोक–सुरभिमिश्रितकुंकुमचन्दनैः सुगुरुपादमहाम्बुजसेवकैः ॥ भविकपुण्यफललभनेपरा, प्रबलभक्तिदमादिचिरमुदा ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीसद्गुरुभ्यश्चन्दनं निर्वपामिते स्वाहा ॥२॥

दोहा–चंपक, जाई मोगरा, केतकी, फूल गुलाब, सद्गुरु चरणे ध्याइये, भर २ सुन्दर छाब। श्लोक–सपुष्पितादशदिशा-भवलाभिन्दैः, समोदितालिगुरुगीतयुतैश्च पुष्पैः ॥ तैभ्य समर्चित पद परम लभते, श्रीजिनचन्द्रगुरुपादविलासमलीलम् ॥१॥ ॐ ह्रीं पुष्प निर्विपामिते स्वाहा ॥३॥

दोहा–अगर तगर अंबर सुगंधि, चंदन नदा मोद, श्री जिनकुशलसूरिन्द्गुरु, वासित परम प्रमोद ॥१॥ श्लोक–गुरराज पदेवरवासमय,भविक किल पूजयते प्रथितम् ॥ निज देहरुजनजयत खलु, बहुऋद्धिसमृद्धिनिधिप्रथितम् ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं धूप निर्विपामिते स्वाहा ॥४॥

दोहा–रत्न जडित कंचन मई, थाल ग्रही कर माहि, मंगल दीप भले धरो, अशुभ टरे छिन-माहिं ॥१॥ श्लोक–विशालरूपादिसुवर्णपात्रे, निधायदीपचवरासखडये॥ श्रावका दीप-मयासुपूजा, भृश विधाय सुतरां क्रमेण ॥१॥ ॐ ह्रीं श्रीं सद्गुरो दीपनिर्विपामिते स्वाहा ॥५॥

दोहा–अक्षत थाल रसाल भर, स्वस्तिक पूज करेह, स्वस्तिक भली विध नीपजे, मोहग दूर टरेह ॥१॥ श्लोक–अमूल्य मुक्ता

अथ सिद्धगिरि स्तवन लिख्यते ।

आज आपे चालो सहिया, सिद्धाचल गिरि जइये, सिद्धाचल गिरि जइये बहनी, उज्जल गिरिवर जइये ए ॥ आ० ॥ सुण बहनी ये गिरिनी महिमा, आदि जिनद इम भाखे, भरतादिक नरपति नें आगल इन्द्रादिक सब साखी है ॥ आ० ॥ १ ॥ सास्वतो तीरथ ए सेत्रुंजो, जोता लागे मीठो, तीन भुवन में इण गिरि तोले, बीजो कोइयन दीठो है ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरवरिण काल अनंते, साधु अनंता सीधा, जनम मरणना दुःख छोडीनें, अमल अक्षय गुण लीधा है ॥ आ० ॥ ३ ॥ इण गिरि सन्मुख पगला भरता आतम शुद्ध स्वभावे, कोडि भवाग पातिक कीधा, एक पलक में जावे है ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरजन सूं नेह धरीने, आगल ओलग करस्या, अदभुत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीसा है ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्प सुगन्धा लेई पचरंगा, हार सुरंगा गूंथी, पहिरावी प्रभु कंठे लहस्या, शिव मारगनी सूथी है ॥ आ० ॥ ६ ॥ गहिरस्वरे जिनवर गुण गाता, जात्रनिनाणू करिये, मनगमती भगती बिन भमता, भवसायर निस्तरिये है ॥ आ० ॥७॥ पूर्व निनाणू बार प्रथम जिन, गयण रुरो आया, ए तीरथ शुभ भावे फरसी, करिये निरमल काया है ॥ आ० ॥८॥ लाभ उदय ए गिरिवर लहिये, कहे इम केवल ज्ञानी, श्री जिन चन्द्र सदा हितवच्छल, प्रेम घणे मन आणी है ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

नमो रे नमो सेत्रुंजागिरि रे, तिकरण शुद्ध त्रिकाल रे, पाप पटल दूरे हरे, तूटे करम जंजाल रे ॥ नमो० ॥ १ ॥ पूरब

नेनाणु समो सख्या रे, प्रथम जिनंद जगदीश रे बावीसम
जिनवर विना रे, समवसख्या तेवीस रे ॥ नमो० ॥ २ ॥
साधु अनंत अणा सण अही रे, सीधा पहीज ठौड रे, काल
आगामी वलि सीझ्ये रे, साधु अनंता कोड रे ॥ नमो० ॥३॥
अनंत कल्याण भूमिका रे, महिमा वंत महंत रे, सास्वतो तीरथ
यही रे, अति सय जास अनंत रे ॥ नमो० ॥ ४ ॥ कोडि
भवांतर जे क्रिया रे, पातिक विविध उपाय रे, सेत्रुंज स मुख
चालता रे, पग २ ते सहु जाय रे ॥ नमो० ॥५॥ धन दिन
तेहीज जाणस्यु रे, वहस्यू सेत्रुजा केरी वाट रे छहरी यथा विध
पालस्यू रे, संघ सहित गह गाट रे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ पग २
उच्छव अति घणा रे, पग २ याचक दान रे, प्रेम भक्ति
साहमी तणी रे पर उपगार प्रधान रे ॥ नमो० ॥ ७ ॥ धन
ते गिरिराय निरखस्यू रे, वधती मंगल माल रे मणि मोतीय
बधावस्यू रे, रजत सोवन भरी थाल रे ॥ नमो० ॥ ८ ॥
धन दिन गिरिराय फरसस्यू रे, करस्यू पावन मोरी काय रे,
भक्ति युक्ति जुहारस्यू रे, नाभिनंदन जिनराय रे ॥ नमो०
॥ ६ ॥ द्रव्य भाव करस्यू सुणा रे, पूजा विविध प्रकार रे, भावे
भावना भावस्यू रे, करस्यू सफल अवतार रे ॥ नमो० ॥१०॥
रत्न नई समनी भली रे, देस्यू ते धर बुद्ध रे, भव २ श्रमण
निवारस्यू रे, करस्यू आतम शुद्ध रे ॥ नमो० ॥ ११ ॥ निशि
फरसन मन माहरो रे, मोहि रह्यो दिन रात रे पुण्य प्रबल था
पामसां रे, उज्जल गिरिकेरी जात रे ॥ नमो० ॥ १२ ॥
नाथ कुस्नाग पधार वी रे कारज सगला सिद्ध रे कहे जिन

सग, दृरथ की परिहरिये ॥ वि० ॥ ६ ॥ एकल आहारी नें सचित्त परिहारी, गुरु साथे पद चरिये ॥ वि० ॥ ७ ॥ पडिक्कमणा दोय विध सू कीजे, पाप पडल विष हरिये ॥ वि० ॥ ८ ॥ पालिताणे ए तीरथ मोटो, प्रवहणशम भर दरिये ॥ वि० ॥ ९ ॥ उत्तम ए गिरवर सेवता, पद्म कहे भव तरिये ॥ वि० ॥ १० ॥ इति पदम् ॥

अथ उपाध्याय श्री रामलाल गणि० कृत गुरुगुणरत्नावली ।

शांति वदन बज देख नयण, मधुकर मन लीनो रे (चाल) ।

श्री सद्गुरु का दरस सरस म्हानू प्यारा लागे रे ॥ टेर ॥ श्रीजिनचंद सूरिंद पटधारी, जिन शासन के उद्योतकारी, भवत-वत्सल गुण [illegible]गर नागर, ज्योती जागेरे ॥ श्री स० ॥ १ ॥ रावरा राणा आण माने, परचा तेरा सब जग जाने, ऋद्धि वृद्धि सुख संपत आणंद, गुरु से मांगे रे ॥ श्री स० ॥ २ ॥ महर निजर मुझ ऊपर कीजे, शुद्ध दरशण अब मुझ को दीजे, उदय २ कर परगट सानिध, अरिगण भागे रे ॥ श्री स० ॥३॥ जिन चारित्र सूरि पदधारे, भय भय पातिक दुरित निकंदे, पाठक राम गुरु चिरनंदे, गावत रागेरे ॥ श्री स० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

राग ।

चेत नर क्यूं भूला अज्ञान, धरो जिन कुशल सूरींद का ध्यान ॥ टेर ॥ मिथ्या मति कू दूर हटा कर, समकित दिया निशान दया सत्य व्रत अनुभव कीना, कीना अमर विमान ।

॥ धरो० ॥ १ ॥ काल अनंते चिहु गति भमते, मिले कुशल गुरु ज्ञान, इस भव ऋद्धि परभव सिद्धि, मिले अचिंते आन ॥ धरो० ॥ २ ॥ सिद्ध योग है नाम अमोलक, रत्न चिंतामणि मान, कामधेनु सुरतरु है परतिख, महिमा जपे जिहान ॥ धरो० ॥ ३ ॥ सोमवार पूनम दिन रूपण, जोनि नागती थान, कर एकाग्र चित्त चरणन में, देते दरशण आन ॥ धरो० ॥ ४ ॥ कुशल करण प्रगटे भवि जन के, धर्मशील पहिचान, जिन चारित्र सूरि के सतगुरु कुशल राम कल्यान ॥ धरो० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग बंगालो धमालो।

देख्या मैं दरश तिहारा, श्री सद्गुरु महाराज ॥ दे० ॥ टेर ॥ सफली फली मन आशा, फली म० ॥ पाया सुरतरु आज ॥ दे० ॥ १ ॥ शुभ हो चिन्तामणि जैसा चिन्ताम० ॥ दायक सब सुख साज ॥ दे० ॥ गंगा आगण में प्रगटी, आग०॥ शुभ मन निर्मल काज ॥ दे० ॥ २ ॥ गुण ऋद्धि सपत बाजे, स० ॥ काम धेनु गुरु राज ॥ दे० ॥ सब सिद्धि लीला प्रगटी, लीं० ॥ दुःख दोहग गये भाज ॥ दे० ॥ ३ ॥ गुरु तुम्ह परउपगारी, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ शुभ थान पुर २ सोहे, पु० ॥ मुलक बीकाणे राज ॥ दे० ॥ ४ ॥ घर गच्छखरतर राजा, स० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ गुरु नाम राम ऋद्धि मांगी, जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

जग में अमर राजा भरतरी (चाल)।

सत्गुरु दीनदयाल, गच्छपति दिनकर तुम धणी ॥ टेर॥ सबप जन प्रतिपाल, दुखतमहारण दिन मणी ॥ स० ॥ १ ॥ गढ मवियाणोनी देश, छाजेड़ कुल उदयाचले, जिल्ला साह पितेश, जयत गिरी अचर भले ॥ स० ॥ २ ॥ गच्छपति चंद सुनींद, पाट तिलक किरणावली, खरतर कमल आनन्द, तेज प्रकाशन मन रली ॥ स० ॥ ३ ॥ पुर पत्तन सब देश, झिग मिग ज्योति झिग मिगे, पूनम नें सोमवार, नर नारी गुर ओलगे ॥ स० ॥ ४ ॥ अरचे अतर फुलेल, परिमल फूली मालती, महके चंपक बेल, सुन्दर आवे मलपती ॥ स० ॥५॥ शुभ थिर थूभ थीनाय, यालूचर महिमा घणी, कीरत वाग प्रधान, दु[illegible] भजन चिन्तामणी ॥ स० ॥ ६ ॥ पूरो बंछित आश, छाया तुम सुनिजर तणी, दाता सुख कैलास, चरण शरण किंकर भणी ॥ स० ॥ ७ ॥ पूजे पद गोविंद, चन्द्र शिखर जय राम में, कोटिक गण कुल चंद, कुशल सुरिन्द प्रकाश में ॥ ८ ॥ उगणीशय अडताल, मिगसर बदी दशमी करी, दरशण अतहि विशाल, कुशल निधान हरख धरी ॥ स० ॥ ९ ॥ गुर गुण सरिता नीर, मीर मगन उल्लास में, लक्ष्मी लील समीर, ऋद्धि सार जसवास में ॥ स० ॥ १० ॥ इति पदम् ॥

राग आसाउरी।

सुगुरु मेरी नइया पार उतारो, तू बण अब मांझी हमारो ॥ सु० ॥ टेर ॥ सरिता भाद्रव नीर जलधि ज्यूं, ये ससार

आगे ना तट पारवार अमर पद, ताको बता दातारो ॥ सु० ॥ १ ॥ गम रग डूक जीरण नौका, तिर रही भरमक भागे, मैं बैठा परमारथ तारक, मोह मगर ने उधारो ॥ सु० ॥ २ ॥ भरम उधारया श्री सद्गुरुजी, अलगी कष्ट निवारो, आणा बाला गणपति करुणानिधि, या विनति कु चारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ दुष्कापात गगन विपयारस, द्वार्में श्रवदि कपरो, विरह व्यथा दिक निधि अधिकारो, कोण करे निस्तारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु जेव कोई ईशा, आता उनया प्यारो, मैं ध्याउं शिव देव कुशल गुरु, अविगत गवन हारो ॥ ५ ॥ सुण अरजी आपे गद्दतमदर, तुरत ही विघन विडारो, गागबागपुर आजीम गंज, कुशल निधान जुहारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ केइपगा गुरु रे लक्ष्मी पावत, हुकम धरे सदुधारो, मैं इण सेवा चरणा कमल की, मागु गुरु दातारो ॥ ७ ॥ सवत उगणीसे पञ्चाशीग, मेरु त्रयो उगी सारो, जयणा मगल मिले गुरु दरशन, मैं मार्गसार सिहारो ॥ सु० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

होरि ।

सद्गुरुजी की पूजा कर रे कर रे ॥ क० ॥ दुख दारुण दूर हर रे ॥ स० ॥ टेर ॥ ये कलियुग आगत भयो दधि, सद्गुरु बाट पकड़ रे प० ॥ स० ॥ १ ॥ अगम अपार जिनकी महिमा, ज्ञान ध्यान चित धर रे, पूरन पुण्य उदय भये तेरे, मिल गये सद्गुरु वर रे व० ॥ स० ॥ २ ॥ बाट घाट भय सकट वारण, दुरमत लोपी हर रे, चंद्र सूर्य के पाट प्रभाकर, उदय भयो निकर रे न० ॥ स० ॥ ३ ॥ कुशल

सूरीश्वर कुशल कृपा कर, नित प्रति नाम समर रे, द्रव्य भाव दुय विध तें पूजन, कर भव सागर तर रे स० ॥ स० ॥ ४ ॥ स्वर संगीत ताल सुन गुरु गुण, गावत हैं नरवर रे, ग्राम ? मिर थूभ नगर में, पन्ना गुरु का जतर रे ज० ॥ स० ॥५॥ लाल गुलाल अबीर अतर में गुरु भक्ति अनुसर रे, जिन चारित्र सूरि पद वदन, राम चरण अनुचर रे च० ॥ स० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

पुनः होरी ।

होरी खेलो भविक सद्गुरु के संग, नित आनन्द उछरंग होतरंग ॥ हो० ॥ टेर ॥ मस्त महीना फागण आया, श्री संघ से हिल मिल के संग ॥ हो० ॥ मंगल शब्द करत स्वर झीणा, अली कली के संग रंग ॥ हो० ॥ १ ॥ ऋतु वसंत आनन्द पिया संग, गोरी गावत बनत चंग ॥ हो० ॥ ऐसे साज समाज भक्ति से, गुण गुलाल लिये गुरु के अभंग ॥ हो ॥ २ ॥ निरमल मन मकरन्द सुधारस, अतर पुष्प से चरचो अंग ॥ हो० ॥ ध्यान पिचकारी भरभर सुधारी, छिरको महकत सुरभिरंग ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत नैन उनमाण मे नए, ऋद्धि मोरे के घर उमंग ॥ हो० ॥ ४ ॥ इति पदम ॥

होरी ।

जय बोलो पार्श्व जिनेसर की (चाल) ।

सद्गुरुजी के द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये श्री संघ सब हिल मिल के, संग लिये बाला जोरी ॥ स० ॥ दीनदयाल

है मनगुर ठाडे पठन म गुर जुन शुभ गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ रूप पीली भगी कचोली, पूजन है चाली गोरी ॥ स० ॥ गग गनाल मस्यो सद्गुरु क परीग उडारत भर झोरी ॥ स० ॥२॥ पुन र भाग्य हमारे प्रगटे, सद्गुरु न पकड़ी डोरी ॥ स० ॥ अति मन रंग तुरमार भजन बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ कामित गाता नग फ़ आना, भाजी य मुर ले मोरी ॥ स० ॥ कन्त गम नहि मार सुगाठक, रहत है तुम कर चोरा ॥ स० ॥४॥ इति पद्य ॥

दस गुरु दरश दिखाजोजी, मै प्यासा तेरे दरशन का, ॥ टेर ॥ दीधा मुरत सना मुख तेरी, दूर देश से आया, नेक नजर कर सद्गुर मुझ पर चरणा शीश नमाया ॥ द० ॥ ॥ १ ॥ अन धन लक्ष्मी मुख सपत घर, भरा खजाना पूर, तेरे मुरु को घटे न तिल भर, दु ख दालिद्र दूर ॥ द० ॥ २ ॥ आगे विनय किया बहु तुमने, मन वन्द करते देरी, एक चित्त से ध्यान लगाता, शुद्ध मन देता फेरी ॥ द० ॥ ३ ॥ आशा धर कर करू प्रार्थना, वञ्छित पूरण कीजे, लीला लहर पलक मे पाउ, यो जस सद्गुरु लीजे, ॥ द० ॥ ४ ॥ माझा रात दिया गुरु दरशन, तेज झलामल पूर, भगत वच्छल बरदाई प्रगटे, चन्द सूरमा नूर ॥ द० ॥ ५ ॥ श्री जिन बल्लभ पाट प्रदीपक, खरतरगच्छ राजान, उदय २ कर सघ सकल का, जाणे सकल जिहान ॥ द० ॥ ६ ॥ भक्तों के आधीन परम गुरु, क्रिया गुरु दत्त नाम, चरण शरण का लिया आसरा, राम चरण का दाम ॥ द० ॥ ७ ॥ इति पद्य ॥

आज रंग वरसेरे, वरसे सरसे सुगुरु दरशक, जियरा तरसे रे ॥ आ० ॥ टेर ॥ सायर ज्यूं गंभीर अतुल बल, धीरज मेरुजवरसेरे, मेघ घटा ज्यूं भवि जीव पर, अमृत सरसेरे ॥ आ० ॥ १ ॥ जिन वच सेती हिल मिल सद्गुरु, भाखे बचन निहरसेरे, कंचन ज्यूं निरमैल ज्ञान गुण, भविजन फरसेरे ॥ आ० ॥ २ ॥ अवनीतल ज्यूं क्षमा शीतलता, पावना चंदन वरसेरे, तप आतप गुण तेज दिवाकर, शम शशिधरसेरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ सेवे सुरनर हाथ जोड़ कर, सुरपति ज्यूं गुरु दरसेरे, कल्पवृक्ष ज्यूं वंछित पूरण, आनंद हरसेरे, ॥ आ० ॥४॥ गच्छ चौरासी के गुरु मस्तक, भूप रूप खरतरसेरे, श्री जिन वल्लभ पाट दीपावन, दत्त अमरसेरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ दश विध यती धर्म्म के पालक, प्रगटे रतनाकरसेरे, राम चारण लेत चरण का, ऋद्धि सिद्धि घरसेरे, ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥१०॥

छोड गोरी छेलरो दुपट्टो (चाल) ।

दादा महिर निजर कर जोय, शोभा थारी जगत घणीरे, ॥ टेर ॥ दादा साहब मैं हूं तेरा दास, मेरो दादा तू ही है धणीरे ॥ दा० ॥ १ ॥ थारा सुरनर सेवे पाय, आश पूरण चिंतामणीरे ॥ दा० ॥ जग में नहीं है थारे कोई जोड, देख लीनी सारी ही दुनीरे ॥ दा० ॥ २ ॥ दादो देवे अपुत्रियाने पूत, धन हीनाने रतन मणीरे ॥ दा० ॥ निश्चय मन जो ध्यावे थारो ध्यान, जावे आपदा दूर हणीरे ॥ दा० ॥ ३ ॥ राजे दादो चन्द सूरीश्वर पाट, नाम थारो कुशल घणीरे ॥ दा० ॥

राम तुमारो पूरो मरजीदान, अरजी म्हारीतुरत सुणीरे ॥दा० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

चालो २ हे महेल्या सद्गुरु पूजवाहे ॥ चा० ॥ टेर ॥ सद्गुरु राजे बागा माह, मचरही केल आव की छाह, सद्गुरु म्हारी पकड़ी बाह ॥ चा० ॥ १ ॥ खुल रहा चपा चमेली कद, खुल रहा मरूआ और मुचकुद, चल रही शीतल पवन सुगध ॥ चा० ॥ २ ॥ जिस में जल के चले फुआर, चिहु दिशि भमरा करे गुजार, गह मह मच रही सद्गुरु द्वार, ॥ चा० ॥ ३ ॥ गुरु पर चमर दुले ललचार, शिर पर तीन छत्र की बार, झिगमिग ज्योति जगे दरबार ॥चा० ॥ ४ ॥ बिच में शोभे दीनदयाल, पल में कर देते हैं निहाल, सद्गुरु भक्तों के प्रतिपाल ॥ चा० ॥ ५ ॥ सझलो मोले ही सिखगार, मुखडा चद बदन आकार, गावो गुरु गुण की ललकार ॥ चा० ॥६॥ लीजो केशर घस घन सार, जिसमें कस्तूरी है सार, चोवा चदन अपरपार ॥ चा० ॥ ७ ॥ पूजो दत्त कुशल गण इद, पूजा करता सुख आनद, बगसे लीला लहर समद ॥ चा० ॥ ॥ ८ ॥ गच्छपति जिन चारित्रसूरींद, पाठक राम करे गुण छद, भागे दुश्मन दोम्बी फद ॥ चा० ॥ ९ ॥ इति पदम् ॥

पास पियारो लागे प्यारो फलोधी वालोरे (चाल)।

कुशल कोगालो लाडलो, तू गुरु हमारो रे के सद्गुरु लागे प्यारो ॥ टेर ॥ जैत सिरीजी के लाडला, मन मोहनगारोरे ॥ स०॥ १ ॥ जिह्ना गर्भीश्वर परे, प्रगट्यो अवतारोरे

॥ स० ॥ छाजेड वश उजागरु, कुल कियो उजालोरे ॥स०॥२॥ गढ सावियाणे प्रगटिया, दीपे दिन कागेरे ॥ स० ॥ सोवन वरण सुहामणा, सारान वालोरे ॥ स० ॥ ३ ॥ नाम दियो तुम करमसी, धन २ जयकारोरे ॥ स० ॥ जिनचद गुरु उपदेश से, लियो सजम भारोरे ॥ स० ॥ ४ ॥ पाट दिपायो गणपती, कियो जग उपगारेरे ॥ स० ॥ जिहाज तिराई डूबती कोई लोक हजारेरे ॥ स० ॥ ५ ॥ दुखिया केई सुखिया करया, दे धन भडारोरे ॥ स० ॥ देव पीर ने वस करया, गुण अपरपारोरे ॥ स० ॥ ६ ॥ रोगादिक तप लब्धि से, तू हरयो हारोरे ॥ स० ॥ सेव करू निन ताहरी, तू वरदानारोरे ॥ स० ॥ ७ ॥ कुशल करे नित सघ के, हैं राम तिहारेरे ॥ स० ॥ इति पत्तम्

पनजी मूढेबोल (चाल) ।

चाल २ म्हारा मित्र आलीजा, सद्गुरु पूजा रे, आज मिल चालो रे ॥ टेर ॥ हीराचारया ने गुर जीत्या, पाटण नगर उमगे रे, दुर्लभ राना श्रावक हूओ, गुर प्रसगे रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सूरि जिनेश्वर नाम रहावे, खरतर पद जिन पायो रे, चद्र सूरि सवेग रग में, पाट चढायो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ धर्म्म उदय सू कोढ रोग जिन, भक्ति सग मिटायो रे, देवी वचन सू नव अग टीका, करी दरशायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अभय देव सूरीश्वरतसु पट्ट, जिन वल्लभ सूरि रायो रे, चामुडा देवी वश करके, पद जिन पायो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ बावन गोत्र राज चम्या सू, प्रति बोध्या सुगरायो रे, अथ अनेक रच्या सद्गुरुजी, धर्म दिपायो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ श्री जिनदत्त सूरितसु पाटे, उदय

[illegible] फागे रे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में, [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सेना, [illegible] [illegible] [illegible] गया रे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥ आ० ॥ ७ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मारे रे, पांच पीर [illegible] किया [illegible] में, [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ [illegible] पीर [illegible] सब ऋद्धि सिद्धि [illegible] [illegible] रे, [illegible] [illegible] [illegible] पूज्या, महिमा गाई रे ॥ आ० ॥ १० ॥ रोग शोग [illegible] [illegible] हटाया [illegible] [illegible] [illegible] रे, [illegible] कोटि [illegible] [illegible], सिद्धि [illegible] रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] सूरीश्वर, [illegible] पाट पर [illegible] रे, [illegible] [illegible] [illegible] गुरु का महिमा गावे रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ [illegible] सूरीश्वर [illegible] [illegible] [illegible], प्रगटे गुरु अवतारी रे, [illegible] [illegible] श्रावक प्रति बोध्या, गुरु सुखकारी रे ॥ आ० ॥ १३ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] जिन [illegible] रे, उदय [illegible] गुरु जैन धर्म का, दया पटह [illegible] रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ [illegible] कृपा सद्गुरुजी सब पर, [illegible] गुरु आज्ञाकारी रे, [illegible] [illegible] [illegible] गुरु महिमा, अपरमपारी रे ॥ आ० ॥ १५ ॥ इति पदम् ॥

ख्याल ।

श्री सद्गुरुजी से विनती रे, आयो शरण तुमारी, दादा साहिबजी से वीनती रे, अरज सुणो गुरु म्हारी ॥ टेर ॥ [illegible] दयाल विरुद सुण आयो, तन मन शुद्ध कर ध्यान लगायो, महिर निजर [illegible] [illegible], चरण कमल बलिहारी ॥ श्री० ॥ १ ॥

आधि व्याधि संकट दुःख मेटो, सोमवार पूनम दिन भेटो, अन धन लक्ष्मी चौगुणी रे, बधती संपद सारी ॥ दा० ॥ २ ॥ नर नारी अपछर मिल आवे, अतर गुलाब केवड़ो लावे, पूजे मृगमद पुष्प से रे, खुल रही केसर क्यारी ॥ दा० ॥ ३ ॥ कलियुग में परचा तू पूरे, चिंता लोपी दुश्मन चूरे, धन २ सद्गुरु जग जयो रे, सहस किरण अवतारी ॥ दा० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठावन बरसे, कार्त्ती पूनम दिन भल सरसे, गच्छपति कीर्ति सूरीश्वर रे, वंदे बार हजारी ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस परस दरसण अब दीजे, अपणो दास मुझे, समझीजे, जगमें सुरतरु सारिखो रे, कीरती छा रही थारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगट पणे वरताता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो, श्री जिन कुशल सूरिन्द धणी रे, कहे राम ऋद्धि सारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पदम ॥

लावणी ।

सद्गुरुजी म्हारा, दरशण देज्योजी गच्छपति साहिबा ॥ टेर ॥ कुशल सूरि वंछित के दाता, देवो बुद्धि विख्याता, सद्गुरु महर करीज्यो मुझ पर, ज्यूं बालक पर माताजी ॥ स० ॥ १ ॥ खरतरराजचंद पटधारी, सेवक जन आधार, विषम वाट में संकट काटे, संघ सकल सुखकारजी ॥ स० ॥ २ ॥ जग माहे परचा अधिकाई, जाणे सब संसार, भर दरिया में जहाज उतारी, जिन गुरु की बलिहारजी ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणाबुंज दरशन सेती, पाप तिमिर हट जाय, गुरु परमातम सुगुरा सौभागी, गुरुगुण प्रेमकरायजी ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनयनी नेपुर ठण-

भाजी, लिये सहेल्या लार नृत्य भक्ति गुरु थम विचक्षण, गुरु दर्शन फलदायरजी ॥ स० ॥ ५ ॥ मनगमनी इर्मीवर राजत, श्री सद्गुरु दरबार, इन्द्र नरिंदनमें पदपंकज, हरन्ति विन उवारनी ॥ स० ॥ ६ ॥ ऋद्धि सिद्धि के आगर सद्गुरु, जो ध्यावे सो पावे, यात्री आवे यात्र करण कु, केसर रंग मचावे जी ॥ स० ॥ ७ ॥ गेमपीम अर्चन सद्गुरु को, प्राग पुन सोमवार, वाघनिनाद तुर पुन मल्हार, करे सुविधि सुविचारजी ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्निवर सवत सुखकर, नद चन्द्र शशि वार, ज्येष्ठ मास प्रतिपत् दिन भेट्या, शुक्ल पक्ष अधिकारजी ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरि में नन्दन वन शोभे, तारक में दिनकार, खरतर गच्छ जिन हम सूरीश्वर, कुशल कुशल करतारजी ॥ स० ॥ १० ॥ सद्गुरु धर्म शील परभावे, कुशल होत नित सहाय, ऋद्धिसार पर महिर करीने, अविचल लील बतायजी ॥ स० ॥ ११ ॥ इति पद्म् ॥

मोहे छोड़ चला बिणजारा (चाल) ।

मेरे कुशल गुरु सुखकारा, जिन पार किया ससारा ॥ टेर ॥ तेरी कीरति मैं सुणपाई, हैं दीनबंधु गुरुराई रे, है दुःख का मेटन हारा ॥ जि० ॥ १ ॥ मैंने लिया आसरा तेरा, तू कर उद्धार गुरु मेरा रे, तू समरथ तारणहारा ॥ जि० ॥ २ ॥ तेरा शुद्ध वचन मैं पाऊं, जिस पर दृढ सरधा लाऊं रे, दो ज्ञान अध्यातम सारा ॥ जि० ॥ ३ ॥ धनसुत सपद दीता, गुरु नामें सुदर शीलारे, तुम समरण से जयकारा ॥ जि० ॥ ४ ॥ इकमन जो ध्यान लगावे, वो अविचल सपद पावेरे, मैं जाऊं

तेरी बलिहारा ॥ जि० ॥ ५ ॥ मैं दरशन का अभिलाषी, गुरु दीजें प्रगट प्रकाशी रे, तेरी महिमा जग विस्तारा ॥ जि० ॥ ६ ॥ जिनचंद सूरि पटधारी, गच्छखरतर के अधिकारी रे, गच्छ चौरासी का प्यारा ॥ जि० ॥ ७ ॥ ऋद्धिसार तुमारा बंदा, पाठक पास गारारे, तेरे गुण है अपरपारा ॥ जि० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

थारी जाऊंरे सावरिया तोपे वारणा (चाल)।

गाऊं गाऊं मैं सुयश गुरु तारणारे ॥ टेर ॥ धन्य मात तुम सो सुत जायो, भविजन के आनन्द बरतायो, निरख २ सुन्दर छवि लेवे वारणारे ॥ गा० ॥ १ ॥ जीता मदन तरुण वय निरमल, दश दिशि पसर रहा गुण परिमल, सूरि सकल शिर ताजरू, विपत विदारणारे ॥ गा० ॥ २ ॥ तुम दर्शन सुख सपत लीला, सुदर अष्टसिद्धि निधि शीला, ज्ञान भान का उदय, उदय के कारणारे ॥ गा० ॥ ३ ॥ परम पुनीत परम गुरु पाया, कुशल करण कुशलेश्वर राया, चन्द्र सूरि के लाल, भक्त जन पालणारे ॥ गा० ॥ ४ ॥ पूरो ऋद्धिसार मन आशा, राखो युगल चरण के पासा, प्रेम सुधारस दान, 'रतराज गय भारणारे ॥ गा० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

म्हारा लालजी छोगालो ऊभो यमुना के तीर (माड)।

म्हारा प्राण पियारा मोहना गुरु थाइजो म्हारी भीर ॥टेर॥ श्रीगुण ॥रा द महीरे, पगरा मे तरगीर, बडा बडाई

ये नमें, गुरु भाजे पगई पीरे, गुरु आजो म्हारी भीर ॥१॥ शीलरस् राचुं नहीं रे, क्रिया सायर रे तीर, अंतर समा साहिबा गुरु, हो रत्नागर हीररे ॥ गुरु आ० ॥ २ ॥ मारो बिरुद विचार केरे, दीजे सुख नसीर, हाथ जोड़ अरजी करूं, गुरु आप दयाल अमीररे ॥ गुरु आ० ॥ ३ ॥ आप समान मिल्यो नहींरे, दूजो साहस धीर, मलग तपत बुझावणा गुरु, निरमल गंगा नीररे ॥ गुरु आ० ॥ ४ ॥ चन्द्र वदन छबि मोहनीरे, सोवन वरण शरीर, नयणा न धापे निरखतां गुरु, गुण नीरया गम्भीरे ॥ गुरु आ० ॥ ५ ॥ सागरथ आजो पाहुणारे, घडियन करजो ढोल, आसा पूरो साहबी गुरु, देग दास दिलगीरे ॥ गुरु आ० ॥ ६ ॥ शीतल्यिया सरखा नहीरे, दीन-बधु वडवीर, म्हेदा हुकमी रावलारे, अडिया मेम अजीररे ॥ गुरु आ० ॥ ७ ॥ चन्दसूरीष्ट के लालजीरे, तारण भव जल तीर, कुशल करण साचो धणी गुरु, दुश्मन टालन मीररे ॥ गुरु आ० ॥ ८ ॥ नयणा नरमे दरश करे, जीव धरे नहीं धीर, राम हिये रंग आपकेरे, साची गहो तकीररे ॥ गुरु आ० ॥ ९ ॥ इति पद्यम् ॥ १६ ॥

पास पियारो लागे प्यारो (चाल) ।

दत्त कुशल गुरु सुखतर, भवि तारण वालोरे, चतुर शिर पथ निहालो ॥ टेर ॥ शुद्ध आचारी सत्तग, मन वदन चालोरे ॥ च० ॥ १ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म मे, गयो अनंत कालोरे, नरकनिगोदमें फस रह्यो, दुःख मरण उचालोरे ॥ च० ॥ २ ॥ सम्यक निर्जरा अध्यात्म म, वरि गस समालोरे

॥ च० ॥ निकलेश्या भव करया, केई मरया कायालोरे ॥ च० ॥ ३ ॥ पुण्य सयोगे आवियो, नर भवगुण्मालोरे ॥ च० ॥ निंदा विकथा विषय में, व्यापक विग्गलोरे ॥ च० ॥ ४ ॥ मनाभरा न जाणिगा, जिन नाम गोटालोरे ॥ च० ॥ सुपुन वस सद्गुरु मिल्या, अनुभव उजियालोरे ॥ च० ॥ ५ ॥ काल अनादि मगको, मिथ्या मति टालोरे ॥ च० ॥ तत्व विद्याना सत्य था, ना मघ जजालोरे ॥ च० ॥ ६ ॥ शुद्ध स्वरागु शुद्ध ज्ञानमें, शुद्ध विरती पालोरे ॥ च० ॥ पुना पर गुर देव की, समकित उजवालोरे ॥ च० ॥ ७ ॥ चरण शरण पाठक भणी, ऋद्धि सार निहालोरे ॥ च० ॥ इति पदम् ॥

पुनः इसही चाल में ।

चाल २ म्हारा सुगुणा श्रावक, सद्गुरु पूनोरे, सुगुरु के चालोरे ॥ टेर ॥ अरिहंत देव सुसाधु गुरु पद, जिन भाषित धर्म कहियेरे, समकित श्रद्धा नव तत्व भाखे, गुरु गट गहियेरे ॥ सु० ॥ १ ॥ राजन्य कुल में श्रावक कीना, भक्ताभक्ष दिखायारे, कृत्य अकृत्य ने पेया पेयी, ज्ञान सिखायारे ॥ सु० ॥ २ ॥ थूल हिंसा का त्याग कराया पाच अनुव्रत दीनारे, तीन गुण व्रत चार शिक्षा व्रत, जैनी कीनारे ॥ सु० ॥ ३ ॥ कष्ट आपदा सबही टाली, ऊंचे पद पहुंचायारे, अनेक राजा सेवा सारे, गुरु मन भायारे ॥ सु० ॥ ४ ॥ रत्न चिंतामणि जिन धर्मदीना, गुरु परम उपगारीरे, कई भव्यान चारित्र देकर, भव जलतारीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ कर अणसन आराधनकारी, प्रथम स्वर्ग में जावेरे, वह गच्छ नायक देव प्रगट हुय, यू फरमावेरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

मंतर मंघ सुणा इक विजा॥ तुम गुरु दस्त विमोरे, दुआ ने मदोदिक समकिती, सुर सुरा मानेंगे ॥ सु० ॥ ७ ॥ सघ न्हे भव निश्चय कीजे, पूछो जिनवरगयारे, देव जाय सीमघर पूछे, जिन फरमायारे ॥ सु० ॥ ८ ॥ चार पल्य के आयु भने, महा विदेह उपजसीरे, ले दीक्षा केवल पद पासी, शिव पद वरसीरे ॥ ॥ सु० ॥ ९ ॥ दो गाथा सीमधर भाखी, देव सपने दीधीरे, हर्ष भरी श्री सघ पुर मांमें, थापना कीधीरे ॥ सु० ॥ १० ॥ ये गुरु भवहरण सम भव दरिये, क्यलों वर्णन कीजे, इक अवतारी मोक्ष सिधामे, पद पूजीजेरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ इहभव परभव वांछित पूरण, कर सेवा सुखदाईरे, खरतर गच्छ नायक गुरु लायक, सुरनर आहीरे ॥ सु० ॥ १२ ॥ किम उपगार भूले गुरु गुण का, भूले कृतघ्नी होईरे, धिग् २ जनम वृथा तिण हार्यो, देखो जोईरे ॥ सु० ॥ १३ ॥ आज नहीं ऐसा कोई समरथ, राजन को प्रतिबोधेरे, ओस वंश कुल धाइकारक श्रावक सोधेरे ॥ सु० ॥ १४ ॥ राधे को राधे जो भोला, इनमें कहा बढाईरे, गुरु गुण अतुल तथा में रमिया, मूलो म भाईरे ॥ सु० ॥ १५ ॥ गच्छनायक जिन चारित्रसूरि, पाठक राम सवायारे, जन्म मरण मेटन गुरु समरथ, सत गुण गायारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ इति पदम् ॥

पूज पूज्य जिन चन्द सूरीश्वर, क्यों जग भूला भटके है ॥ टेर ॥ शासन वीर जिनन्द प्रभावक, खरतरगच्छ गुण गटके है ॥ पू० ॥ १ ॥ पंच महाव्रत शुद्ध सजम धर, तरण तारण भांधु है ॥ पू० ॥ जिन माणिक्य सूरिपट्ट प्रभाकर, मिथ्या

तमरू झटके है ॥ पू० ॥ २ ॥ माह अकबर गुरु उपदेसे, जीव हिंसा से अटके है, लिख फरमाण दिया सब जनपद, अमारि घोषण चटके है ॥ पू० ॥ ३ ॥ जिन शासन की श्रद्धा कीनी, ऐसे गुरु के लटके है ॥ पू० ॥ अम्मावस को पूनम कर दी, चन्द उजाला छिटके है ॥ पू० ॥ ४ ॥ वक्री भेद बताया तीनों, काजी टोपी पटके है ॥ पू० ॥ युग प्रधान पद दिया अकब्बर, पूर्ण ज्ञान जसु घटके है ॥ पू० ॥ ५ ॥ मरम राशी ग्रह उतरा जब ही, धर्म उदय थिर थटके है ॥ पू० ॥ धूम्रकेतु ग्रह का सुत प्रगटा, जिन मत लोपक खटके है ॥ पू० ॥ ६ ॥ चैत्य अर्थ प्रतनीक सूत्र के, न्याय वचन सें टटके है ॥ पू ॥ जो पूजे गुरु चरण हमेसा, दु ख दालिद्र तसु सटके है ॥ पू० ॥ ७ ॥ कहे पाठक ऋद्धि सार राम कवि, ध्यान अमर पद रटके है ॥ पू० ॥ इति पद्म ॥

जाय बसे उन देश पीयारे पीत निभाना छोड दिया (चाल)।

जाय वसा तुगुर के पद में, गुरु गुण गाना छोड़दिया ॥ टेर ॥ तापस वृत्ति अज्ञान कष्ट से, जिन आज्ञा कू तोड़ दिया ॥ जा० ॥ १ ॥ पथ अघोर मलीन चला कर, मन मानी ज्यों जोड़ दिया, नहीं पढ़ा षट् शास्त्र अज्ञानी, जिन मुद्रा मुख मोड़ लिया ॥ जा० ॥ २ ॥ विषम जाल में फसगया सद्गुरु, जिन मारग को छोड़ दिया ॥ जा० ॥ मिले सुज्ञानी गुरु गुण पूरे, भरम जाल को फोड़ दिया ॥ जा० ॥ ३ ॥ अब शरणा ग्रहा तेरे सद्गुरु, पार करो मेरा मोलो दिया ॥ जा० ॥ शुद्ध मन

तेरी पूज रचाउ, कोई न तेरी होड किया ॥ जा० ॥ ४ ॥ श्री जिन वल्लभ पाट उद्योतक, तत्व वचन को निचोड लिया ॥ जा० ॥ श्री जिन दत्त सूरीश हमारे, ऋद्धि सार गुण जोड दिया ॥ जा० ॥ ५ ॥ इति पद्म ॥

दरशन देना जी नदलाल, वंशीवट के वजाने वाले (चाल)।

दरशन देना जी गुरुराज, भक्त की जिहाज तराने वाले ॥ टेर ॥ खरतर नायक वछित दायक, श्री जिन चद सूरिंद, तसु पट्ट दीपक सघ सुखाकर, दादा कुशल सूरिंद ॥ द० ॥१॥ गुजरमल्ल बोथरा श्रावक, तेरा भक्त कहावे, गया देशातर पीछा फिरते, फटी जिहाज घबरावे ॥ द० ॥ २ ॥ धरा ध्यान समरथ गुरु तेरा, आप व्याख्यान सुणाते, पखी रूप हुय उडकर धाये, तत खिण ज्याज तिराते ॥ द० ॥ ३ ॥ पीछा तत्क्षण आये सद्गुरु, श्री सघ अचरज पाते, आदन के दरिया में प्रवहण, डूबन कथा सुनाते ॥ द० ॥ ४ ॥ एक मास से पाटण गूजर, आकर शीस नमाते, सब निज बीतक महिमा गाई, तब श्री सघ हरखाते ॥ द० ॥ ५ ॥ जीवित परचा हुआ गुरु का, सभी दर्शनी पूजे, पुत्र सपदादी बहुतों को, गुरु सम और न दूजे ॥ द० ॥ ६ ॥ समय सुदर की पच नदी पर, फटी जिहाज स्वभावे, श्रीसघ युक्त ध्यान तेरा धरता, नई जिहाज बनावे ॥द० ॥ ७ ॥ सुन्दरि भट अश्वसें चढकर, गोगा बिंदर जावे, वायु जोर फटा जब प्रवहण, गुरु तब पार लघावे ॥ द० ॥ ८ ॥ भव जल बीच नाव गुरु मेरी, अधविच गोता खावे, पार

लधाना हाथ आप के, गम कवि गुण गावे ॥ द० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

मैं शीश नमाऊं थाने, परम गुरुजीनो दरशन म्हाने ॥टेर॥ योगी जटिल केइ तपिया देख्या, गर्व भरया अधिकाने, निंदा विकथा करे पराई, निज चरित्त पखनाने ॥ पर० ॥ १ ॥ शात शील जिन के शुद्ध सजम, आत्मध्यान कू ठाने, जिन मारग के सत्य मरूपक, तुम हो तारण थाने ॥ पर० ॥ २ ॥ पीर पेकबर भूत बादमा, त्या धर्म पहिचाने, ये उपगार करा गुरु तैने, फनलग कूरू वखाने ॥ पर० ॥ ३ ॥ बावन वीर योगणी चौसठ, योग क्रिया बस आने, परउपगार करे अधिकाई, सारी दुनिया जाणे ॥ पर० ॥ ४ ॥ भये प्रभावक जैन धर्म के, देरा-उरपुर थाने, धाम होय गुरु दरशन दीना, श्री सघ अति हर-खाना ॥ पर० ॥ ५ ॥ जो जो ध्यावे परचा पावे, गुरु कीरति सुविहाने, पुर २ बीच धूम गुरु तेरा, महिमा अधिक बेधाने, ॥ पर० ॥ ६ ॥ खरतरगच्छ शुद्ध जिन आणा, छाजेड कुल प्रगटाने, चद पटोधर गुरु गुणवंते, भक्त जीव सुखदाने ॥ पर० ॥ ७ ॥ धर्म शील ज्ञानी गुरु मेरे, प्रगटे कुशल निधाने, पाठक आदिगार तुम सेवक, कुशल गुरु मनमाने ॥ पर० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

राग सोरठ, घर आवोजी रामरासिया (चाल) ।

तारो २ कुशल गुरु रसिया, म्हारे मन मोहन चित वसिया जी ॥ तारो० ॥ टेर ॥ तुम गुणमालती पुष्प भमर में, रोम २

उल्लसियाजी ॥ ता० ॥ १ ॥ तुम गुण स्वाति बूंद जलधर की, मो मन चातक तिसियाजी ॥ तारो० ॥ शमदम युग तुम चरण कसोटी, मो मन कंचन घसिया जी ॥ ता० ॥ २ ॥ तुम वचनामृत तत्व नीर से, मुझ तन पातिक नासिया जी ॥ता०॥ रामलाल पट खोल हृदय का, कुशल ध्यान से कसियाजी ॥ता० ॥ ३ ॥ इति पदम् ॥

आवो नेम रहजावो मदन (चाल)।

आवो मनन करो गुरु का भजन, मत दिवस गमावो रे ॥ टेर ॥ क्यू चेतन कुगुर सग राचो, कुशल सूरिंद गुरु है साचो, मन मत मिथ्या अर्थ जाल, उजड मत जावो रे ॥ आवो ॥ १ ॥ जिन आणा शुध संजम धारी, प्रगटे गुरु जग के उपगारी, उभय लोक सुखदाता गुरु से, इकलय लावो रे ॥ आवो० ॥ २ ॥ सुरतरु रवि शशि मेघ उदारी, इन से अधिक गुरु उपगारी, कुशल २ ऋद्धि सिद्धि प्रदायक, वञ्छित पावोरे ॥ आवो० ॥ ३ ॥ इक चित्त ध्यावे सकट जावे, जो शुद्ध मन से ध्यान लगावे, रामलाल गुर भक्त वच्छल से, प्रेम जगावो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

म्हारा गणधर गुरु महाराज अरजी सुन लीजो (चाल)।

म्हारे हृदय लिख्या गुरु नाम, चतुर नर सुन लीजो ॥टेर॥ निन का करू वधामणार, आनद उच्छव कोड, इन कलियुग के माहिने जी, होरया आवे थारी जोड ॥न०॥१॥ गिरु आगुण

थारा चरणांजी, भक्त जना प्रतिपाल, हूं छु सेवक रावलो जी, मुनिजर नयण निहाल ॥ च० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष चिन्तामणीजी, वंछित पूरण देव, श्राणा धरू शिर ताहरी जी, शुद्ध मन सारूं सेव ॥च०॥३॥ रसना एक कहूं मैं किस विध, गुरु गुण अपरंपार, भवसागर भमता थका जी, बांह पकड़ निस्तार ॥च०॥४॥ चौरासी गच्छ सेहरो जी, कुशल सूरि गुरु राय, रावल राणा ओलगे जी, सेवे तुमारा पाय ॥ च० ॥ ५ ॥ पुरब उदय सद्गुरु मिल्या जी, तीन रत्न दातार, अतर घट में रमरह्या जी, तार तार मोहे तार ॥ च० ॥ ६ ॥ दरशण कर परसन हुआ जी, प्रगट्या कुशल निधान, हाजर हुकमी वीनवे जी, पाठक राम सुजान ॥ च० ॥ ७ ॥ इति पदम ॥

देशी जङ्गेकी ।

हूं तो थारा दरशन करवा आयो जी, सुखकारी गुरु राज, दरशन कर कर चित्त में आनन्द पायो जी दयाल, थूभ तुमारो बागां माही सोहे हो ॥ सुख० ॥ चिहुंदिसि परिमल भमर तणा मन मोहे हो दयाल ॥ १ ॥ चपा चपेली मरुओ बेलो फूल्यो हो ॥ सुख० ॥ केसर क्यारी देखत चितडो भूल्यो हो दयाल ॥ द्रव्य सुगधी भाव सुगधी भासे हो ॥ सुख० ॥ तुम गुण परिमल भवन हृदय परकाशे हो दयाल ॥ २ ॥ अध्यातम रस आनम रग रसीजे हो ॥ सुख० ॥ तुम उपदेशे जिन वच अमृत पीजे हो दयाल ॥ दुःख दरिद्रता मेटन सपत लीला हो ॥ सुख० ॥ सुर सुख सिद्धि दायक ज्ञान रसीला हो दयाल ॥ ३ ॥ दान दया दम तीन तत्त्व तुम

भाग्या हो ॥ सु० ॥ भव जलतर्णीजे भविजन रस चाख्या हो दयाल ॥ तू उपगारी तारण तरण विराजे हो ॥ सु० ॥ करता पूजन मनरे रागना भाजे हो दयाल ॥४॥ अष्ट द्रव्य सू तुम युग चरण रचीजे हो ॥सु०॥ भावनमान वन्दन गु पातिक छीने हो दयाल ॥ जिन दत्त जिन चन्द कुशल सूरिंद गुरु राया हो ॥ सु० ॥ समकित भरो म्हारे मनमें ताजा हो दयाल ॥ ५ ॥ गुरु किया परतर जिन आज्ञा पाले हो ॥ सु० ॥ भट्टारक चारित्र रूपा उजवाल हो दयाल ॥ धर्मशील गुरु सुराज निधान सोभागी हो ॥ सु० ॥ गज पाउरनी उदय दशा प्रन जागी हो दयाल ॥ ६ ॥ इति पद्यम् ॥

तुम तो भले विराजो जी (चाल) ।

धर्म क अधिक दीपाया जी, मेरे जिन शासन सिरागार॥ धर्म० ॥ तुम तो भले विराजो जी, गच्छ चारासी सिरदार, सव मे भले विराजो जी ॥ टेर ॥ कइ सूरि भये धर्म प्रभावक, उन मे तुम अधिकाई, सब जनमें शीतलता वरसे, [illegible] बडाई ॥ स० ध० ॥ १ ॥ तारा गण मे चन्द विराजे [illegible] मे [illegible], दत्त कुशल गुरु सघ मे राजे, तेज प्रताप [illegible] ॥ ध० स० ॥ २ ॥ कमला नर मे लक्ष्मी राजे, अमरां [illegible], खरतरगच्छ मे गुरु विराजे, राज महिम [illegible] ॥ ध० स० ॥ ३ ॥ मृगपति देखत पशुगण नासे, [illegible], दत्त कुशल की वाणी सुधारस सुविहित मार्ग [illegible] ॥ ध० स० ॥ ४ ॥ जिन शासन के उदय करण [illegible] दरशाया, राजन त्रिय महेश्वर गण [illegible]

ध० स० ॥ ५ ॥ देश २ से श्री संघ आवे, मेला खूब मरावे, केसर चन्दन पुष्प धूप से, पूजा भक्ति रचावे ॥ ध० स० ॥६॥ इस भव ज्ञानी कष्ट मिटाए, वंछित पुण्य कीना, सुर नर मुख शासक जन साधन, शिवपुरगा धन दीना ॥ ध० स० ॥ ७ ॥ ऐसे गुरु कू जो नित पूजे इक मन सेती ध्यावे, सर्व सिद्धि उसके घर प्रगटे, राम प्रेम से गावे ॥ ध० स० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

आज आपे चालो सखिया मिल्लाचल० (चाल)।

आज आपे चालो महिनी, कुशल सूरिंद गुरु पूजो ॥ टेर ॥ कुशल सूरिंद गुरु प० ॥ इण सम अवरन दूजोए ॥ आ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश गजानन, देवी देव मनाया, उभय लोक कारज नहीं सरिया, यों ही जनम गमाया ए ॥ आ० ॥ १ ॥ प्रति रूपादिक सूरि मन्त्र गुण, ज्ञान ध्यान का दारिया, चरण करण सुमति गुप्ति सू, जिन मारग संचरिया ए ॥ आ० ॥२॥ रत्न जड़ित सिंहासन ऊपर, सद्गुरु भले विराजे, सुर नर किन्नर चामर ढोले, सिर पर छत्तर छाजे ए ॥ आ० ॥ ३ ॥ जिन वाणी उपदेश सुणावत, सजल जलद ज्यू गाजे सुणकर मिथ्या मत तज दीना, भविजन संशय भाजे ए ॥ आ० ॥ ४ ॥ आधि व्याधि मेटन सद्गुरुजी, परतिख परचा देवे, पुत्र संपदा वंछित पूरे, जे सद्गुरु ने सेवे ए ॥ आ० ॥ ५ ॥ धर्म दान सद्गुरु नें दीना, उभय लोक सुखकारी, क्रम से सिद्धि संपदा सगरा, आराध्या बलिहारी ए ॥ आ० ॥६॥ केसर चंदन धूप अरगजा, पुष्प सुगंधी लीजे, गंगाजल से कर प्रक्षालन, गुरु चरण अर्चीजे

ए ॥ आ० ॥ ७ ॥ भावमन्जन सद्गुरु ने गुणता, अंतर ज्योति जगावे, चारित्र सूरि कृपाचंद्र सूरि, राम प्रेम गुण गावे ए ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

राग खेमटा ताल ।

गुरु तो भेवरा चढाय आई आज, गुरुजी के शिर में ॥ गु० ॥ टेर ॥ ढेरा २ महिमा मन्दिर की, निंदक सब रहे लाज ॥ गु० ॥ दरशन कर परसन भया मन मेरा, हरख रहा दिल गाज ॥ गु० ॥ १ ॥ सज धन रूप सर्भे आभूषण, साजियन संग समाज ॥ गु० ॥ केसर चंदन अवर अरगजा, ले पूजन का साज ॥ गु० ॥ २ ॥ चंपा चंपेली जोना मरवा, मंग फूलन का छाज ॥ गु० ॥ फरसत चरण आनदन माया, मिले गर्गन निराज ॥ गु० ॥ ३ ॥ पूजन से धूजे सब अरिगण, मिला सुगति का पाज ॥ गु० ॥ गाम गडाले सद्गुरु भेटया, नगर बीकाणे राज ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञान ध्यान सन्मान वधारन, गणधर गुरु महाराज ॥ गु० ॥ अंतरगत की तुम सब जानो, रखो हमारी लाज ॥ गु० ॥ ५ ॥ चन्द्रसूरि के खरतर नायक, तारण तरण जिहाज ॥ गु० ॥ कुशल २ गुरु पाठक जपे, राम सुधारो काज ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति पदम् ॥

ख्याली लाल अणवट रंग लागो (चाल) ।

सुज्ञानी लाल चरणा सू चित लागो, लागो रे खरतरगच्छ राज, थासू म्हारो मन लागो ॥ टेर ॥ सुवरण रतन जड़ित कलशा में. लाऊ गंगानीर, चरण कमल ---- गुरु भव जल

ध० म० ॥ ५ ॥ देश २ से थी संघ आवे, मेला खूब भरावे, केसर चन्दन पुष्प धूप से, पूजा भक्ति रचावे ॥ ध० म० ॥६॥ इस भव आश्री कष्ट मिटाकर, वछित पूरण कीना, सुर नर सुख श्रावक व्रत साधन, शिवपुरसा धन दीना ॥ ध० स० ॥ ७ ॥ ऐसे गुरु कू जो नित पूजे, इक मन सेवी ध्यावे, सर्व सिद्धि उनके घर प्रगटे, राम प्रेम से गावे ॥ ध० स० ॥ ८ ॥ इति पदम् ॥

आज आपे आलो सखियां सिद्धाचल० (चाल) ।

आज आपे चालो बहिनी कुशल सूरिंद गुरु पूजो ॥ टेर ॥ कुशल सूरिंद गुरु पू० ॥ इण सम अवरन दूजोए ॥ आ० ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश गजानन, देवी देव मनाया, उभय लोक कारज नहीं सरिया, यों ही जनम गमाया ए ॥ आ० ॥ १ ॥ मति स्फटिक सरि सकल गुण, ज्ञान ध्यान का दरिया, चरण करण सुमति गुप्ति सू, जिन मारग सचरिया ए ॥ आ० ॥२॥ रत्न जडित सिंहासन ऊपर सद्गुरु भले विराजे, सुर नर किन्नर चामर ढोले, सिर पर छत्तर छाजे ए ॥ आ० ॥ ३ ॥ जिन वाणी उपदेश सुणावत, सजल जलद ज्यूं गाजे सुणकर मिथ्या मत तज दीना, भविजन संशय भाजे ए ॥ आ० ॥ ४ ॥ आधि व्याधि मेटन सद्गुरुजी, परतिख परचा देवे, पुन संपदा वछित पूरे, जे सद्गुरु ने सेवे ए ॥ आ० ॥ ५ ॥ धर्म दान सद्गुरु नें दीना, उभय लोक सुखकारी, क्रम से सिद्धि संपदा संगम, आराध्या बलिहारी ए ॥ आ० ॥६॥ केसर चन्दन धूप अरगजा, पुष्प सुगंध लीने गंगाजल से कर प्रक्षालन गुरु चरण अरचीजे

१॥ आ० ॥ ७ ॥ भावस्तवन सद्गुरु ने थुणता, अतर ज्योति गावे, चारित्र सूरि कृपाचंद्र सूरि, राम प्रेम गुण गावे ए ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति पद्म् ॥

राग खेमटा ताल ।

म्हें तो सेवग चढाय आई आज, गुरुजी के मंदिर में ॥ से० ॥ टेर ॥ देरा २ महिमा मंदिर की, निंदक सब रहे दाम ॥ गु० ॥ दरशन कर परसन भया मन मेरा, हरख रहा मिल गाज ॥ गु० ॥ १ ॥ सज धन रूप सभी आभूषण, सखियन संग समाज ॥ गु० ॥ केसर चंदन अवर अगजा, ले पूजन का साज ॥ गु० ॥ २ ॥ चंपा चंपेली दोना मरवा, भर फूलन का छाज ॥ गु० ॥ फरसत चरण आनदन माया, मिले गरीब निवाज ॥ गु० ॥ ३ ॥ पूजन से धूजे सब अघगण, मिला मुगति का पाज ॥ गु० ॥ गाम गडाले सद्गुरु भेटण, नगर बीकाणे राज ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञान ध्यान सन्मान ... गणधर गुरु महाराज ॥ गु० ॥ अंतरगत की ... रखो हमारी लाज ॥ गु० ॥ ५ ॥ चन्द्रसूरि ... तारण तरण जिहाज ॥ गु० ॥ कुशल २ ... सुधारो काज ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति

ख्याली लाल अणवट १०

सुज्ञानी लाल चरणा सूं ... राज, थासूं म्हारो मन लागो ॥ ... में, लाऊ गंगानीर, चरण

तीर ॥ सु० ॥ १ ॥ हीर चीर उज्वल पट लाऊं, अति सुन्दर माल सुतान, पद पूजन सदगुरुजी थाग, पाऊं मैं निगुनरा ता सु० ॥ २ ॥ काश्मीर सू केसर लाऊं, चीनी शुद्ध कपूर, मलय गिरि सू चन्दन लाऊं, पूजा करूं मन धीर ॥ सु० ॥ ३ ॥ बागा माहि सू सरस केवड़ो, लाऊं पुष्प गुलाब, राय चंपो आनू सा लाऊं, अरचूं तुमारा पाव ॥ सु० ॥ ४ ॥ कन्नोज मे चोवा चंदन अतर, करूं सुगंधी पूर, महके परिमल वासना म्हारा, ज्ञ्स कालिमा दूर ॥ सु० ॥ ५ ॥ सुन्दर जन सू चमर मगाऊं, सुवरण रता जड़ाऊं, पन्न सोभागी सदगुरु शा पर चौसठ चमर दुलाऊं ॥ सु० ॥ ६ ॥ लङ्का गढ सू सोनो लाऊं, बन्नागर सू हीरा घन जड़ाऊं था पर चान्द मेह मन थी पीग ॥ सु ॥ ७ ॥ सूरत री वरफी ले आऊं, पेड़ा मथुराजी का, मिश्री मावा जैपुर मेली चार नेवद्य नीका ॥ सु० ॥ ८ ॥ काबल का सब मेवा लाऊं, मिश्री बीकानेर, लगदा आन बनारस केरा, चाढू फलांरा ढेर ॥ सु० ॥ ९ ॥ आरति मेटन आरती उतारूं, पच रंग ध्वजा चढाऊं, श्रीफल उपर मोहर भेट धर, लुल र शीस नमाऊं ॥ सु० ॥ १० ॥ नाटक गायन वीणा बजाऊं, गुण गाऊं मैं तेरा, चन्द्र सरीखे के लाल सोभागी, कुशल सरीखे गुरु मेरा ॥ सु० ॥ ११ ॥ चारित्र सूरि कृपाचन्द्र सूरि, बड खरतर सुचिह्नाण, पाठक राम लहे नित लीला, निशदिन तेरा ध्यान ॥ सु० ॥ १२ ॥ इति पदम् ॥

गिरनारी जाता राख लीजो हे (चाल) ।

– अनेड कुशले सेहरे ॥ माय मदिया ॥ जिनसागर मरीज,

मवाइ गुरु प्याग, ता न ए जिन जिग नी॥ भर्ती ए माय, महिया ए आयो पून निम ॥ सवाइ गुरु प्या० ॥ १ ॥ ताम श्रवसी भाविया ए माय पहिया ए, [illegible] ॥ सवाइ गु० ॥ [illegible] ॥सवाइ०॥२॥ [illegible] दान ॥ सवा० ॥ श्री [illegible] भारा ॥ स० ॥ ३ ॥ [illegible] यश रहगी शरीयात ॥ सवा० ॥ [illegible] सहिया ए [illegible] ॥ सवाइ ॥ ४ ॥ [illegible] बर थापने हे माय, चाह पुन उच्चार ॥स०॥ [illegible] लिये ए माय ॥ स० ॥ [illegible] ॥ सवा० ॥ ५ ॥ पाट विराजा चढ़ते ए माय सहिया ए, जपता सूरि मत्र जाप ॥ स० ॥ देव दानव वश आणिया ए माय सहिया ए, टाले पाप सताप ॥ स० ॥ ६ ॥ राज जन प्रतिबोधने ए माय, महिया ए, कीया पचास हजार ॥ स० ॥ श्रावक जन घर दीपता ए माय, सहिया ए, धन २ तसु अवतार ॥ सवा० ॥ ७ ॥ नहिन दोनु भव तणा ए माय, सहि० साच्चा मनोरथ काज ॥ स० ॥ उपगारी गुरु पूजता ए माय, सहिया ए, तिरिया भव जल जिहाज ॥ स० ॥ ८ ॥ गच्छ खरतर महिमा घणी ए माय सहिया ए श्री जिन कुशल सूरिन्द ॥ सवाई० ॥ राम कवि घर [illegible] ए माय, सहिया ए, बडे पद अरविंद ॥ सवा० ॥ ९ ॥ इति [illegible] ॥

राग पीलु ।

[illegible] गुरु दु म की मै बेतिया, बतिया [illegible]

फरटन छातिया ॥ क० ॥ टेर ॥ नरयतिरे दुःख रोय गमाये, सुर गति में पायो सुख रतिया ॥ क० ॥ १ ॥ पुण्य उदय अब नर भव पायो, दुःख सताप बहुत आपतिया ॥ क० ॥ ईति उपद्रव भय दुःतरे, राग सोग अग्नि गण में रतिया ॥ क० ॥२॥ विषय कषाय अनात जान में, मोह मद्ध रह्यो पून कलनिया ॥ क० ॥ तुम समरण कबहु नहीं कीनो, अब मेरी होगी कैसी गतिया ॥ क० ॥ ३ ॥ आप सुधारो काज भक्त के, अतर गत लिख भेजी पतिया ॥ क० ॥ तारक आन मिले अब मुझ को, कुशल सुरींद्र गुरु जालम जतिया ॥ क० ॥ ४ ॥ पाठक राम सुधारस चाख्यो, अन तो सुगुरु पद लागी मतिया ॥ क० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

कोई देखया रे सावरिया साहिब प्यारा लागे रे (चाल) ।

कोई देख्या रे सुपने में सद्गुरु, ज्योति सवाई रे ॥ टेर ॥ अर्द्ध चद ज्यूं भाल झलाहल राजे रे, नयन कमल दल दोनू अधिक विराजे रे, श्याम मनोहर भ्रकुटि महा सुखदाई रे, हरे हारे महा० ॥ १ ॥ दीप शिखा ज्यूं सरल नासिका सोहे रे, लाल प्रवाला अधर सदा मन मोहे रे, दत पति मानू मोती युगित जमाई रे ॥ हरे हारे यु० कोई० ॥ २ ॥ कचन वरणी काया सुन्दर दीपे रे, चद सूरजछवि निज तेजे कर जीपे रे, पुष्प माल शिर रत्न तिलक अधिकाई रे ॥ हरे हारे तिल० कोई० ॥ ३ ॥ श्वेत दुग्ध पट उज्वल किरण सुहावे रे, अबर तल में दरशन गुरु दरशावे रे, सिद्ध मनोरथ दीनो वर गुरुराई रे ॥

हरे हारे म० कोई० ॥ ४ ॥ चद पटोधर भवन जीव प्रतिपाल रे नित उठ जपिये कुशल गुरू की माला रे, राम करे अरदास मन गुन गाई रे ॥ हरे हारे मन० कोई० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

श्री सीमधर साहिबा (चाल)।

कुशल सूरिन्द गुरु साहिबा, जिन चद सूरि पटधार लाल रे गुण अनेके शोभता सेवक जन आधार लाल रे ॥ कु० ॥ १ ॥ दीन दयाल कृपाल छो, मन वांछित दातार लाल रे ढोइ २ थारी थापना, परचा अति मनुहार लाल रे ॥ कु० ॥ २ ॥ देरावर भूम दीपतो, उदयापुर आवेर लाल रे बीकाणो शोभता, शोभे जेसलमेर लाल रे ॥ कु० ॥३॥ चलि केसरे, पूजे गुरु ना पाय लाल रे, मुनिपति लुल २ शीस नमाय लाल रे ॥ कु० ॥ ४ ॥ तीस में, काती पूनम आज लाल रे, श्री जिन खरतरगछ राजान लाल रे ॥ कु० ॥५॥ कुशल निधान उदार लाल रे, पद, मनि गुरु ऋद्धि सार लाल रे ॥ कु० ॥

राग ।

जैन श्रया उदयकार, जय रे रीहडवर ओस वश, खरतर गण अश, प्रगटे सुर काना ॥ जै० पाट, सङ्कट मन विघ्न टार,

शिव पाजा ॥ ज० ॥ २ ॥ दिल्ली पति यवन राउ, अकबर सुगुण प्रनाम तुम वच मे हो नारिस, मन्त्रि गनि सुगुर भाखा ॥ ज० ॥ ३ ॥ दुगा प्रधान पन्थी कीन, जैन धर्म तत्व लीन, ग्यान गुरु नियम लीन, बादशाह साखा ॥ ज० ॥ ४ ॥ आहिला फरमाण तार, जिन नर जीवा विशेष उन्नत जिन धर्म रेख, चिहु दिशि गाजा ॥ ज० ॥ ५ ॥ जागुर श्री जिन सूरिचन्द, पुन ० गवि हु ग्याद्धि भार नित आनन्द, करें सुजस नाना ॥ ज० ॥ ६ ॥ इति छन्द ॥

अथ प्रशस्ति ।

श्रीजिन भद्र भये सूरि दीपक नाम भजत केई स्थल थप्पे, गरत गर्ले हु भव लरो नल सेव करे गुरु नामहि जप्पे, बाहुरा गौन सब प्रति बोधक रावत नश का पापन कप्पे गटोडा दत्त सहाय करें तसु शत्रु लखा दल दूर ही थप्पे ॥ १ ॥ पट्ट परम्पर धर्म धुरंधर श्री जिन माणक सूरिवर राजा, पूनमे वाद विवाद लखा नाम सेनाजी रावत सत्यम ताजा, हार गये वेदान्तमती गुरुदेव के वाजे अविचल नाना, श्रीजिन लाभ सूरीश पटोधर सघ सुभाग सुकृत नाना ॥ २ ॥ श्रीजिनचन्द्र भये पट उज्ज्वल श्रीजिन हर्ष सूरीश विगन आजिन सौभाग्यसागर गुरुसागर हनुमत वार कृ भव स नाकें सिन्दारसिंह बीकाण नरेश्वर सेव करे सब सुगुरु समान धन धुन दान दिये जन रञ्जन दुःख गमाति अनेकों के भार ॥ ३ ॥ हम सूरीश्वर चन्द्रसूरीश्वर कीर्ति सरीश्वर क्रम पट्टधारी, वर्त्तमान चारित्र सूरीश्वर खरतर गच्छ के शुद्ध आचारी सरदारसिंह बीकाण नरेश्वर धर्मरीति गुरु जग

हितकारी, गुरान निधान प्रधान सुपाठक गुरु गुण नित्य करे अधिकारी ॥ ४ ॥ इति श्रीक्षेम कीर्ति शाखायां उपाध्याय राम ऋद्धिसार गणि समह कृत गुरगुणरत्नावली संपूर्ण ॥

खरतर गण के आचार्य उपाध्याय वाचक साधु साध्वी श्रावक श्राविकाओं के नित्य स्मरणार्थ यह गुरुगुणरत्नावली हृदय कमल पर सर्वदा विराजमान रहे। शीघ्रस्तु कल्याणमस्तु।

केई तो समस्त वस्त चातुरी विचारसार वयरागभी ... प्रिय सरस्वती है, केई तो प्रशस्त काव्य भाषा गुण ... और कवि अस्त होत ऐसी दिव्य द्युति है, केई राग ... रस्त गुम्न होत जात केई तर्क विद्या में विरस्त शुद्ध हस्त सिद्ध धर्मसिद्ध वादि हस्ती गस्त होत जैन में ... ऐसे मस्त जती हैं।

श्री कृपाचंद्र सूरिः प्रशस्ति।

कीर्ति रत्न सूरीश के, पट्टपरपराम, केई गुणवंते हो गये, बडउपगारी भास ॥ १ ॥ कृपाचन्द्र सूरिसर, शुद्ध भाव वैराग, क्रिया उद्धारी प्रगटिया, सूरिगुण सोभाग ॥ २ ॥ साधु साध्वी मघ युत, आतम ज्ञान उमग, चिरजीव वरतो सदा, खरतर गण उछरग।

सहाय दीना मित्रवर, विबुध ... उपगारी ऋद्धिचंद, लिखने गुरुगुण वृंद ॥ १ ॥ वाचक मोहन प्रेम मुनि, प्रेम अमर खुशिलाल, पूज्य विजय ... हेत, धान रहे, नित लाल ॥ २ ॥

आयुर्वेद भूषण श्रीयुत परिडत जीवनरामजी द्वारा के
श्री केवल जीवनानन्द प्रेस, बीकानेर में
परिडत ओंकारदत्त शर्म्मा शास्त्री
मैनेजर के प्रबन्ध से
मुद्रित।

छपे हुए ग्रन्थों का विज्ञापन ।



ुरुदेव दादा साहब की पूजा १२ प्रश्नों का उत्तर.	।≈)
त्न समुच्चय (रत्न सागर) जैन धर्म्म का सर्व कृत्य.	६)
ूजा महोदधि ३७ गायन पूजाविधि युक्त	२॥)
ृहस्थ व्यवहार धनादि उपार्जन का ...	१॥)
हाजन मुक्तावली ओसवालादि ४ वर्ण इतिहास.	२)
ैद्य दीपक—देशी, यूनानी, डाक्टरी, होमयोपैथिक आदि रोग परीक्षा इलाज, पथ्यापथ्य आदि	५)
शकुन मनुष्य, पशु, पक्षी आदि का भावी फल और जिनदत्त सूरिजी रचित का साराश.	१)
१६ चाणक्य अर्थ, पासा शकुनावली जैन स्वरोदय भाषा	१)
स्वप्नफल, सर्व देश की वस्तु, तेजी मंदी निकालना	।-)
सिद्धमूर्त्ति (प्रथम भाग) ..	॥)
सिद्धमूर्त्ति (दूसरा भाग) ३२ सूत्र पाठ से मूर्त्ति पूजा	॥।)
गुणविलास २२ समुदाय वालों के लिए उपयोगी	१)
पंच प्रतिक्रमण १६ स्तोत्र अर्थ युक्त ..	२।)
जैनदिग्विजय (सत्यासत्यनिर्णय) ..	६)